म्यांमार से पलायन

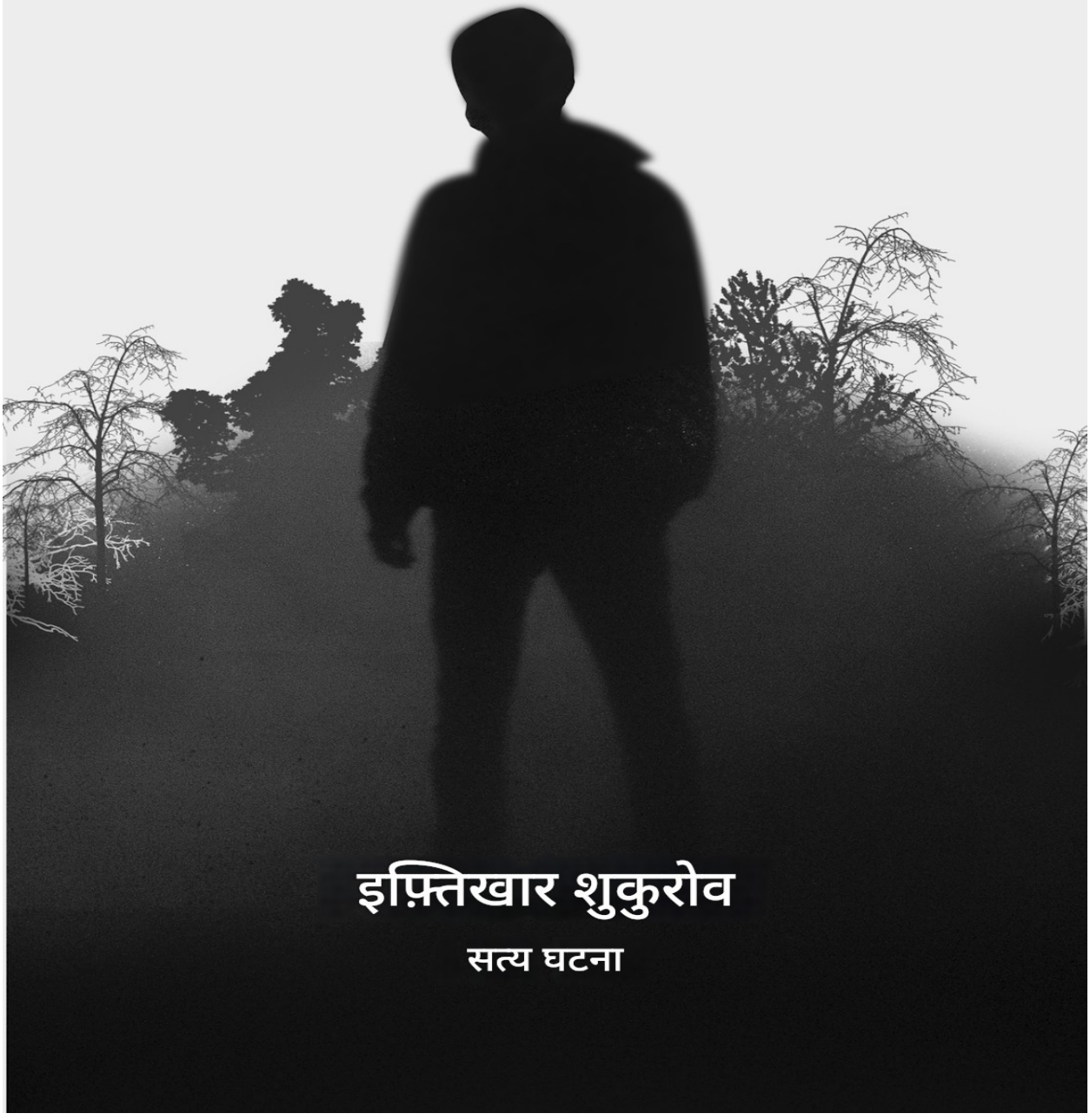

इफ़्तिखार शुकुरोव

सत्य घटना

इफ्तिखार शुकुरोव
म्यांमार से पलायन
एक व्यक्ति का कैद से हताशा भरा पलायन

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 2025
[illegible] © 2025 [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

□□□□□□□□□□

□□□□□□□□□□ 1
□□□□□ 3
□□□□ □□□□□□ 6
□□□□□ □□□□□□□□□: □□□□□□□13
□□□□□□□: □□□ □□ □□□ 21
□□□ □□ □□□□□ □□□□□□: □□□□□□□□ 45
□□□ □□□: □□□□ □□□ 54
□□□ □□□: □□□□ □□□ 76
□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ 91
□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□99
□□□□ □□□□□□□ 104
□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ 108
□□□□□ □□□□ 116
□□□□□ □□□: □ □□□□□□ 127
□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ 148
□□□□ □□ □□□□□ 151
□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ 153

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

म्यांमार से पलायन

लंबे समय तक एक परछाई की तरह। लेकिन शायद सबसे भयावह वो अजनबी था जिसे मैंने आईने में देखा। कुछ ही दिनों में मेरे बाल और दाढ़ी सफेद हो गए... पता चलता है कि एक आदमी एक ही रात में अपनी जवानी और मासूमियत खो सकता है।
फिर भी, इन सभी भयावहताओं के बीच, एक अटल सत्य बना रहा: जिस अंधकार ने मुझे मारा नहीं, उसने मुझे नया जीवन दिया। परिवार, प्रेम, एक गर्म चूल्हा... एक इंसान का मात्र अस्तित्व... उस अंधकार में मेरे लिए हर चीज़ का मूल्य फिर से परिभाषित हो गया। वहीं मैंने सीखा कि दुनिया की सबसे कठिन और निर्मम लड़ाई वह है जो आप अकेले लड़ते हैं। और सबसे गहरे
अथाह खाई में, केवल एक ही व्यक्ति आपको बाहर निकाल सकता है: आप स्वयं। अब, इन पंक्तियों में मैं आपको महज एक कहानी नहीं सुना रहा हूँ। यह उस कहानी को बयां करती है कि कैसे मैंने घोर अंधकार में प्रकाश पाया, कैसे मैंने मृत्यु के साये में भी जीने का फैसला किया। यह इस बात का प्रमाण है कि कैसे एक इंसान टूटे हुए दिल से भी और अधिक मजबूत होकर उभर सकता है।
यह किताब मेरी नंगी सच्चाई है। और शायद, यह एक ऐसी सच्चाई है जो आपके विचार से कहीं अधिक निकट, ठोस और कठोर है।
अंदर आपका स्वागत है। यहाँ हर शब्द खून, पसीने और असली आँसुओं से लिखा गया है। यहाँ सब कुछ वास्तविक है।

परिचय

आपके हाथों में जो किताब है, वह कोई उपन्यास नहीं है। यह कल्पना से सजी कोई काल्पनिक कहानी नहीं है, न ही दर्शकों को आकर्षित करने के लिए गढ़ी गई कोई कहानी। इन पंक्तियों में आप जो भी शब्द पढ़ेंगे, वह सुंदर वाक्यों के पीछे छिपी कोई काल्पनिक कहानी नहीं है, बल्कि सच्चाई का नग्न, कठोर और निर्मम चेहरा है। इन पन्नों में मेरी सांसें, मेरे आंसू, मेरा असहनीय दर्द और मेरी चमत्कारिक मुक्ति समाई हुई है।
इन पंक्तियों को लिखने का मेरा उद्देश्य केवल मेरे साथ घटी भयावह त्रासदी का वर्णन करना नहीं है। मेरा असली उद्देश्य आपको, आपके परिवार को, आपके बच्चों को और आपके प्रियजनों को इन अदृश्य लेकिन घातक जालों से बचाना है।
आपको यह समझना होगा कि मेरे साथ जो हुआ वह कोई दुर्घटना नहीं थी। यह दुनिया के सबसे क्रूर आपराधिक गिरोहों द्वारा रची गई एक विशाल मशीन है— एक ऐसी मशीन जो हर दिन सैकड़ों निर्दोष लोगों की आत्माओं और शरीरों को निगल जाती है। इंटरनेट पर दिखने वाले वे आकर्षक "नौकरी के प्रस्ताव," "ऊँची तनख्वाह के वादे," और "मनमोहक अवसर"... इन सरल दिखने वाले विज्ञापनों के पीछे मानव तस्करों, पेशेवर जालसाजों और धोखेबाजों द्वारा संचालित एक खूनी तंत्र छिपा है। वे आपको पैसे के वादों और फर्जी निवेश प्लेटफार्मों से धोखा देते हैं, न केवल आपकी संपत्ति, बल्कि आपकी स्वतंत्रता, आपकी पहचान और आपका भविष्य भी चुरा लेते हैं।
इस पुस्तक के पन्नों में आप निम्नलिखित बातों के साक्षी बनेंगे:

म्यांमार से पलायन

• लोग पल भर में कैसे अगवा हो जाते हैं: आप देखेंगे कि कैसे जीवन के सामान्य प्रवाह में आपकी स्वतंत्रता छीन ली जाती है, शायद उस क्षण में जब आपको लगता है कि सब कुछ ठीक है।
• लोग किस प्रकार सबसे अकल्पनीय तरीकों से धोखा खाते हैं: आप देखेंगे कि कैसे छल-कपट और झूठ के पेशेवर खेल, सपनों से सजे जाल में उलझकर, एक व्यक्ति को कदम-दर-कदम विनाश की ओर ले जाते हैं।
• लोगों को महज़ वस्तुओं की तरह कैसे बेचा जाता है और अपराध करने के लिए मजबूर किया जाता है: आप महसूस करेंगे कि मानवीय गरिमा को कैसे कुचला जाता है, और कैसे एक स्वतंत्र व्यक्ति को एक मूल्यवान "माल" और धोखाधड़ी के जाल में एक मजबूर खिलाड़ी में बदल दिया जाता है।
• बंदियों पर किए जाने वाले अत्याचारों का स्वरूप: आप देखेंगे कि कांटेदार तारों के पीछे उन अंधेरे कमरों में शरीर और आत्मा की सीमाओं का परीक्षण कैसे किया जाता है, और मानवीय पीड़ा की असीमता क्या होती है।
• बंदी महिलाओं का दयनीय भाग्य: आप उन अंधकारमय शिविरों में उन महिलाओं की भयावह और दुखद नियति को उसकी पूरी क्रूरता के साथ महसूस करेंगे, जिनकी आवाजें दबा दी जाती हैं और जिनकी आशाएं समाप्त हो जाती हैं।
• और सबसे महत्वपूर्ण बात… उस नरक से कैसे बचा जा सकता है: आप जानेंगे कि जब सब कुछ खोया हुआ लगता है, तब मुक्ति का मार्ग कैसे खुलता है, और मृत्यु का सामना करते हुए स्वतंत्रता की ओर जाने वाला संकरा, खतरनाक रास्ता कैसे तय होता है।
यह किताब उस खूनी संघर्ष की कहानी है जो मैंने अंधकार की गहराई से बाहर निकलने के लिए किया। समय के साथ मेरे शरीर का दर्द भले ही कम हो गया हो, लेकिन मेरी आत्मा के घाव आज भी दर्द देते हैं। भागने के बाद कई महीनों तक मैं आधी रात को डर से कांपते हुए, व्याकुल और सहम हुआ उठता था। फिर भी, एक बात अटल रही: सच्चाई को सबके सामने लाने का मेरा संकल्प।

परिचय

मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि कोई और उस गड्ढे में न गिरे जिसमें मैं कभी गिरा था। मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि आप इंटरनेट घोटालों के अंधेरे जाल को पहचान सकें और खुद को और अपने परिवार को कवच की तरह सुरक्षित रख सकें। मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ ताकि इस दुनिया के अंधकारमय पहलू को देख चुके व्यक्ति के रूप में, आपकी आँखें फिर कभी बंद न हों।
यह पुस्तक पीड़ा की एक चीख भी है और एक ढाल भी। यह एक इंसान के अस्तित्व के लिए संघर्ष का सबसे ईमानदार और स्पष्ट वृत्तांत है।

घातक निर्णय

ऐसा लग रहा था मानो मेरे बचपन पर एक रंगहीन धुंध छा गई हो। जीवन मुझे ऐसी परीक्षा से गुजार रहा था कि मेरे अंदर का नन्हा बच्चा बहुत छोटी उम्र में ही चुप हो गया, बहुत पहले ही।
वह जी भर कर जी चुका था। भावनात्मक पीड़ा, परिवार से अलगाव, बोर्डिंग स्कूलों की ठंडी दीवारों के भीतर वर्षों तक पले-बढ़े होने से उपेक्षित महसूस करना, और विदेश में पढ़ाई के दौरान अपने वतन की याद में डूबी रातें... ये सब मेरे भीतर के स्तंभों को एक-एक करके तोड़ रहे थे। मेरी आत्मा धीरे-धीरे ढह रही थी, फिर भी मुझे उस मलबे की आवाज भी सुनाई नहीं दे रही थी। बाहर से देखने वालों के लिए, मैं महज़ एक "शांत नौजवान" था, लेकिन अंदर ही अंदर एक भयंकर तूफान उठ रहा था।
मुझे पक्का यकीन था: “मैं जिस भी चीज़ को पाने की कोशिश करूँगा, वह या तो मेरे हाथों में टूट जाएगी या मुरझा जाएगी।” यह महज़ बदकिस्मती नहीं थी; ऐसा लग रहा था मानो किसी अनदेखे हाथ ने मेरे सामने हर दरवाज़ा बंद कर दिया हो। जोश और उम्मीद से शुरू किया गया मेरा हर काम या तो दीवार से टकरा गया या अप्रत्याशित असफलता के दलदल में डूब गया। ऐसा लग रहा था मानो किस्मत मुझे बेरहमी से कुचल रही हो, तोड़ रही हो—मुझे किसी भयानक तूफान के लिए तैयार कर रही हो।
मैं अट्ठाईस वर्ष की दहलीज पर था। मेरे कंधों पर उच्च शिक्षा का भार था; मेरी जुबान पर चीनी और अंग्रेजी की धाराप्रवाह भाषा थी; और मेरी स्मृति में उन पंद्रह देशों की यात्रा के निशान थे... फिर भी, इन सबके बावजूद, मैं खुद को एक महत्वहीन व्यक्ति महसूस करता था।

घातक निर्णय

हाल ही में मेरी सगाई हुई थी; मुझे जीवन से जुड़े रहने की ज़रूरत थी, लेकिन खुद को पा लेने के बावजूद, मैं अपनी जगह नहीं ढूंढ पा रही थी। मेरे अंदर एक गहरा, नामहीन और असीम खालीपन बढ़ता जा रहा था।
मेरे पिता… वो निस्वार्थ व्यक्ति जिन्होंने वर्षों तक मुझे शिक्षित करने के लिए अथक परिश्रम किया, अपनी सारी आशाएँ मुझ पर टिका दीं, अब अकेले पड़ गए थे। उनके लिए सहारा न बन पाने की मेरी असमर्थता, मेरे हाथ बंधे रहने का दर्द, हर दिन मेरे अंतरात्मा को कुतरता रहता था। मैं खुद को एक बेकार, अनावश्यक बोझ समझने लगा था। अपने कस्बे की तंग गलियों में चलते हुए, मैं परिचितों और रिश्तेदारों की ठंडी, आलोचना भरी निगाहों को अपनी पीठ पर महसूस कर सकता था। वो फुसफुसाहटें मेरे कानों में एक धीमी गर्जना की तरह गूँजती थीं: “देखो, उसने कितने साल पढ़ाई की, और क्या हासिल हुआ? वो तो बस इधर-उधर भटकता रहता है…”
सच कहूँ तो, मैं काम कर रहा था। स्क्रीन के पीछे, मैं दिन-रात मेहनत कर रहा था ताकि अपना खुद का ब्रांड, अपना खुद का भविष्य बना सकूँ। लेकिन समाज की संकीर्ण सोच में, यह "काम" नहीं था। उनके लिए, सफलता का मतलब था सुबह टाई पहनना, डेस्क पर बैठना और सूट में गंभीर दिखना। मैं उन्हें यह नहीं समझा सका कि समृद्धि मेहनत में होती है, न कि केवल भौतिक स्थान में। लेकिन उन निंदाओं, उन कठोर शब्दों ने हमारे घर में, हमारी रोटी तक में कड़वाहट भर दी।
जब भी मैंने अपना बचाव करने की कोशिश की, मुझे उसी तरह की चुनौती का सामना करना पड़ा: "आप एक पढ़े-लिखे आदमी हैं, क्या कोई काम कंप्यूटर से किया जा सकता है? फलां-फलां के बेटे को देखो - भगवान उसका भला करे - वह टाई पहनता है, डेस्क के शीर्ष पर बैठता है, उसमें सम्मान है।"
इस दबाव, इस अंतहीन तुलना ने मेरे मन को बुरी तरह से झकझोर दिया था। मेरे सपनों के पंख छंट रहे थे। मेरे भीतर की वह आत्मविश्वास भरी आवाज़ धीरे- धीरे डर और हार मानने की भावना में तब्दील हो रही थी: "शायद वे सही हैं... शायद मैं बस एक पागल हूँ जो परछाइयों का पीछा कर रहा है। मुझे जाकर नौकरी ढूंढनी ही होगी, चाहे वह कहीं भी हो..."

म्यांमार से पलायन

और इस तरह, वर्षों का संचित दबाव, मेरी आंतरिक उथल-पुथल, और "उपयोगी बने रहने" की वह अथाह आवश्यकता मुझे कदम-दर-कदम उस अंधकारमय मार्ग की ओर खींच ले गई। मुझे लगा कि मैं अपनी स्वतंत्रता की खोज कर रही हूँ, लेकिन वास्तव में, अनजाने में ही, मैं अपने ही पैरों पर गुलामी की ओर बढ़ रही थी। हर कदम मुझे उस भयावह अंत के थोड़ा और करीब ला रहा था...

* * *

सितंबर 2022… वह पतझड़ की शाम, जब मुझे अपने जीवन का सबसे कठिन निर्णय लेना था, आज भी मेरी यादों में फिल्म की रील की तरह गूंज रही है। हमारे बगीचे में सब कुछ बेहद शांत लग रहा था। दो परिवार—मेरे रिश्तेदार और मेरी मंगेतर का परिवार—एक ही मेज के चारों ओर बैठे थे। शाम के लगभग आठ बज रहे थे। हवा की सुखद ठंडक और पेड़ों से छनकर आती चिड़ियों की चहचहाहट एक भ्रामक सुकून का एहसास करा रही थी, मानो सब कुछ ठीक हो। खाना खत्म हो चुका था और चाय परोसी जा चुकी थी। हम गर्म गिलासों के थोड़ा ठंडा होने का इंतजार कर रहे थे। लेकिन जल्द ही, उस भाप के साथ, मेरे सपने भी हवा में गायब हो जाएंगे।
मेरी मंगेतर के पिता ने चुप्पी तोड़ी—उनका सवाल शांत था, लेकिन हर शब्द में सीसे के पत्थर जैसा भार था: "तो हमें बताओ, तुम्हारी क्या योजनाएँ हैं? क्या तुम्हारा काम करने का, कहीं बसने का कोई इरादा है?"
उस सवाल के पीछे छिपा संदेश—"शादी नज़दीक आ रही है, और तुम अभी तक खाली बैठे हो"—मेरे दिल में चुभ गया। खुद को संभालते हुए और अपनी आवाज़ में आई कंपकंपी को छुपाते हुए मैंने जवाब दिया: "जी हां, बिल्कुल। मैं अपना खुद का ब्रांड बना रहा हूं। ईश्वर की कृपा से, मेरी पहली बिक्री जल्द ही शुरू होगी..."
इससे पहले कि मैं अपना वाक्य पूरा कर पाती, मेरे पिता की आवाज़ सुनाई दी। वे मुझे तोड़ने के लिए नहीं बोल रहे थे, बल्कि शायद मुझे कुछ दिखाने के लिए बोल रहे थे।

घातक निर्णय

एक रास्ता तो था; फिर भी, उस पल, हर शब्द मुझे एक सज़ा की तरह लगा: “बेटा, एक ब्रांड के लिए बजट और समय दोनों की ज़रूरत होती है। इसके अलावा, यह नाकामयाबी में भी बदल सकता है… कब तक इंतज़ार करोगे? शादी नज़दीक है, और साल बीतते जा रहे हैं। अब नौकरी करने और आमदनी बढ़ाने का समय आ गया है।” उसी क्षण, मेरे कानों में एक अजीब सी झनझनाहट शुरू हो गई। बगीचे में पक्षियों की मधुर चहचाहट बंद हो गई; हवा अचानक भारी हो गई। मुझे महसूस हुआ कि मेरा चेहरा लाल हो रहा है, मेरी सांसें रुक रही हैं। जिन लोगों से मैं प्यार करता था, उनकी नज़रों में खुद को "अक्षम" और "देर से" देखना मेरी आत्मा को चीर रहा था। मेरे पिता की कही बात एक कड़वी सच्चाई थी—समय रेत घड़ी की तरह तेज़ी से बीत रहा था। मैं एक शब्द भी नहीं कह सका; मैंने बस अपना सिर नीचे कर लिया। मुझ पर इतना बोझ आ पड़ा कि ऐसा लगा जैसे मैं पूरी दुनिया की ज़िम्मेदारी अपने कंधों पर ढो रहा हूँ। यह सिर्फ़ बेरोज़गारी का दुख नहीं था; यह अपने परिवार के सामने एक आदमी की बेबसी का बोझ था।
उस रात जब मैं अपने कमरे में लौटी, तो मैंने अपने भीतर की सारी रोशनी बुझा दी। मेरे सपने, वो योजनाएँ जिन पर मैंने महीनों मेहनत की थी, वो बड़ा ब्रांड जिसे मैं बनाना चाहती थी... मैंने उन सबको किनारे कर दिया। मैंने खुद से फुसफुसाया: "बस बहुत हो गया... तुम चाहे जो भी हो या जो भी जानती हो, बस नौकरी ढूंढ लो!"
कांपते हाथों से मैंने अपना फोन उठाया। मैंने उस क्षेत्र में नौकरी खोजना शुरू किया जिसमें मैं सबसे अच्छी तरह माहिर थी: अनुवाद। और अचानक, मेरी नज़र उस विज्ञापन पर पड़ी: “चीनी और अंग्रेजी अनुवादक चाहिए। स्थान: थाईलैंड।”
थाईलैंड… सफेद रेतीले समुद्र तट, नीले रंग का पानी और वो मनमोहक नज़ारे मेरी आँखों के सामने कौंध गए। ये स्वर्ग का वो टुकड़ा था जहाँ मैं हमेशा से जाना चाहता था। विदेश में काम करने और अच्छी कमाई करने का ख्याल उस पल मुझे किसी वरदान से कम नहीं लगा। मैंने खुद से कहा, "क्यों नहीं?" मैंने विज्ञापनदाताओं को संदेश भेजा और मानो किसी बड़े बोझ से मुक्त होकर मैंने अपना फोन सेट कर दिया।

म्यांमार से पलायन

एक तरफ हटकर सोने की कोशिश की।
लेकिन उस रात, मैं नींद में नहीं, बल्कि एक भयानक सपने की ओर बढ़ रहा था। वह संदेश आज़ादी का पुल नहीं, बल्कि गुलामी की ओर ले जाने वाले एक छिपे हुए रास्ते की पहली ईंट थी; स्वर्ग की ओर नहीं, बल्कि सीधे नरक के केंद्र की ओर। और जब मैंने उस पुल को पार किया, तब मुझे यह नहीं पता था कि वापसी इतनी खूनी होगी…

* * *

सुबह हो गई। लेकिन यह कोई साधारण भोर नहीं थी; यह उस अंधेरी राह की पहली किरण थी जो मेरे जीवन की दिशा हमेशा के लिए बदल देगी। जब मैंने अपना फोन उठाया, तो एक संदेश ने मेरी धड़कनें तेज़ कर दीं: "हैलो, क्या आप चीनी भाषा में अपनी दक्षता साबित कर सकते हैं?"
मेरी उंगलियां कीबोर्ड पर तेज़ी से चलने लगीं। मैंने अपनी लाल डिप्लोमा की तस्वीरें भेजीं—जो वर्षों की मेहनत का फल था—और अपने प्रमाणपत्रों की भी, जो मेरे भविष्य की आशाओं के दस्तावेजी प्रमाण थे। जवाब तुरंत आया: “बहुत बढ़िया। हमारे विशेषज्ञ आपकी भाषा कौशल की पुष्टि करने के लिए आपसे संपर्क करेंगे। तैयार रहें।”
दोपहर के करीब फोन की घंटी बजी। दूसरी तरफ महिला की आवाज़ ठंडी और औपचारिक थी। चीनी भाषा में अभिवादन करने के बाद, उसने मुझे अपना परिचय देने को कहा। मैंने पूरे उत्साह से बोलना शुरू किया, अपनी पूरी जानकारी का प्रदर्शन करते हुए। ठीक उसी क्षण, एक अजीब सी फुसफुसाहट मेरे कानों में पड़ी। वह महिला पीछे किसी से बात कर रही थी। चीनी भाषा में उसके मुंह से निकला वह एक वाक्य वर्षों बाद भी मेरे मन में गूंजता रहेगा: “ता हेन हाओ आ, मेई यू वेंति। केयी दे।” (वह बहुत अच्छा है, कोई समस्या नहीं। वह ठीक रहेगा…)
मुझे लगा कि वे मेरी भाषाई क्षमता की प्रशंसा कर रहे हैं। मुझे कैसे पता चलता कि उस समय, उसके बगल में बैठा आदमी मेरी बुद्धि का नहीं, बल्कि मेरी कीमत का आकलन कर रहा था—कि वे मुझे कितना कमा सकते हैं।

घातक निर्णय

मुझे बेचकर उन्हें कितना मुनाफा होगा? मैं खुद को एक विद्वान पेशेवर मानता था; उनके लिए मैं महज एक "शिकार" था जो अच्छी कीमत दिला सकता था। इंटरव्यू खत्म हुआ और "आपको नौकरी मिल गई" ये शब्द मेरे कमरे में किसी विजय जुलूस की तरह गूंज उठे। मुझे एक ही रात में नौकरी मिल गई! अब मेरे पास अपने परिवार, अपनी मंगेतर और उन सभी लोगों के लिए जवाब था जिन्होंने मुझे गलत समझा था। कुछ ही देर बाद, मेरे गाइड का एक संदेश आया, जिसने अपना परिचय "यांग" के रूप में दिया। प्रस्ताव किसी परीकथा जैसा था: 2000 डॉलर का वेतन, मुफ्त टिकट, रहने की व्यवस्था और भोजन... उसने यह भी वादा किया कि अगर मैं सफल हुआ, तो मेरा वेतन 10,000 डॉलर तक बढ़ सकता है।
मुझे संदेह था; मैंने सवाल पूछे। बिटकॉइन, क्रिप्टो-विश्लेषण, अनुवाद… सब कुछ तार्किक लग रहा था। मैंने उनके द्वारा भेजी गई वेबसाइट देखी; मानचित्र पर उनके स्थान, कार्यालय की तस्वीरें, आधिकारिक पते—सब कुछ एक “कार्यशील” कंपनी का आभास दे रहा था। मेरे भीतर की एक आवाज़ ने फुसफुसाया: “शायद यही वह जगह है… जहाँ तुम्हारे सारे संघर्ष समाप्त हो जाएँगे।”
जब मैंने अपने परिवार को यह "खुशखबरी" सुनाई, तो हमारे बगीचे में उत्सव का माहौल छा गया। अपनी मंगेतर की आँखों में देखते हुए, मैं खुशी से झूम उठा और बोला, "सब कुछ बहुत अच्छा होगा; मैं पैसे बचाऊँगा, वापस आऊँगा, और हम वो शादी करेंगे जिसका हमने हमेशा सपना देखा है।" लेकिन असल में, मैं अपने ही हाथों से अपनी बर्बादी की नींव रख रहा था।
मुझे वीज़ा के लिए मलेशिया जाना पड़ा। मैंने थाईलैंड में रहने वाले एक अज़रबैजानी से उस जगह की सुरक्षा के बारे में भी पूछा। उसका जवाब, "चिंता मत करो, यहाँ सब कुछ बहुत सुरक्षित है," मेरे लिए अंतिम संकेत था। मैंने अपना टिकट खरीद लिया।
वह टिकट… वह महज़ कागज़ का टुकड़ा या उड़ान परमिट नहीं था। वह आज़ाद दुनिया से अलग होकर गुलामी के अँधेरे में कदम रखने का मेरा वीज़ा था। जब मैंने हवाई अड्डे पर अपने परिवार को अलविदा कहा, तो ऐसा लगा जैसे हवा भारी हो गई हो। अजीब

म्यांमार से पलायन

मेरे पिता की खामोशी, मेरी माँ और मेरी मंगेतर के आँसू... ऐसा लग रहा था मानो उनकी आत्माओं को आने वाले खतरे का आभास हो गया था और वे मुझे जाने नहीं देना चाहती थीं। लेकिन मैं मुस्कुरा रहा था। जब मैंने पीछे मुड़कर देखा, इस बात से अनजान कि मैं उनके चेहरों को आखिरी बार देख रहा हूँ, मैं आशा से भरे भविष्य की ओर बढ़ गया।
मुझे कैसे पता होता कि कुछ ही दिनों में वो मुस्कानें खून और आंसुओं में तब्दील हो जाएंगी? मुझे कैसे पता होता कि जन्नत के सपने देखते-देखते मैं असल में नर्क के दरवाज़े पर दस्तक दे रहा था?

वीज़ा प्रक्रिया: मलेशिया

मैंने हवाई जहाज की खिड़की से बादलों के अनंत सागर को निहारा। मुझमें इतनी ऊर्जा भरी हुई थी कि मैं एक यात्री की बजाय एक पक्षी
की तरह स्वतंत्र रूप से आसमान में उड़ रहा था।
स्वर्ग जैसा सुख! मेरी योजना पक्की थी: मैं एक साल तक जी-तोड़ मेहनत करूंगी, पैसे बचाऊंगी और फिर लौटकर अपने जीवन का एक नया, पवित्र अध्याय शुरू करूंगी। मैं एक नई संस्कृति का अनुभव भी करूंगी और अपनी भाषा कौशल को निखारूंगी। हर तरफ आशा की किरणें ही आशा थीं।
अचानक, पायलट की आवाज़ ने मेरी तंद्रा भंग कर दी: “हम कुआलालंपुर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास पहुँच रहे हैं। हम आधे घंटे में लैंडिंग करेंगे। कृपया अपनी सीट बेल्ट बांध लें।”
मेरा दिल उत्साह से धड़क रहा था। लेकिन मुझे क्या पता था कि उतरते ही बदकिस्मती मेरा इंतज़ार कर रही है? हवाई अड्डे पर ही मुझे धोखे का पहला सामना करना पड़ा। ऐसा लग रहा था मानो सारी बदकिस्मती मेरे साथ उसी विमान में सवार हो गई हो।
मैंने निकास द्वार पर स्थित एक एजेंसी से संपर्क किया और शहर के केंद्र में एक आरामदायक, साफ-सुथरा और आलीशान होटल का कमरा बुक कराया। मैंने जो रकम चुकाई वह कम नहीं थी, लेकिन मैंने मन ही मन सोचा, "आराम सबसे ज़रूरी है।" हालांकि, जब मैं होटल पहुंचा, तो मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ: जिस आलीशान सुइट का मुझसे वादा किया गया था, उसके बजाय मैं एक खिड़कीविहीन, हवा रहित खंडहर के सामने खड़ा था, जिसमें दुर्गंध आ रही थी।

म्यांमार से पलायन

कमरे में सीलन भरी हुई थी और वह जर्जर हालत में था। बाथरूम खराब था; टूटे हुए नलों से हर जगह पानी रिस रहा था, जिससे कमरा पानी से भर गया था। मुझे धोखा दिया गया था। हालाँकि मैंने विरोध किया, लेकिन किसी ने मेरी बात नहीं सुनी। मैंने उस तंग कमरे की छत को घूरते हुए खुद को शांत करने की कोशिश की: "कोई बात नहीं, इफ्तिखार, धैर्य रखो। यह बस कुछ समय के लिए ही है। महत्वपूर्ण बात यह है कि थाईलैंड में एक शानदार नौकरी और सच्चा आराम तुम्हारा इंतजार कर रहा है..."

मलेशिया में जिस होटल में मैं रुका था।
कुछ देर आराम करने के बाद, मैंने शहर की ओर निकलने का फैसला किया।
मुझे संपर्क में रहने के लिए तुरंत एक स्थानीय सिम कार्ड की आवश्यकता थी।

वीज़ा प्रक्रिया: मलेशिया

मैं अपने परिवार और मंगेतर से मिलने और वीज़ा संबंधी व्यवस्था करवाने के लिए सड़क किनारे एक टैक्सी रोकी। ड्राइवर के चेहरे से मलेशियाईपन का पता नहीं चल रहा था। मैंने उसे अंग्रेज़ी में बताया कि मैं यहाँ अजनबी हूँ और मुझे स्थानीय नंबर चाहिए।
उसी क्षण एक अजीब और कुछ हद तक हास्यास्पद घटना घटी। मैं भूल गया था कि मलेशिया में स्टीयरिंग व्हील दाईं ओर होता है। आदत के चलते मैंने सामने का दरवाजा खोला और सीधे ड्राइवर की सीट पर, स्टीयरिंग व्हील के ठीक पीछे बैठ गया। ड्राइवर ने हैरानी और थोड़े डर के साथ मेरी ओर देखा और पूछा: "क्या तुम चोर हो? क्या तुम मेरी कार को अगवा करने की कोशिश कर रहे हो?"
जब मैंने स्थिति समझाई और माफी मांगी, तो हम दोनों हंस पड़े। जैसे ही टैक्सी कुआलालंपुर की शानदार सड़कों पर पहुंची, मैं अपनी प्रशंसा छिपा नहीं सका। आसमान छूती गगनचुंबी इमारतें, चमचमाती लग्जरी कारें, दुनिया के कोने-कोने से आए पर्यटक... शहर किसी जीवित प्राणी की तरह सांस ले रहा था। ऐसी सुंदरता में घूमते हुए, मेरे मन में जो छोटे-मोटे संदेह थे, वे सब दूर हो गए। मुझे सचमुच लगा कि आखिरकार जिंदगी मुझ पर मेहरबान है।
लेकिन उन चमकदार रोशनी के पीछे छिपे अंधेरे से मैं पूरी तरह अनजान था। उस दिन टैक्सी में स्टीयरिंग व्हील को संभालने में मुझसे जो गलती हुई, शायद वह किस्मत की चेतावनी थी: "इफ्तिखार, तुमने गलत रास्ता चुन लिया है!" लेकिन मैं उम्मीदों में इतना डूबा हुआ था कि संकेतों को समझ ही नहीं पाया...

* * *

आखिरकार, हम अपनी मंज़िल पर पहुँच गए। मुझे एक नया सिम कार्ड मिल गया, मेरा इंटरनेट चालू हो गया, और ऐसा लगा जैसे दुनिया से मेरे टूटे हुए संबंध फिर से जुड़ गए हों। रास्ते में, ड्राइवर के साथ मेरी बातचीत और भी जीवंत हो उठी। एक दिलचस्प बात सामने आई: वह जातीय रूप से चीनी था। जब मैं

म्यांमार से पलायन

जब मैंने उनसे उनकी अपनी भाषा—चीनी—में बात करना शुरू किया, तो उनके चेहरे पर आश्चर्य और एक सच्ची मुस्कान दोनों के भाव उभर आए। हमारा संवाद एक अजनबी और एक यात्री के बीच के साधारण लेन-देन से बदलकर दो पुराने परिचितों की बातचीत में बदल गया। वह सचमुच एक अच्छे इंसान लग रहे थे। वापस लौटते समय, उन्होंने एक अप्रत्याशित प्रस्ताव रखा: "आइए, साथ में रात का खाना खाते हैं; हम थोड़ी और बात कर सकते हैं," उन्होंने कहा।
मैं मान गया। उस रात, कुआलालंपुर की रंगीन रोशनी में, हमने साथ में खाना खाया और अपनी नई दोस्ती को और मजबूत किया। उसके बाद, मैं अपने बदहाल, हवा रहित होटल के कमरे में लौट आया। इस तरह पहला दिन समाप्त हुआ। सोने से पहले, मैंने ड्राइवर का नंबर सेव कर लिया और उसे एक संदेश भेजा: "हम कल संपर्क में रहेंगे; आप मुझे दूतावास तक ले जाएँगे।"
मैं अब भी बेखबर थी। उस अंधेरे, बिना खिड़की वाले कमरे की दीवारों को घूरते हुए, मैं अपने सपनों को साकार करने में लगी थी। हर पल मैं अपनी नई जिंदगी, अपनी कमाई और अपने परिवार की योजना बनाने में बिता रही थी। हालांकि, कल ड्राइवर के मुंह से निकलने वाले कुछ शब्द मेरे भीतर आशा की उस उज्ज्वल किरण को चकनाचूर करने वाले थे, और मुझे पहली बार एक गंभीर भय के चंगुल में धकेलने वाले थे...
लेकिन उस क्षण में, मुझे अब भी विश्वास था कि मैं तारों को देख रहा हूँ, जबकि सच्चाई यह थी कि मैं एक खाई के किनारे पर चल रहा था।

* * *

सुबह होते ही मैंने अपना पासपोर्ट और उम्मीदें लेकर टैक्सी ड्राइवर को फोन किया। अब वह मेरे लिए सिर्फ एक ड्राइवर नहीं था; इस अनजान शहर में वही एकमात्र जाना-पहचाना चेहरा था जिस पर मैं भरोसा कर सकती थी। हम दूतावास की ओर चल पड़े। महज पंद्रह मिनट का सफर एक जीवनकाल जैसा लगा; मुझे विश्वास था कि जैसे ही मैं उन दरवाजों से अंदर कदम रखूंगी, मेरी सारी परेशानियां खत्म हो जाएंगी।

वीज़ा प्रक्रिया: मलेशिया

लेकिन दूतावास के द्वार पर सुनाई गई ठंडी आवाज मेरे सिर पर उबलते पानी की बाल्टी उड़ेलने जैसी थी: "वीजा प्रक्रिया इस तरह काम नहीं करती। आपको कम से कम एक सप्ताह पहले ऑनलाइन अपॉइंटमेंट बुक करना होगा।"
उस पल मेरे घुटने कांपने लगे। निराश होकर, कंधे झुकाए मैं वापस लौट आया। उस तंग, हवा रहित होटल के कमरे में पहुँचते ही मैंने सिस्टम में लॉग इन किया और सबसे पहले उपलब्ध तारीख चुनी: 23 अक्टूबर। मेरे सामने पूरा एक हफ्ता पड़ा था जो बीतने का नाम ही नहीं ले रहा था—एक ऐसा हफ्ता जहाँ हर पल का मतलब "पैसा" था।
मेरी जेब में पड़े पैसे तेज़ी से खत्म हो रहे थे। अपनी इज़्ज़त और बेबस होकर, आखिरकार मजबूरी में मैंने कर्ज़ लिया। मैंने खुद को तसल्ली दी: “कोई बात नहीं, इफ्तिखार, थाईलैंड में अपनी पहली तनख्वाह से तुम ये सारे कर्ज़ चुका दोगे।” उस समय मुझे लगा कि ये बस एक छोटी सी रुकावट है… मुझे नहीं पता था कि असली मुसीबत तो अभी आने वाली थी।
उस सप्ताह के दौरान, चीनी ड्राइवर ही मेरा एकमात्र साथी बन गया। शाम को हम सस्ते स्थानीय भोजनालयों में खाना खाते थे; दिन में, जब वह पर्यटकों को घुमाता था, मैं शहर की जगमगाती सड़कों पर घूमकर अपनी आत्मा को शांति देने की कोशिश करता था।
एक दिन, उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा: “शहर से दूर, सफेद रेत वाला एक बेहद शांत समुद्र तट है। क्या आप चाहती हैं कि मैं आपको वहाँ ले जाऊँ? आप वहाँ थोड़ा आराम कर सकती हैं।”
मेरे मन में उठ रहे उथल-पुथल भरे विचारों को शांत करने के लिए यह प्रस्ताव किसी वरदान से कम नहीं था। लेकिन वह दिन 23 अक्टूबर भी था— वीज़ा का दिन। हमने पहले पासपोर्ट का मामला सुलझाने का फैसला किया, फिर उस "शांति" की ओर बढ़ने का।
दूतावास में मैंने अपना पासपोर्ट सौंप दिया। उन्होंने मेरी ओर एक छोटी सी पर्ची बढ़ा दी जिस पर लिखा था: "कल, 24 अक्टूबर को वापस आइएगा; आपका वीजा तैयार हो जाएगा।"
जैसे ही मैं कांपती उंगलियों से बाहर निकली, मैंने मैसेज किया।

म्यांमार से पलायन

यांग: “मेरा वीज़ा कल तैयार हो जाएगा। परसों के लिए मेरी टिकट बुक कर दीजिए!” मैंने उसे अपने पासपोर्ट की एक तस्वीर भेजी—जैसे कि मैं अपने बलिदान का प्रमाण भेज रहा हूँ—ताकि वह मेरे होटल और फ्लाइट का इंतज़ाम कर सके।
और इस तरह… मैंने नरक की ओर एक और बड़ा कदम बढ़ा दिया। उस पल, उस तट पर समुद्र की लहरों को देखते हुए, मुझे लगा कि मुझे शांति मिल जाएगी, लेकिन वास्तव में, यह भयंकर तूफान से पहले की अंतिम और सबसे भ्रामक शांति थी।

* * *

जब शाम का अंधेरा कुआलालंपुर के आकाश पर छा गया, तब तक हम तट पर पहुँच चुके थे। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कुछ ही पलों में, यह शांत तट मेरी आत्मा में एक ऐसी चिंगारी जगा देगा जो एक कभी न बुझने वाली आग में तब्दील हो जाएगी।
हम गाड़ी से बाहर निकले। हमारे पैरों के नीचे मुलायम सफेद रेत थी, और चारों ओर रंग-बिरंगे लालटेन की टिमटिमाती रोशनी फैली हुई थी। ठंडी हवा लहरों की मधुर ध्वनि को लोरी की तरह मेरे कानों में फुसफुसा रही थी। सब कुछ इतना शांत, इतना सुंदर था, मानो जीवन अपने भयानक आश्चर्य से पहले अपनी भव्यता का अंतिम प्रदर्शन कर रहा हो। लेकिन यह सुंदरता मात्र एक आवरण थी। अचानक, ड्राइवर ने चुप्पी तोड़ते हुए एक तीखा सवाल पूछा: "आप थाईलैंड क्यों जा रहे हैं?"
अपनी आवाज़ में आत्मविश्वास बनाए रखने की कोशिश करते हुए मैंने जवाब दिया: "काम के लिए। मुझे पेशेवर अनुवादक के रूप में आमंत्रित किया गया है।"
ड्राइवर ने गहरी सांस ली। उसकी निगाहें दूर तक फैले समुद्र के अंधेरे पर टिकी थीं। उसकी आवाज़ में एक कांपती हुई गंभीरता थी: "मैं आपको एक छोटी सी सलाह देना चाहता हूँ... बहुत सावधान रहना।"
मुझे अपने भीतर एक अजीब सी पीड़ा महसूस हुई। जब मैंने पूछा, "क्यों?", तो वह अब टैक्सी ड्राइवर की तरह नहीं, बल्कि एक पैगंबर की तरह बोल रहा था।

वीज़ा प्रक्रिया: मलेशिया

एक भयानक आपदा की आशंका जताते हुए: “क्या तुमने नहीं सुना? वे लोगों को काम का लालच देकर उन इलाकों में ले जाते हैं… फिर उन्हें बंदी बना लेते हैं और गुलामों की तरह काम करवाते हैं। यातना, अंधेरी काल कोठरी, यहाँ तक कि मौत भी… सावधान रहना, इफ्तिखार।”
उस पल, अपने भीतर उठ रहे डर को दबाने के लिए, मैंने तुरंत बचाव की मुद्रा अपनाई: “नहीं, यह असंभव है! मैंने सब कुछ अच्छी तरह से जाँच लिया है। मैंने कंपनी को देखा है, उनकी आधिकारिक वेबसाइट है। इसके अलावा, अगर कोई संदिग्ध स्थिति हुई, तो मैं भाग जाऊँगी। मैं इस रास्ते पर निकल चुकी हूँ; अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है…”
ड्राइवर ने बस कंधे उचका दिए। उसकी आँखों में वो भाव था—ऐसा भाव जो कह रहा था, “मैंने तुम्हें चेतावनी देकर अपना फर्ज पूरा कर दिया है”—जो मेरे दिल में बर्फ के टुकड़े की तरह चुभ गया। होटल वापस जाते समय पूरी यात्रा के दौरान, मेरे भीतर उथल-पुथल मची रही। “अगर वो सही निकला तो?” ये सवाल मेरे दिमाग में कीड़े की तरह कुतरता रहा। लेकिन तभी, एक और आवाज़— मेरे स्वाभिमान और मेरी ज़िम्मेदारी की आवाज़—ने जवाब दिया: “नहीं! तुम पीछे नहीं हट सकते! तुम पर कर्ज़ है, तुम्हारा परिवार तुम पर निर्भर है, तुम्हें खुद को साबित करना होगा!”
मैंने यांग को संदेश भेजकर अपनी शंका व्यक्त की। उसने एक माहिर चालाक की तरह झूठ बोलकर मुझे शांत किया। उस रात, बिना खिड़की वाला कमरा मेरे लिए एक पिंजरे जैसा बन गया। मैं सुबह तक बिना पलक झपकाए जागती रही, और आखिरकार मैंने फैसला किया: "मैं जाऊंगी। जो भी मेरे भाग्य में लिखा है, मैं उसका सामना करूंगी।"
24 अक्टूबर को मैंने अपना वीज़ा ले लिया। 25 अक्टूबर की फ्लाइट का टिकट मेरी जेब में था। एक कैफे में बैठकर, हाथ में कॉफी का कप ठंडा करते हुए, मैंने आखिरी उपाय के तौर पर अपने दोस्त को फोन किया। मैंने उसे सब कुछ बताया—ड्राइवर ने क्या कहा था, मेरे मन में मंडरा रहे काले बादल। मेरे दोस्त की आवाज़ दृढ़ थी: “इफ्तिखार, इस रास्ते से लौट जाओ! अगर तुम्हारे मन में यह शंका आई है, तो मत जाओ। तुम्हारी जान से बढ़कर कुछ भी कीमती नहीं है!”
लेकिन मैं अब पहले जैसा नहीं रहा था। मैं पहले ही एक कैदी बन चुका था।

म्यांमार से पलायन

यह मेरा अपना फैसला है। “नहीं,” मैंने कहा। “मैं जा रहा हूँ। अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है।”
उस पल मुझे नहीं पता था कि वे चार शब्द—“अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं”—मुझे जिंदा ही नरक की ओर ले जाने वाले दरवाजे की आखिरी चाबी घुमा देंगे। मुझे नहीं पता था कि जल्द ही मुझे आजादी के उन आखिरी पलों की कीमत अपने ही खून से चुकानी पड़ेगी…

* * *

25 अक्टूबर… विमान बैंकॉक हवाई अड्डे पर उतरा। पहियों का सड़क से टकराना ऐसा था मानो आज़ादी से मेरा आखिरी बंधन भी टूट गया हो। उसी क्षण से मेरे नरक का रास्ता शुरू हो गया।
अब से आगे, मैं हर बात को ठीक वैसे ही बयान करूंगा जैसे मैंने उसे जिया है—हर सांस के साथ, अपनी आत्मा के हर कण से—उसके नग्न और निर्मम सत्य के साथ…

थाईलैंड: गुलामी की राह
अंततः, मैं थाईलैंड में था। बैंकॉक हवाई अड्डे के जगमगाते,
अंतहीन प्रतीत होने वाले गलियारों ने मेरे भीतर एक अजीब सा
तूफान खड़ा कर दिया। उत्साह, भय, आशा और एक
मेरी आत्मा में अनियंत्रित चिंताएँ आपस में गुंथी हुई थीं। यांग के निर्देश अभी भी मेरे कानों में गूंज रहे थे: "कोई आपको हवाई अड्डे पर लेने आएगा। अपनी एक तस्वीर खींचकर भेज दें ताकि वे आपको पहचान सकें।" यात्रा शुरू करने से पहले मैंने उन्हें अपनी तस्वीर भेजी थी। मैंने पीले रंग की छोटी आस्तीन वाली कमीज़, जींस, सफेद स्नीकर्स और सिर पर ग्रे टोपी पहनी हुई थी। यह साधारण, रोज़मर्रा का पहनावा मेरे सबसे आरामदायक रूप को दर्शाता था, फिर भी इसमें मेरे भीतर पनप रहे ठंडे संदेह को छिपाने की ताकत नहीं थी।
पासपोर्ट नियंत्रण पर तैनात अधिकारी की ठंडी निगाहों के सामने मुझे पसीना आ गया: "आप यहाँ क्यों आए हैं? आप कहाँ ठहरेंगे?"
मैंने योजना के अनुसार उत्तर दिया: "एक पर्यटक के रूप में... दो सप्ताह की छुट्टी के लिए..."
”

एक तरह से यह मेरी "प्लान बी" थी; अगर नौकरी नहीं मिली तो मैं
मैं बस दो हफ्ते पर्यटक बनकर रुकूंगा और घर लौट जाऊंगा। मेरे पास यांग द्वारा बुक किए गए होटल आरक्षण की सारी जानकारी थी। सब कुछ ठीक लग रहा था; सब कुछ असली लग रहा था। लेकिन अधिकारी के सवालों में ज़रूरत से ज़्यादा बारीकी ने थोड़ा संदेह पैदा कर दिया।

म्यांमार से पलायन

मेरे मन में एक प्रश्नचिह्न उठ रहा था: "मुझे आश्चर्य है कि वे इतनी सावधानी क्यों बरत रहे हैं?"
एयरपोर्ट के निकास द्वार तक पहुँचने से पहले ही, एक लंबा-चौड़ा, गठीला आदमी मेरे सामने आ गया। काले चश्मे और सिर से पैर तक काले कपड़ों में वह किसी खुफिया गार्ड जैसा लग रहा था। बिना कुछ कहे उसने मुझे अपने फोन में एक फोटो दिखाई। उस फोटो में पीली शर्ट पहने युवक मैं ही था। मैंने सिर हिलाकर कहा: "हाँ, मैं ही हूँ।"
उसके बगल में एक लड़की और एक लड़का था जो देखने में इंडोनेशियाई लग रहे थे। मैंने उनकी आँखों में वही भाव देखा—आशा और भय का मिलाजुला भाव। उसी क्षण, मैंने अपने मन में एक “तसल्ली देने वाला” परिदृश्य गढ़ा: “अगर ये लोग अपराधी होते, तो हवाई अड्डे के बीचोंबीच इतनी आज़ादी से कैसे घूम सकते थे? ड्राइवर की बातें महज़ अफवाहें ही होंगी; सब कुछ आधिकारिक और कानूनी है।” उस विचार ने उस पल मेरी आत्मा को सबसे गहरा आघात पहुँचाया—सुरक्षा का एक झूठा एहसास जिसने मुझे भागने का विचार छोड़ने पर मजबूर कर दिया।
जब हम टैक्सी स्टैंड पर पहुँचे, तो काले कपड़े पहने उस आदमी ने मुझे रोक लिया; उसने बाकी दोनों लोगों को दूसरी गाड़ी में बिठाया और उन्हें विदा कर दिया। कुछ ही देर बाद, एक शानदार काली गाड़ी हमारे बगल में आकर रुकी। जैसे ही ड्राइवर ने मेरा सामान गाड़ी में रखा, गार्ड ने मुझे आगे की सीट पर बैठने का इशारा किया। वह खुद हवाई अड्डे के अंधेरे में ही खड़ा रहा।
गाड़ी चलने लगी। मैंने ड्राइवर से बात करने की कोशिश की, लेकिन वह आसपास के हजारों ड्राइवरों में से एक था, जो सिर्फ थाई भाषा बोलता था। कोई खतरे का संकेत नहीं था। इंटरनेट कनेक्शन कट जाने के कारण यांग से मेरा कोई संपर्क नहीं हो पा रहा था, लेकिन मैं मन ही मन बुदबुदाती रही: "होटल पहुंचते ही सब ठीक हो जाएगा।"
हर कदम, हर सांस, हर नजर... मैं पहले से ही एक ऐसे रास्ते पर चल रहा था जहाँ से वापसी असंभव थी।

थाईलैंड: गुलामी की राह

* * *

आखिरकार हम होटल पहुँच गए। सब कुछ वैसा ही था जैसा यांग ने वादा किया था। जैसे-जैसे हम बैंकॉक के केंद्र से दूर होते गए, मेरे अंदर का डर धीरे-धीरे शांति की झूठी अनुभूति में बदल गया। जब मैंने होटल के दरवाज़े से अंदर कदम रखा और कर्मचारियों ने मुझे नाम से पुकारा, और विनम्रता से मेरा सामान मेरे कमरे तक पहुँचाया, तो मुझे पल भर के लिए शर्म महसूस हुई। मैंने मन ही मन सोचा, "इफ्तिखार, तुम कितने शक्की इंसान हो... जो लोग दूसरों को बंधक बनाते हैं, वे इतनी बारीकी और औपचारिकताएँ कैसे निभा सकते हैं?"
जब मैं कमरे में दाखिल हुआ, तो मेज पर रखा नजारा देखकर मैं पूरी तरह से स्तब्ध रह गया: मेरे नाम का एक गरमागरम भोजन का पैकेट रखा हुआ था। मेरे लिए यह सिर्फ भोजन नहीं था; यह "अतिथि सत्कार" का प्रमाण था।
मैंने तुरंत इंटरनेट से जुड़कर यांग को अपने आने की सूचना दी। कुछ मिनट बाद वीडियो कॉल आया। स्क्रीन के दूसरी तरफ से आवाज़ बहुत ही मधुर और स्नेहपूर्ण थी… “कैसा महसूस कर रहे हो? क्या तुम आराम से रह रहे हो? हमने तुम्हारे लिए खाना और एक आरामदायक कमरा तैयार किया है। नहा लो, आराम करो और यात्रा की थकान दूर करो,” उन्होंने कहा।
मैंने गहरी सांस ली और जवाब दिया, "मैं ठीक हूँ, सब कुछ बढ़िया है। लेकिन मेरे भीतर अभी भी एक अजीब सा दर्द है..."
यांग मुस्कुराया। उस समय उस मुस्कान के पीछे छिपे शिकारी को देखना असंभव था। "चिंता मत करो, हमारे पास पहुँचते ही तुम अपनी आँखों से देख लोगे कि सब कुछ कितना परिपूर्ण है। देखो, यह हमारा कार्यालय है," उसने कैमरा कमरे की ओर घुमाते हुए कहा।
स्क्रीन पर एक आधुनिक कार्यालय का माहौल दिखाई दिया— विशाल, चमकदार रोशनी से भरा हुआ, जहाँ दर्जनों लोग कंप्यूटरों के पीछे लगन से काम कर रहे थे। मुझे और आश्वस्त करने के लिए, उन्होंने मुझे एक विदेशी कर्मचारी से भी बात करवाई। उस व्यक्ति ने कैमरे की ओर मुस्कुराया।

म्यांमार से पलायन

और उसने कहा, “चिंता मत करो, मेरे दोस्त, यहाँ बहुत अच्छा है। हम तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं; हम साथ मिलकर शानदार काम करेंगे।”
उस पल, मेरी सारी सुरक्षात्मक दीवारें ढह गईं। मेरे मन में कभी यह ख्याल नहीं आया कि जो कुछ मैं देख रहा था—कार्यालय, लोग, वे सच्चे शब्द—ये सब महज़ मेरे लिए मंचित एक भव्य प्रदर्शन के दृश्य थे।
यांग ने अपना अंतिम निर्देश दिया: “खाना खाकर सो जाओ। ड्राइवर आज शाम तुम्हें लेने आएगा। तुम हमारे मुख्य व्यापारिक केंद्र, टाक प्रांत के लिए रवाना होगे।”
मैंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। मैंने खाना खाया और अपने परिवार और मंगेतर से बात की। बनावटी दिलासा भरे स्वर में मैंने उनसे कहा, "सब ठीक है।" हालाँकि वह अजीब सी भावना पूरी तरह से गायब नहीं हुई थी, लेकिन अब मैं उसका विरोध नहीं कर रहा था। उस दिन, मैं होटल के कमरे के मुलायम बिस्तर पर चैन से सो गया। लेकिन शाम के अंधेरे में आती हुई वह काली कार मुझे किसी "नई नौकरी" पर नहीं ले जा रही थी—वह मुझे मेरे जीवन के सबसे भयानक बुरे सपने की ओर ले जा रही थी...

* * *

शाम का समय था… मैं बिस्तर पर लेटी हुई थी, गर्म पानी से नहाने के सुकून में डूबी हुई थी। एयर कंडीशनर की धीमी आवाज़ के बीच जैसे ही मुझे गहरी, मीठी नींद आने लगी, दरवाज़ा खुलने की आवाज़ से मैं चौंक गई।
मेरी आँखें अभी पूरी तरह बंद भी नहीं हुई थीं कि जो दृश्य मैंने देखा, उससे मैं दंग रह गया: ड्राइवर और होटल का एक कर्मचारी बिना दरवाजा खटखटाए, बिना अनुमति मांगे सीधे कमरे में घुस आए। यह कुछ ही घंटे पहले मिले अत्यधिक विनम्रतापूर्ण व्यवहार से बिलकुल अलग था।
उन्होंने ऐसा व्यवहार किया मानो मैं कमरे में था ही नहीं।
मैं बिस्तर से उठा। मेरे दिल की धड़कन थोड़ी तेज हो गई थी।

थाईलैंड: गुलामी की राह

बिना कुछ कहे, ड्राइवर ने हाथ से इशारा करके मुझे उठने को कहा: "तैयार हो जाओ। हम अभी निकल रहे हैं।"
उनकी आवाज़ में एक अजीब सी, ठंडी बेचैनी थी। इतनी सुबह क्यों, और ठीक इसी समय क्यों? उन्होंने कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया। बेबसी से मैंने अपने कपड़े समेटे और उन्हें अपने बैग में रख लिया। उसी क्षण, मेरे अंदर एक अजीब सी पीड़ा उभर आई—जैसे कि यह अचानक उठाया गया कदम पहला छोटा सा संकेत था कि कुछ गड़बड़ है।
हम नीचे गए। ड्राइवर ने मेरा बैग लिया, उसे कार की डिग्गी में रखा और मुझे कार में बैठने का इशारा किया। जैसे ही मैं बैठी, वह थाई भाषा में बोलने लगा। उसकी कठोर आवाज़ से लग रहा था कि वह परेशान है, लेकिन मुझे एक भी शब्द समझ नहीं आया। मुझे उलझन में देखते हुए देखकर उसने अपना फ़ोन निकाला, ट्रांसलेशन ऐप में बोला और मुझे स्क्रीन दिखाई: "अपना पासपोर्ट दिखाओ।"
हालाँकि मेरे मन में यह सवाल कौंधा, “फिर से? किसलिए?”, मैंने विरोध नहीं किया। मैंने उसे अपना पासपोर्ट दे दिया। उसने दस्तावेज़ की बारीकी से जाँच की, मानो हर एक अक्षर को जाँच रहा हो, और फिर उसे लौटा दिया। उसने फिर से फोन पर बात की:
“हमारी यात्रा लंबी है। अगर आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो, तो बस इशारा कर दीजिए और मैं रुक जाऊँगा। अपनी सीट बेल्ट बाँध लीजिए। हम अब निकल रहे हैं। अगर आपको कुछ कहना हो, तो अनुवाद ऐप का इस्तेमाल कीजिए।”
मैं बोल नहीं पा रही थी; मैंने बस सिर हिलाकर जवाब दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी ज़िंदगी का एक दौर पीछे छूट गया हो, ठीक उसी होटल के कमरे के दरवाज़े की तरह। अब तो पीछे मुड़ने का ख्याल भी मुझे दूर की कौड़ी लग रहा था।
इंजन की आवाज़ ने कमरे की खामोशी को तोड़ दिया। कार धीरे-धीरे होटल के सामने से निकल पड़ी। खिड़की से मैंने बैंकॉक की रंगीन बत्तियों को टिमटिमाते देखा। शहर शांत था, लेकिन मेरे भीतर एक उथल-पुथल मचने लगी थी। और मैं इसे महसूस कर सकता था... वह असली अजनबीपन, वह दुनिया जो बिल्कुल पराई थी।

म्यांमार से पलायन

मुझे लगता है कि वह यहीं इस सड़क पर मुझसे मिलने का इंतजार कर रहा था।

* * *

हम रात के घोर अंधेरे में आगे बढ़ रहे थे। बैंकॉक की रात अजीब थी—न तो पूरी तरह शांत और न ही पूरी तरह जीवंत। जैसे-जैसे शहर की जगमगाती रोशनी हमारे पीछे फीकी पड़ती गई, सड़क के किनारे लगे पीले रंग के स्ट्रीट लैंप एक-एक करके गुजरते गए; मानो वे अंधेरे में हमारा मार्गदर्शन करते-करते थक गए हों। उष्णकटिबंधीय रातों की चिपचिपी, भारी ठंडक कार की खिड़की से अंदर आ रही थी।
कार के अंदर गहरा सन्नाटा छाया हुआ था। ड्राइवर मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा था, जबकि मैं अपने ही विचारों की गहराई में डूबा हुआ था। यात्रा शुरू करने से कुछ देर पहले ही मेरे गले में सूखी खांसी शुरू हो गई थी, और अब यह बढ़ती ही जा रही थी। ऐसा लग रहा था मानो मलेशिया की उमस भरी हवा, पिछले कुछ दिनों की थकान और मेरा आंतरिक तनाव मिलकर मेरे फेफड़ों में ठंडी धुंध की तरह जम गए हों। खांसी अभी तेज नहीं थी, लेकिन सूखी और परेशान करने वाली थी, मानो भीतर से एक चेतावनी भरी पुकार हो। मैं ड्राइवर के सामने खांसने से हिचकिचा रहा था; हर बार जब मेरा गला परेशान होता, मैं अपनी सांस रोक लेता और तनाव में आ जाता। "बस मौसम में बदलाव है, ठीक हो जाएगा," मैंने खुद से झूठ बोला। लेकिन मेरा शरीर मुझसे कहीं ज्यादा सतर्क था; उसने मुझसे बहुत पहले ही आने वाले खतरे को भांप लिया था।
कुछ घंटों बाद, मुझे सांस लेने में तकलीफ होने लगी और सिर थोड़ा घूमने लगा। मुझे ड्राइवर से रुकने के लिए कहना पड़ा। बिना किसी विरोध के, उसने सिर हिलाया और गाड़ी को पास के एक पेट्रोल पंप पर रोक दिया।
रात के अंधेरे में स्टेशन किसी सुनसान द्वीप की तरह जगमगा रहा था।
जब मैं कार से बाहर निकला, तो ठंडी हवा मेरे चेहरे पर लगी और मुझे पल भर के लिए राहत महसूस हुई। मैंने एक बोतल खरीदी।

थाईलैंड: गुलामी की राह

मैं पानी के किनारे खड़ा था और वाहन से थोड़ी दूरी पर था। मेरे आस-पास सब कुछ इतना साधारण, इतना सामान्य था... फिर भी मेरे भीतर की वह रहस्यमयी आवाज़ ठीक इसके विपरीत कह रही थी।
उसी क्षण, एक भयावह विचार बिजली की तरह मेरे दिमाग में कौंध गया: "शायद ये तुम्हारी आजादी के आखिरी पल हैं..."
मानो इस भावना को पुष्ट करने के लिए, मैंने अपने आस-पास के वातावरण को और भी ध्यान से देखना शुरू कर दिया। राहगीर, स्टेशन की हल्की रोशनी, दूर से आती गाड़ियों की धीमी आवाज़—मैंने हर चीज़ को अपनी स्मृति में इस तरह बसाने की कोशिश की जैसे मैं उसे आखिरी बार देख रहा हूँ। मेरे जीवन का एक विशाल, चौड़ा दरवाज़ा धीरे-धीरे, चरमराते हुए, बंद होने वाला था। और मुझे अब भी पूरी तरह समझ नहीं आ रहा था कि दूसरी तरफ क्या छिपा है।

* * *

रात की खामोशी और सड़क की एकरस लय ने मुझे गहरी नींद में खींच लिया था। थकान से मेरे विचार धुंधले पड़ गए थे और मेरा शरीर पूरी तरह से बेजान हो गया था। अचानक, मानो किसी अनदेखे हाथ ने मुझे हिला दिया हो, मैं झटके से जाग गया। मुझ पर एक अजीब सा भारीपन छा गया था; मैं ठीक से सांस नहीं ले पा रहा था और न ही मेरा दिमाग समझ पा रहा था कि हम कहाँ हैं। जब मैंने आँखें खोलीं, तो सामने का दृश्य देखकर मेरा दिल बैठ गया। चारों ओर घना अंधेरा था। कार की हल्की पीली रोशनी में, धुंध से ढकी, खड़ी चट्टानें और घने जंगल ही दिखाई दे रहे थे।
जंगलों की गड़गड़ाहट और दूर से आती ठंडी हवा की भयानक गर्जना। स्पष्टतः, हम पहाड़ों के सबसे ऊँचे, सबसे सुनसान स्थान पर थे। मेरे मन में एक अनिश्चित प्रश्न उठा: “हम आखिर कहाँ जा रहे हैं? यह सड़क कभी खत्म क्यों नहीं होती? हमारे आस-पास जीवन का कोई संकेत क्यों नहीं है?” जैसे-जैसे अंधेरा गहराता गया, मेरी आंतरिक चिंता चरम पर पहुंच गई।

म्यांमार से पलायन

असहनीय सीमा। कांपते हाथों से मैंने अपना फोन उठाया। इस सन्नाटे में मुझे किसी की आवाज़, किसी परिचित चेहरे की ज़रूरत थी। मैंने अपने दोस्त को एक छोटा सा संदेश लिखा: "मैं चिंतित हूँ... अगर हो सके तो मुझे वीडियो कॉल करो।"
लेकिन ऐसा लगा मानो दुनिया मेरी बात सुनने से इनकार कर रही हो। पहाड़ की चोटी पर इंटरनेट इतना कमजोर था कि कॉल लग ही नहीं रही थी। उस पल, मुझे लगा कि दुनिया से मेरा आखिरी रिश्ता भी टूट गया है। मैं एक सुनसान पहाड़ी रास्ते पर, एक ऐसे आदमी के साथ, जिसकी भाषा मैं नहीं जानती थी, एक खालीपन में अकेली रह गई थी।
मैंने सावधानी बरतने की आखिरी कोशिश की। मैंने जीपीएस खोला, बड़ी मुश्किल से अपनी मौजूदा लोकेशन ढूंढी और अपने दोस्त को भेज दी: "अगर कुछ भी होता है... तो ये वो आखिरी जगहें हैं जहां मैं था।"
जैसे ही मैंने वह संदेश टाइप किया, मेरी उंगलियां बर्फ की तरह ठंडी हो गईं। यह महज़ एक मामूली सी जानकारी नहीं थी; यह मेरी आज़ादी की आखिरी सांस थी, आने वाली तबाही की पहली आधिकारिक चेतावनी थी। अपने निर्देशांक भेजकर, मैंने वास्तव में अपना जीवन अंधकार के केंद्र में सौंप दिया था।
ड्राइवर ने बिना कुछ कहे स्टीयरिंग व्हील को कसकर पकड़ लिया और ऊबड़- खाबड़ पहाड़ियों के बीच गाड़ी चलाता रहा। मैं खिड़की से छनकर आती धुंध को देखता रहा... न कोई संदेश, न कोई नक्शा अब मुझे उस नियति से बचा सकता था जो मेरा इंतजार कर रही थी।

* * *

मैं अपने पूरे दिल से इस अंधेरी सड़क के खत्म होने का इंतज़ार कर रहा था। ऐसा लग रहा था मानो जैसे-जैसे रात बढ़ती जा रही थी, मेरी आत्मा में व्याप्त भयानक बेचैनी भी अनंत तक फैलती जा रही थी। मुझे शांति नहीं मिल रही थी; हर गुजरता मिनट मुझे कीड़े की तरह कुतर रहा था। अचानक, कार की हेडलाइट्स ने उस अंधेरे में एक अजीब दृश्य को रोशन किया: आगे एक सैन्य चौकी दिखाई दी।

□□□□□□□□: □□□□□□ □□ □□□

STOP

□□□□□ □□□□

□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□ □□□□□□... □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□: "□□□□ □□□□□!"

□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□, □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□; □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□: “□□ □□□□□ □□ □□□? □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□?”

□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□: “□□□ □□ □□□□□□ □□□, □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□” □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□, □□□ □□□

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]:

म्यांमार से पलायन

कार की हालत और भी भयावह थी: उन्होंने गाड़ी को उल्टा कर दिया था और ट्रंक से लेकर टायरों के नीचे तक हर जगह तलाशी ली थी।
ड्राइवर ने मुझे कार की नंबर प्लेट के सामने खड़े होने का आदेश दिया। वह प्लेट के बाईं ओर खड़ा था और मैं दाईं ओर। एक सैनिक ने अपना फोन उठाया और प्लेट के साथ हमारी तस्वीर एक ही फ्रेम में खींच ली। उसी क्षण मेरे दिमाग में एक कौंधी सी कौंधी: “ये क्या हो रहा है? नौकरी के लिए आना किसी डरावनी फिल्म में क्यों बदल गया? मैं आखिर कहाँ आ गया हूँ?”
मैं लगभग पागल हो रहा था। अनसुलझे सवाल मेरे दिमाग को कुरेद रहे थे। कार में बैठते ही मैंने कांपती उंगलियों से ट्रांसलेशन ऐप में टाइप किया: “यह किस तरह की जांच है? क्या यह थाईलैंड नहीं है? शहरों के बीच इस तरह की चौकियां क्यों हैं?”
ड्राइवर ने वही खौफनाक चुप्पी बनाए रखी और मुस्कुराते हुए कहा: "सब ठीक है।"
आपको यकीन नहीं होगा, लेकिन हम एक जैसे तीन चेकपॉइंट से गुज़रे, हर बार वही खौफ। हर बार वही तस्वीरें, वही घूरती निगाहें... मेरे अंदर से एक आवाज़ आ रही थी: "हे भगवान, मेरी मदद करो!" लेकिन मेरा स्वभाव ही ऐसा है: मुश्किल से मुश्किल पलों में भी मैं हार नहीं मानती। मैंने खुद से कहा, "आगे बढ़ते रहो। देखते हैं क्या होता है।"
बाद में सब कुछ मेरे लिए एकदम स्पष्ट हो गया: वे तस्वीरें असल में "लापता व्यक्ति" के रिकॉर्ड थे। सिस्टम जानता है कि इस सड़क से गुजरने वाला हर व्यक्ति जल्द ही मोई नदी के उस पार गायब हो जाएगा। अगर एक दिन आपकी तलाश शुरू हुई, तो वे कहेंगे: "देखो, वह इस ड्राइवर के साथ इस चौकी से गुजरा था।" वे ड्राइवर को ढूंढकर सजा देंगे, लेकिन आपको... उस नरक से कोई वापस नहीं लाएगा।
सिस्टम केवल यह रिकॉर्ड करता है कि आप "पास" हो गए, लेकिन किसी को परवाह नहीं है कि आप कहाँ और किस अंधेरे में गए। सच्ची सुरक्षा होनी चाहिए...

थाईलैंड: गुलामी की राह

सीमा पर—मोई नदी के किनारे—चौकियाँ स्थापित की गई थीं, लेकिन ये चौकियाँ प्रवेश द्वार पर थीं। ऐसा लग रहा था मानो पीड़ित को तभी जाल में प्रवेश करने दिया जा रहा था जब उसका पंजीकरण पूरा हो चुका हो।

* * *

अंतिम चेकपॉइंट को पीछे छोड़ते ही, दूर से शहर की जगमगाती रोशनी दिखाई देने लगी। इमारतों और जगमगाते स्ट्रीट लैंपों को देखकर मैंने राहत की गहरी सांस ली:
“भगवान का शुक्र है… आखिरकार हम यहाँ पहुँच गए। तो, वो सारी जाँचें बस इस देश के अजीब नियम थे। सब ठीक है, इफ्तिखार, डरो मत,” मैंने खुद को दिलासा दिया।
भोर हो रही थी। मैंने सोचा कि सूरज की पहली किरण के साथ सब कुछ साफ और ठीक हो जाएगा। लेकिन कड़वा सच बिल्कुल अलग था: वह भोर मेरी आजादी का अंत और मेरी कैद का पहला दिन था।

* * *

आखिरकार, हम एक इमारत के सामने रुके। अभी भी अंधेरा था, लेकिन शहर की दुकानें, बाजार और एटीएम की कतार देखकर मुझे पल भर के लिए राहत मिली। "देखो, सब कुछ सामान्य है; मैं भी बाकी लोगों की तरह ही एक शहर में हूँ," मैंने खुद को दिलासा दिया।
मैंने अपना सामान लिया और हम इमारत में दाखिल हुए। यह एक सस्ते होटल जैसा लग रहा था। टाइल वाले फर्श पर लेटा एक अजनबी हमें देखकर भी टस से मस नहीं हुआ। ड्राइवर ने जब उसे कठोर स्वर में कुछ कहा, तो वह धीरे-धीरे उठा और चाबी सौंप दी। हम चौथी मंजिल पर चढ़ गए। ड्राइवर ने मुझे कमरे में लिटाया और अपने फोन पर आखिरी संदेश दिखाया: "आराम करो।"

म्यांमार से पलायन

यहां। वे सुबह आपको लेने आएंगे। मेरा काम यहीं खत्म होता है।” वह चला गया। मैं अकेली रह गई। मैंने यांग को मैसेज करके बताया कि मैं पहुंच गई हूं। उसने हमेशा की तरह ईमानदारी का दिखावा करते हुए जवाब दिया: “देखा? डरने की कोई बात नहीं थी। कल मेरा ड्राइवर आपको यहां ले आएगा।”
मुझे आराम करने दो।
इस संदेश ने मुझे पूरी तरह से शांत कर दिया। मैं नीचे बाजार से पानी खरीदने भी गया। सड़क पर जीवन की सामान्य लय देखकर मैं मन ही मन मुस्कुराया: "यहाँ मेरा क्या बिगाड़ सकता है? यह एक सामान्य शहर है।" मैं कमरे में वापस गया और लेट गया। गहरी नींद मेरी आँखों को बंद करने लगी। उस पल मुझे एहसास नहीं हुआ कि ये मेरी आज़ादी के आखिरी पल थे। मुझे एहसास नहीं हुआ कि अनजाने में ही मैं उस अपूरणीय दलदल—उस नरक—की ओर अपना आखिरी कदम बढ़ा चुका था। सुबह होगी, लेकिन वह सूरज मेरे लिए नहीं उगेगा; वह उस कैद के लिए उगेगा जो मेरा इंतज़ार कर रही थी।

* * *

मैं नींद के गहरे अंधेरे में डूबा हुआ था कि अचानक धक्कों की आवाज से दरवाजा हिल गया। दरवाजा खुल गया और काले कपड़े पहने एक दुबला-पतला थाई आदमी, जिसकी निगाहों में निर्ममता झलक रही थी, अंदर आ गया। उसने कठोर और निर्मम आवाज में चिल्लाकर कहा: “उठो! तैयार हो जाओ, हम जा रहे हैं!”
उसकी आवाज़ की कर्कशता ने मुझे चौंका दिया। वही पुरानी चिंता फिर से जाग उठी: “वह मेरे साथ ऐसा व्यवहार क्यों कर रहा है? वह इतना आक्रामक क्यों है?” लेकिन पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। मैंने अपना सामान उठाया और उसके पीछे चल दी।
इमारत के सामने एक सफेद पिकअप ट्रक हमारा इंतजार कर रहा था। ट्रक का पिछला हिस्सा सामान से पूरी तरह भरा हुआ था। अंदर देखने पर मैंने देखा कि आगे की सीट पर एक लड़की और दो युवा बैठे थे।

थाईलैंड: गुलामी की राह

पीछे की सीट पर कुछ आदमी थे। काले कपड़े पहने उस आदमी ने मेरा सामान भी पीछे रख दिया और मुझे अंदर आने का इशारा किया। मेरे पास अंदर जाने के अलावा कोई चारा नहीं था। उसी क्षण, मैंने खुद को शांत करने के लिए एक नया परिदृश्य गढ़ा: "बस यही है... मैं अपने कार्यस्थल जा रही हूँ। और मैं अकेली नहीं हूँ; मेरे साथ और भी लोग हैं। इसलिए, यह सुरक्षित है।"
ट्रक चल पड़ा। मेरे बगल में खड़े दो लड़कों को चीनी भाषा बोलते सुनकर मैं उनकी ओर मुड़ा: “क्या तुम भी काम के लिए आए हो?” उन्होंने जवाब दिया, “हाँ, काम के लिए। और तुम?” मैंने कहा, “मैं भी…”
जब उन्होंने मेरा जवाब सुना, तो वे आपस में कुछ फुसफुसाए और अजीब तरह से हंसने लगे। आगे बैठी लड़की ड्राइवर से थाई भाषा में बात कर रही थी और बेढंगी हंसी हंस रही थी। मैंने चारों ओर देखा: सब खुश थे, सब बातें कर रहे थे। मेरे दिमाग ने फिर से वही जीवनरक्षक झूठ फुसफुसाया: "यहां कुछ भी बुरा नहीं हो सकता... देखो, सब ठीक है।"
मुझे नहीं पता था कि वह सफेद पिकअप ट्रक हमें नौकरी पर नहीं, बल्कि एक ऐसे नरक की ओर ले जा रहा था जहाँ हर किसी को एक अलग भूमिका निभानी थी।

* * *

जैसे-जैसे सड़क आगे बढ़ती गई, हमारे पीछे शहर धुंधली छाया में तब्दील होता गया। पहले घर कम होते गए, और फिर पूरी तरह गायब हो गए। डामर की सड़क— सभ्यता का आखिरी निशान—मिट्टी, घने पेड़ों और क्षितिज तक फैले गन्ने के खेतों में तब्दील हो गई।
अचानक ट्रक रुक गया। धूल के गुबार में से एक और पिकअप ट्रक—यह भूरे रंग का था—हमारी ओर बढ़ा। हमारा ड्राइवर बाहर निकला और नए आने वाले व्यक्ति का अभिवादन किया। पहली नज़र में ही वह आदमी खौफनाक लग रहा था: लगभग पचास वर्ष का, भारी-भरकम शरीर वाला, सोने की मोटी चेन पहने हुए।

म्यांमार से पलायन

उसकी कलाई और गर्दन पर झिलमिलाहट थी। उसकी कमीज़ पेट तक खुली हुई थी, और उसके हर कदम से एक संशयपूर्ण क्रूरता झलक रही थी। उसके चेहरे पर एक ऐसे व्यक्ति का भाव था जिसने सब कुछ देख लिया था लेकिन किसी पर दया नहीं करता था।
बिना कुछ कहे, हमें ट्रक से बाहर निकाल दिया गया। हमारा सामान जल्दी से एक भूरे रंग के पिकअप ट्रक में डाल दिया गया। हमें यहाँ लाने वाला सफेद ट्रक पीछे मुड़े बिना धूल में गायब हो गया। ऐसा लगा मानो मेरी आखिरी उम्मीद भी उस वाहन के साथ शहर में लौट गई हो।
हम फिर चल पड़े। लेकिन इस बार कोई सड़क नहीं थी; धूसर रंग की पिकअप हमें जंगल के भीतर, नम मिट्टी की गंध की ओर ले जा रही थी। हर पल, मैं महसूस कर सकता था कि हम शहर और आज़ादी से और दूर होते जा रहे हैं, क्योंकि जंगल का अंधेरा धीरे-धीरे हमें पूरी तरह निगल रहा था।

रास्ते के अंत में, हम जंगल के बीचोंबीच एक सुनसान लकड़ी की झोपड़ी के सामने रुक गए। ऐसा लगा मानो दुनिया यहीं खत्म हो गई हो।

थाईलैंड: गुलामी की राह

ठीक इसी जगह पर। हमारे चारों ओर केवल ऊँचे-ऊँचे पेड़, एक छोटी झील और चरते हुए जानवर थे। चीनी युवक अभी भी हँस रहे थे मानो उन्हें स्थिति की गंभीरता का एहसास ही न हो, तभी अचानक ड्राइवर ने उन पर इतनी घृणा से चीख मारी कि ऐसा लगा जैसे वह किसी भी क्षण उन पर हमला कर देगा। हमारे बगल में बैठी थाई लड़की ने डर के मारे फुसफुसाते हुए कहा: “वह कह रहा है चुप रहो! शांत रहो!”
उसी क्षण, मेरे भीतर का ठंडा संदेह सीसे की तरह भारी हो गया। “अगर हम काम करने की जगह जा रहे हैं, तो यह क्रूरता क्यों? वे हमारे साथ जानवरों जैसा व्यवहार क्यों कर रहे हैं? और सबसे महत्वपूर्ण बात… हम इस सुनसान झोपड़ी में क्या कर रहे हैं?” डर ने मेरे पूरे शरीर को जकड़ लिया था। ड्राइवर ने हमारा सामान अनाज की बोरियों की तरह ज़मीन पर फेंक दिया और गुस्से में एक छोटा सा आदेश दिया: "यहीं रुको। मैं थोड़ी देर में वापस आता हूँ।"
हम झोपड़ी के सामने पुरानी लकड़ी की कुर्सियों पर असहाय बैठे रहे। कुछ ही क्षणों में, दरवाजा खुला और तीन बच्चों के साथ एक महिला बाहर निकली। सबसे छोटा बच्चा लगभग तीन या चार साल का था, सबसे बड़ा बारह साल का... इस घने जंगल में, बच्चे जिज्ञासा और एक अजीब सी खामोशी से हमारी ओर देख रहे थे, मानो पहली बार इंसानों को देख रहे हों। महिला खुली आग पर खाना बना रही थी जबकि बच्चे हमारे चारों ओर दौड़ रहे थे। मुझे एहसास हुआ कि यह ड्राइवर का घर था, और ये मासूम बच्चे उसका परिवार थे।
जंगल के बीचोंबीच, दुनिया से दूर, पल रहे उन बच्चों की आँखों में बसी उस मासूम जिज्ञासा को देखकर मेरा दिल दुख से भर गया। उन्हें इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि उनके पिता जिन लोगों को इस झोपड़ी में लाए थे, उन्हें नरक में बेचा जाने वाला था, या उनकी आज़ादी कैसे छीनी जा रही थी...
सबसे छोटे बच्चे ने मुझे पानी का गिलास दिया। हमारी नज़रें मिलीं। मैंने उसे देखकर मुस्कुराया और कांपते हाथों से उसके सिर पर हाथ फेरा।
वह कितना प्यारा और मासूम बच्चा था।

म्यांमार से पलायन

* * *

झोपड़ी के सामने इंतज़ार में बिताया हर मिनट मेरी आत्मा को और भी जकड़ रहा था। मैंने यांग को संदेशों की झड़ी लगा दी; मैंने शिष्टाचार को दरकिनार कर सीधे-सीधे बोलना शुरू कर दिया। “यहाँ कुछ भी सामान्य नहीं है! जंगल के बीचोंबीच कोई कंपनी या दफ्तर कैसे हो सकता है!” मैंने विद्रोह किया। मैंने व्यंग्यपूर्वक यह भी कहा, “क्या मैं यहाँ गन्ने की कटाई करने आया हूँ?”
यांग ने अपने हमेशा की तरह शांत और संयमित अंदाज में जवाब दिया: "यह तो बस रास्ता है। पहुँचने पर आपको सब कुछ दिख जाएगा।"
उसी क्षण, मुझे अपने बगल में बैठे चीनी युवकों में से एक की छुपकर मेरे फोन पर नज़र महसूस हुई। मेरा संदेश पढ़ने के बाद, उसने अपने साथी को मेरी ओर इशारा किया। उसके होठों के कोने पर एक कड़वी, लगभग उपहास भरी मुस्कान थी। मानो वह कह रहा हो, "यह तो डरपोक है... इसे अभी भी कुछ समझ नहीं आया है।" खुद को संभाल न पाने के कारण, मैंने उसकी ओर मुड़कर कहा: “क्या आपको लगता है कि मैं पागल हूँ? यह जगह, यह सड़क, उस आदमी की क्रूरता… क्या इन सब बातों का आपके लिए कोई मतलब नहीं है? क्या मैं ही अकेली हूँ जो चिंतित हूँ?”
एक युवक ने बेपरवाही से कंधे उचकाते हुए कहा: “देखो, उन गन्ने के खेतों के पीछे एक शहर है। काम करने की जगह वहीं है। मैं दो साल पहले यहाँ काम करने आया था, फिर वापस चला गया। डरने की कोई बात नहीं है।”
उस पल मेरे मन में बस एक ही ख्याल आया: भाग जाना। सब कुछ छोड़कर वापस लौट जाना। मेरे भीतर की आवाज़ असहनीय चीख रही थी: “रुको! मत जाओ!” लेकिन उस चीनी युवक के शब्दों ने मेरे मन को फिर से उलझा दिया। मैं इतनी दूर आ चुका था; अगर मैं वापस लौटता, तो न तो मेरे पास आर्थिक साधन थे और न ही मेरा स्वाभिमान इसकी इजाज़त देता। “शायद मैं ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया कर रहा हूँ?” मैंने खुद को दिलासा देना शुरू कर दिया।
मैंने यांग को वह अंतिम, भाग्य-निर्धारक संदेश लिखा: "मैं आ रहा हूँ। कोई समस्या नहीं है।"

थाईलैंड: गुलामी की राह

उन चार शब्दों से मैंने अपनी स्वतंत्रता पर विराम लगा दिया। चुपचाप, बिना सोचे-समझे, मैं उस नरक के रास्ते पर चल पड़ा जहाँ से वापसी असंभव थी। संदेह समाप्त हो गया था; उसकी जगह एक अटल भाग्य के सामने पूर्ण समर्पण ने ले लिया था।

* * *

लगभग आधा घंटा बीत चुका था कि धूल के गुबार में से चालक फिर प्रकट हुआ। इस बार वह एक काले रंग के पिकअप ट्रक के साथ था। फिर से, कोई स्पष्टीकरण नहीं, एक शब्द भी नहीं... बस एक ठंडे इशारे से, हमें उस वाहन में धकेल दिया गया। कच्ची सड़कें दूर-दूर तक फैली हुई थीं, मानो सभ्यता के अंतिम निशान भी मिटा रही हों। गन्ने के खेत इतने ऊँचे थे कि वे हमें पूरी तरह से निगल गए। अब तो सड़क भी नहीं थी; हम बस गन्ने के खेतों से होकर गुजरने वाले संकरे, ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर अंधकार में और गहरे उतरते जा रहे थे।
अचानक, आगे एक काली परछाई दिखाई दी। जैसे ही हम करीब पहुँचे, मैंने एक थाई व्यक्ति को देखा जिसकी कमर पर कपड़ा बंधा हुआ था और वह बिना कमीज़ के था। उसके सिर पर रखी भूसे की टोपी धूप से काली पड़ गई थी, और ऐसा लग रहा था मानो वह धरती में समा गया हो। उसकी त्वचा घोर काली थी—सूरज, कड़ी मेहनत और घोर गरीबी का रंग। वह गन्ने के खेतों का गुलाम था। जब हम उसके पास पहुँचे, तो मैंने उसके आसपास तीन और आदमियों को देखा। वे सभी बिल्कुल एक जैसे दिख रहे थे।
ट्रक अचानक रुक गया। इंजन बंद होते ही चारों ओर सन्नाटा छा गया। बिना कुछ कहे ड्राइवर ने दरवाजा खोला और हमें बाहर निकाल दिया। उस घने जंगल के बीचोंबीच, उन काले रंग के आदमियों की निगाहों के सामने, हम अपने सामान के साथ अकेले रह गए।
अब तक, "कार्यस्थल" होने के सारे सपने इन धूल भरे गन्ने के डंठलों के बीच गायब हो चुके थे। हमारे सामने का दृश्य चीख रहा था

म्यांमार से पलायन

एक ने मुझसे कहा: "यहां प्रवेश द्वार तो है, लेकिन निकास द्वार नहीं है।"

वे तीनों आदमी पास आए, हमारा सामान अपने कंधों पर ऐसे लादा जैसे वो उनकी अपनी संपत्ति हो, और हमें अपने पीछे आने का इशारा किया। जैसे- जैसे हम अपने सिर से भी ऊँचे गन्ने के खेतों से गुज़रते गए, मेरे अंदर का डर हर कदम के साथ बढ़ता गया। अब कोई सड़क नहीं थी—सिर्फ़ एक

संकरा रास्ता था जो अँधेरे और एक भारी, घुटन भरी खामोशी में खुलता जा रहा था।

थाईलैंड: गुलामी की राह

हर कदम के साथ, मुझे अपनी आशंकाएं हकीकत में बदलती हुई महसूस हो रही थीं, मानो मेरी आत्मा के हर कण में ये बात समा रही हो। दम घोंटने वाली गर्मी से मेरी सांसें रुक रही थीं और पसीना मेरे चेहरे से बह रहा था। मेरे फेफड़े जल रहे थे, लेकिन ये शारीरिक दर्द मेरे अंदर की घुटन भरी अनिश्चितता के आगे कुछ भी नहीं था। वो गहरी आवाज़ अब मेरे कानों में चीख रही थी: “ये रास्ता कहीं भी अच्छा नहीं जाता!”
गन्ने का खेत अचानक समाप्त हो गया, और एक विचित्र, टेढ़ा-मेढ़ा पेड़ हमारे सामने काँटे की तरह प्रकट हुआ। ऐसा लग रहा था मानो वह पेड़ यहाँ वर्षों से घटित सभी भयावह घटनाओं का मूक गवाह रहा हो। पेड़ के नीचे से एक खड़ी ढलान नीचे उतरती थी। और वहाँ तल पर, वह दिखाई दिया: मोई नदी, दो सौ मीटर चौड़ी, अपने मटमैले पानी और प्रचंड धारा के साथ... कोई नहीं जानता था कि उस जल के उस पार जीवन या मृत्यु प्रतीक्षा कर रही थी।
हमारा सामान ले जा रहे लोग ढलान से नीचे उतरे और किनारे पर खड़ी एक छोटी नाव में हमारे बैग रख दिए। फिर, हमारी ओर देखे बिना ही, उन्होंने ठंडे और निर्मम इशारे से कहा: "नाव में बैठ जाओ।"

म्यांमार से पलायन

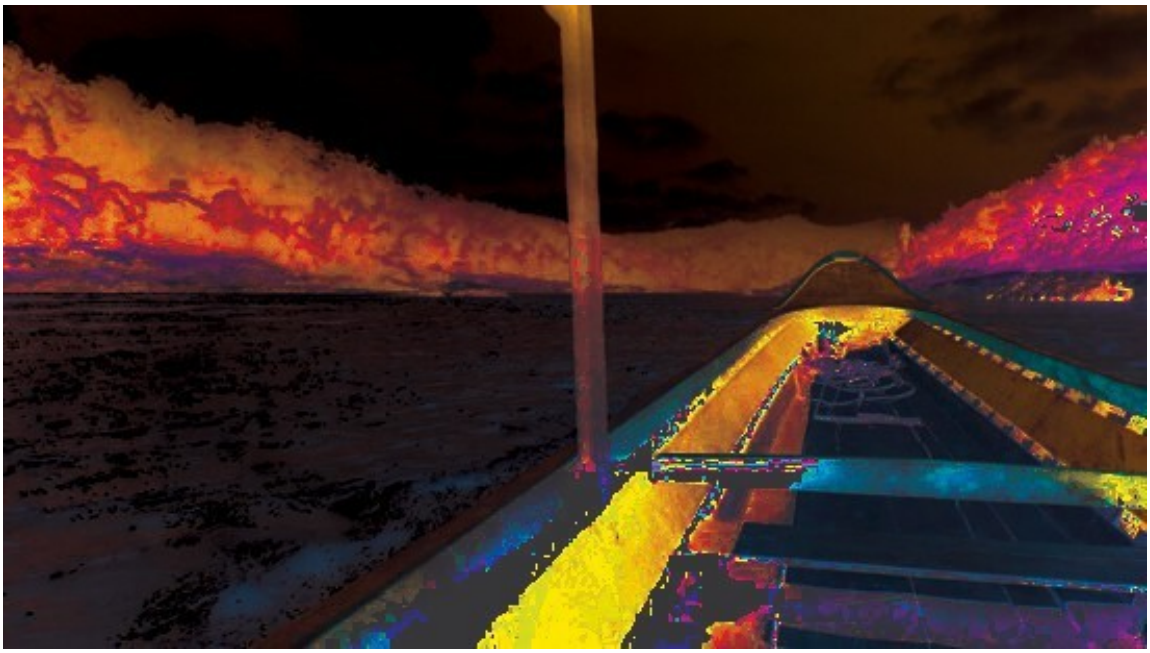

उस पल मुझे एहसास नहीं हुआ कि नदी के इस किनारे पर मेरे पास अभी भी एक मौका था। एक कोशिश, एक बचाव, शायद बस एक कदम ही मुझे आज़ादी में रख सकता था। लेकिन मैं उस गर्म लकड़ी के तख्ते पर बैठ गया। नाव आगे बढ़ी और पानी की छप-छप की आवाज़ मेरी आज़ादी की आखिरी गूंज बन गई।
जैसे ही मेरा पैर दूसरे किनारे पर पड़ा, ऐसा लगा मानो मुझे धरती से खींचकर किसी दूसरी ही तरह के अंधेरे में धकेल दिया गया हो। मैंने अपनी आज़ादी और अपनी ज़िंदगी उस किनारे पर ही छोड़ दी और अनजाने में ही उस दलदल—उस नरक—में कदम रख दिया, जहाँ से वापस लौटना नामुमकिन था। चुपचाप, अनजाने में ही… मैं अपने भाग्य की ओर बहता चला गया। लेखक का नोट
जिस जगह वे मुझे ले गए, वह थाईलैंड के टाक प्रांत में
स्थित माई सोट शहर था। म्यांमार में हमें ले जाने वाली
जलधारा कुख्यात मोई नदी थी (म्यांमार की तरफ इसे थाउंगयिन
नदी के नाम से जाना जाता है)। यह भौगोलिक क्षेत्र एक गुप्त पारगमन बिंदु के रूप में कार्य करता है, जहाँ हजारों लोग, लुभावने वादे के कारण,

□□□□□□□□: □□□□□□□ □□ □□□

“□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□” □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□, □□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□

म्यांमार से पलायन

MYANMAR
LAOS
Mae Sot
Myawaddy
THAILAND
CAMBODIA

थाईलैंड: गुलामी की राह

मोई नदी
सीमा असुरक्षित क्यों है?
स्वाभाविक रूप से एक सवाल उठता है: यह सीमा इतनी असुरक्षित क्यों है? क्या कोई भी अपनी मर्जी से इसे पार कर
सकता है? इसका जवाब है हां, और इसके कई महत्वपूर्ण कारण
हैं:
1. भौगोलिक जटिलता: थाईलैंड-म्यांमार सीमा 600 किलोमीटर से अधिक लंबी है, जिसका अधिकांश भाग घने जंगलों, ऊबड़-खाबड़ पहाड़ों और घुमावदार नदियों से बना है। इस विशाल भूभाग के प्रत्येक बिंदु पर सैनिकों को तैनात करना भौतिक रूप से असंभव है।
2. पारंपरिक नदी पार करना: पीढ़ियों से, स्थानीय लोग दैनिक व्यापार और सामुदायिक संबंधों के लिए नाव से नदी पार करते रहे हैं। अधिकारियों के लिए, इस गहरे संबंध को पूरी तरह से रोकना

म्यांमार से पलायन

गहरी जड़ें जमा चुकी परंपरा एक बहुत बड़ी चुनौती है।
3. अवैध हित: अवैध रूप से सीमा पार करने का धंधा बेहद लाभदायक है। इन क्षेत्रों में तस्कर, मानव तस्करी गिरोह और सशस्त्र करेन विद्रोही समूह नदी के रास्तों पर नियंत्रण रखते हैं। वे अक्सर सीमा पार करने के इच्छुक लोगों से शुल्क वसूलते हैं, जिससे आधिकारिक सीमा चौकियों के बावजूद नदी एक अराजक प्रवेश द्वार बन जाती है।
4. म्यांमार में राज्य की अस्थिरता: म्यांमार की स्थिति अत्यंत कमजोर है। चल रहे गृहयुद्ध, विभिन्न सशस्त्र गुटों की उपस्थिति और केंद्रीकृत राज्य नियंत्रण के अभाव के कारण, सत्ता का पूर्ण रूप से अभाव है। सीमा का यह भाग अनिवार्यतः एक "निर्जन क्षेत्र" है।
5. चयनात्मक प्रवर्तन: थाईलैंड मुख्य रूप से अपने संसाधनों को प्रमुख आधिकारिक पारगमन बिंदुओं पर केंद्रित करता है। उदाहरण के लिए, माई सोट-म्यावाड्डी मैत्री पुल कड़ी निगरानी में है, लेकिन इसके आगे फैले कई किलोमीटर लंबे नदी तट को रणनीतिक प्राथमिकता नहीं माना जाता है।

नदी का दूसरा किनारा: म्यांमार
हम चारों चुपचाप नदी की धुंधली धारा को पार कर रहे थे। मेरा मन
अभी भी मुझे धोखा देने की कोशिश कर रहा था; मैंने यह मानने की
कोशिश की कि हम अभी भी थाईलैंड में हैं, बस
दूसरी तरफ के किनारे पर पहुँचते हुए। गर्मी और उमस ने हमें पूरी तरह थका दिया था। आखिरकार, नाव दूर किनारे पर आकर रुकी। वहाँ तीन और आदमी हमारा इंतज़ार कर रहे थे। उन्होंने हमारा सामान ऐसे उठाया जैसे वह कोई वस्तु हो और घने जंगल की ओर चल दिए। कुछ ही देर बाद, एक और भूरे रंग का पिकअप ट्रक हमारे सामने खड़ा था। लेकिन यह ड्राइवर बाकियों से अलग था—उसने फौजी वर्दी पहनी हुई थी। अपने गठीले शरीर और भावहीन चेहरे के साथ, वह किसी आम आदमी से ज़्यादा युद्ध के लिए तैयार सैनिक जैसा लग रहा था। ड्राइवर।
हम मेहंदी के रंग की, कीचड़ से सनी कच्ची सड़क पर चलने लगे। ट्रक के हिलने-डुलने के साथ-साथ मेरी बेचैनी भी बढ़ती जा रही थी। ड्राइवर बगल में बैठी थाई लड़की से ज़बरदस्ती छेड़छाड़ करने लगा। वह ज़ोर-ज़ोर से हंस रहा था, उसे चिढ़ा रहा था और यहाँ तक कि अश्लील इशारे भी कर रहा था, उसकी जांघ को छू रहा था। लड़की के चेहरे पर ज़रा भी सच्चाई नहीं थी; वह डर और दबाव से भरी झूठी मुस्कान के साथ इस क्रूरता को सह रही थी।
उस पल मुझे एहसास हुआ कि हम ऐसी जगह पर हैं जहाँ न पुलिस, न कानून हमारी मदद कर सकता है। ये मेहंदी के रंग वाली सड़कें हमें किसी "नौकरी" की ओर नहीं, बल्कि एक ऐसे नरक के केंद्र की ओर ले जा रही थीं जहाँ

म्यांमार से पलायन

मानवीय गरिमा का हनन हो रहा है।

* * *

कुछ देर बाद, हम जंगल के बीचोंबीच एक छोटी, सुनसान झोपड़ी के पास रुके। बिना कुछ बताए, उन्होंने हमें पत्थरों पर बैठने और इंतज़ार करने का आदेश दिया। सन्नाटा गहरा था, लेकिन जल्द ही, पास आते एक इंजन की आवाज़ ने उस सन्नाटे को तोड़ दिया और हमारे रोंगटे खड़े कर दिए।
जो पिकअप ट्रक आकर रुका, वह पहले वाले ट्रकों से बिल्कुल अलग था।
यह वाहन साक्षात आतंक का प्रतीक था। पिकअप के पीछे दो सैनिक खड़े थे। उन्होंने गोल आकार की मिलिट्री टोपी और काले चश्मे पहन रखे थे, और काले स्कार्फ से उनके चेहरे नाक तक ढके हुए थे। उनमें एक भी मानवीय भाव नहीं झलक रहा था; ऐसा लग रहा था मानो हमारे सामने खड़े ये लोग जीवित मनुष्य नहीं, बल्कि ठंडी परछाइयाँ हों, जो उनके हाथों में पकड़ी हुई असॉल्ट राइफलों का ही विस्तार मात्र हों।

□□□ □□ □□□□□ □□□□□□: □□□□□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□: □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□; □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□

□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□: □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□, □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ "□□□□□ □□□□□□□□□□□□" □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□; □□ □□ □□□□□□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

म्यांमार से पलायन

सशस्त्र सैनिकों की निगरानी में, हम पिकअप ट्रक में आगे बढ़े। मेरे अंदर का ज्वालामुखी आखिरकार फट पड़ा। मैंने अपने बगल में बैठे चीनी युवकों की ओर मुड़ा—वही जिन्होंने कुछ क्षण पहले मुझसे कहा था कि “सब ठीक हो जाएगा”—और चिल्लाकर कहा: “पागल मैं ही थी, है ना? तुम्हारा क्या? क्या तुमने नहीं कहा था कि तुम पहले भी यहाँ आ चुके हो? तुमने मुझसे झूठ क्यों बोला? तुम चुप क्यों हो?

नदी का दूसरा किनारा: म्यांमार

अब?!"
उनमें से कोई भी मेरी आँखों में आँखें नहीं मिला पा रहा था। वे जम से गए थे। काँपते हाथों से उन्होंने अपने फोन पकड़े हुए किसी को संदेश भेजने की कोशिश की, लेकिन उनके मुँह से बस एक भयानक वाक्य निकला: "सिग्नल नहीं..." मैंने तुरंत अपना फोन चेक किया। वाकई, नेटवर्क चला गया था। ऐसा लगा जैसे दुनिया से मुझे जोड़ने वाला आखिरी अदृश्य धागा उसी क्षण टूट गया हो। जब मैंने सड़क किनारे म्यांमार का झंडा लहराते देखा, तो मेरे सारे संदेह एक खूनी हकीकत में बदल गए। मलेशिया के ड्राइवर की चेतावनी, मेरे दिल की गहरी आवाज़... सब सही थे। मैं अब कर्मचारी नहीं था; मैं एक कैदी था। मुझे ठंडे पसीने आने लगे, मानो मेरे सिर पर बर्फ के पानी की बाल्टी उड़ेल दी गई हो। मेरा शरीर पत्थर बन गया। मेरा परिवार, मेरी मंगेतर, वो जीवन जिसे मैं पीछे छोड़ आया था—सब कुछ मेरी आँखों के सामने एक फिल्म स्ट्रिप की तरह कौंध गया। "इतनी व्यर्थ मौत मरना?"—यह विचार मेरे दिमाग में खटकने लगा।
पीछे खड़े सैनिकों की राइफलों को सूरज की रोशनी में चमकते हुए देखकर मैंने मन ही मन एक प्रतिज्ञा की: “अगर वे मुझे यातना देंगे, तो मैं या तो उनमें से एक हथियार छीनकर खुद को गोली मार लूँगा, या मैं भाग जाऊँगा ताकि वे मुझे मारने पर मजबूर हो जाएँ। लेकिन मैं वह पीड़ा सहन नहीं करूँगा।” लेकिन फिर, मैं रुक गया। मैंने गहरी साँस ली। “शांत रहो,” मैंने खुद से कहा। “हार मत मानो। पहले, स्थिति को समझो, खरीद लो।”
समय। अगर तुमने अपना आपा खो दिया, तो तुम अभी मर जाओगे।
मैंने अपने आस-पास के वातावरण का अवलोकन करना शुरू किया। दृश्य किसी डरावनी डॉक्यूमेंट्री के दृश्य जैसा लग रहा था: जंगल के बीचोंबीच बांस की झोपड़ियाँ, चेहरों पर सफेद रंग लगाए अजीबोगरीब लोग, हाथों में लंबी लाठियाँ लिए अधनंगे स्थानीय लोग हमें घूर रहे थे... हम सभ्यता से दूर भाग रहे थे, एक ऐसे शून्य की ओर तेज़ी से बढ़ रहे थे जहाँ समय ठहर सा गया था और बर्बरता का राज था।

म्यांमार से पलायन

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, दृश्य और भी भयावह होता गया। अब यह सिर्फ हमारी गाड़ी तक सीमित नहीं था; मैंने आसपास की बस्तियों में हर जगह सशस्त्र पिकअप गाड़ियों को गश्त करते देखा। एक नहीं, दो नहीं... ये सैन्य वाहन, हर मोड़ पर दिखाई दे रहे थे, मानो मौत की एक श्रृंखला बना रहे हों।
उस पल, भागने का ख्याल बिजली की तरह मेरे दिमाग में कौंधा, लेकिन उतनी ही जल्दी बुझ भी गया। मैंने खुद से पूछा, "अगर मैं कूदकर भाग जाऊं तो क्या होगा?" जवाब डरावना था। इन जंगली गांवों में, एक नज़र में ही पता चल जाता था कि मैं एक अजनबी हूं। चारों ओर हथियारबंद लोगों से भरी इस नरक जैसी जगह में, मेरी हर हरकत पर नज़र रखी जा रही थी। मुझे एहसास हुआ कि अगर मैंने दरवाज़ा खोलकर खुद को बाहर फेंक दिया, तो वे मुझे जंगल तक पहुंचने से पहले ही, बिना एक पल भी सोचे, सड़क किनारे ही मार डालेंगे।

[illegible]

नदी का दूसरा किनारा: म्यांमार

पहुँच से बाहर।

मुझे पता था कि म्यांमार में गृहयुद्ध पूरी क्रूरता से चल रहा था। सशस्त्र गुट सत्ता और क्षेत्र के लिए एक-दूसरे को खत्म कर रहे थे; हर क्षेत्र में अपना एक घातक खतरा था। उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि हमारे बगल में तैनात सशस्त्र सैनिकों की मौजूदगी सिर्फ हमें भागने से रोकने के लिए नहीं थी। वे हमें—एक मूल्यवान "संपत्ति" की तरह—अन्य प्रतिद्वंद्वी सशस्त्र समूहों के हमलों से भी बचा रहे थे।
हर पल एक भयानक खतरा था। हर मोड़ पर हम घात लगाकर हमला किए जा सकते थे, दो तरफा हमलों के बीच फंस सकते थे और वहीं मारे जा सकते थे। इन इलाकों में "जीने" की अवधारणा का कोई अस्तित्व ही नहीं था; केवल एक ही लक्ष्य बचा था: जीवित रहना।
फिर भी, मेरे डर के भीतर, आशा की एक टिमटिमाती किरण बाकी थी जो बुझने से इनकार कर रही थी। मैंने अपनी निगाहें सड़क पर टिकाए रखीं।

मैंने उस मेहंदी जैसे रंग के रास्ते के हर पेड़, हर झोपड़ी और हर मोड़ को अपनी स्मृति में अंकित कर लिया। क्योंकि मैं जानती थी कि अगर मुझे कभी मौका मिला तो...

म्यांमार से पलायन

भागने के लिए, मुझे नदी तक वापस जाने का रास्ता—आज़ादी का गुप्त मार्ग— पूरी तरह से याद होना ज़रूरी था। मेरा दिमाग़ अब कैदी की तरह सोचना बंद कर चुका था और एक भगोड़े की योजनाएँ बनाने लगा था।

* * *

आखिरकार, हम एक ठंडी और भयानक इमारत के सामने रुके। ड्राइवर और पीछे बैठे दो हथियारबंद सैनिक सधे हुए अंदाज़ में गाड़ी से बाहर निकले। उन्होंने हमें एक कड़ा इशारा किया; हम पिकअप ट्रक के बगल में कतार में खड़े हो गए। उन्होंने दोनों चीनी युवकों को बांहों से पकड़ा और जल्दी से अंदर ले गए। जब उन्हें ले जाया जा रहा था, तो उन्होंने मेरी तरफ देखा—मैं उन आँखों को कभी नहीं भूल पाऊंगा। उनकी आँखों में इतना खौफ था कि मानो वे खामोश गुहार लगा रहे हों: “कुछ करो, हमारी मदद करो!” लेकिन उस पल, हर कोई अपनी जान बचाने की कोशिश कर रहा था। इस नरक के बीचोंबीच, किसी के पास किसी दूसरे को बचाने की ताकत नहीं थी।
मैं और वह थाई लड़की बाहर ही खड़े रहे, उन हथियारबंद लोगों की निगाहों के नीचे। एक सैनिक मेरे पास आया। अपने चेहरे पर बंधी दुपट्टे के ऊपर से तिरछी आँखों से देखते हुए उसने तीखी आवाज़ में पूछा: "अंग्रेज़ी? अंग्रेज़ी?"
उसने मुझे अंग्रेज समझ लिया था। एक पल की झिझक के बाद, मैंने सिर हिलाया। मैंने सोचा कि शायद "पश्चिमी" या "महत्वपूर्ण विदेशी" समझे जाने से मुझे उनके क्रूर व्यवहार से थोड़ी बहुत सुरक्षा मिल जाएगी। इन देशों में, हर छोटी बात जीवन और मृत्यु के बीच की पतली रेखा थी। ड्राइवर वापस आया, और हमें वापस पिकअप ट्रक में धकेल दिया गया। ट्रक तेज़ी से चल पड़ा, लेकिन किसी को नहीं पता था कि हम कहाँ जा रहे हैं। कोई सिग्नल नहीं, कोई इंटरनेट नहीं... ऐसा कोई ज़रिया नहीं बचा था जहाँ से मैं यांग, अपने परिवार या दुनिया से संपर्क कर सकूँ। मेरे हाथ बंधे हुए थे; मैं एक अँधेरे कुएँ में गिर रहा था। उस पल, केवल चार शब्द।

नदी का दूसरा किनारा: म्यांमार

मेरे मन में ये बातें गूंज रही थीं: धैर्य। संयम। साहस। रणनीतिक कदम।
मुझे पता था कि एक भी गलत कदम, एक भी गलत शब्द, मेरी आखिरी सांस हो सकता है।

कैद में: पहला दिन

अंततः, हम अपने रास्ते के अंत तक पहुँच गए। यह वह स्थान था
जहाँ दुनिया का सारा अत्याचार, दबी हुई चीखें और मौन पीड़ा एक बिंदु पर संकुचित और ठोस हो गई थी। हाँ... यही नरक था। लेकिन परियों की कहानियों के अग्नि-और-गंधक वाले नरक जैसा नहीं; यह मनुष्यों द्वारा अन्य मनुष्यों के लिए बनाया गया सबसे निर्दयी, घुटन भरा नरक था, जिसमें उनके अपने
अपने नंगे हाथों से।
ज़रा कल्पना कीजिए… एक ही जगह पर, एक ही पल में दो बिल्कुल अलग-अलग दुनियाएँ मौजूद हों। मेरे दाहिनी ओर, बेपरवाह सैनिक और बॉस ऐसे खा-पी रहे हों मानो कुछ हुआ ही न हो, ताश के खेल के बीच उनकी हँसी गूँज रही हो… और मेरे बाईं ओर… बिजली के झटके खाकर तड़पते लोगों की दिल दहला देने वाली चीखें, जिनके हाथ-पैर बंधे हों। हवा में गूँजती वो सूखी, चटकने वाली आवाज़—वो थी लाठियों और डंडों से इंसानी मांस पर पड़ने वाली चोटों की आवाज़।
मैं अब महज दर्शक नहीं था; मैं एक जीता-जागता गवाह था, इस भयावहता का एक हिस्सा। वे दृश्य मेरी आँखों के सामने से गुज़रे और मेरी आत्मा की गहराइयों में एक अमिट दाग की तरह अंकित हो गए। उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि भले ही मैं शारीरिक रूप से यहाँ से ज़िंदा निकल जाऊँ, मेरी आत्मा उन दीवारों से कभी पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाएगी। मैंने जो देखा वह जीवन भर मेरे साथ रहेगा, और मैं जानता था: वे आवाज़ें, वे निगाहें, वह क्रूरता कभी नहीं मिटेंगी।

कैद में: पहला दिन

मेरी स्मृति से मिट गया।

* * *
* * *

पिकअप ट्रक रुका, लेकिन हमें अंदर ही इंतजार करना पड़ा। हवा इतनी भारी थी मानो सीसे की हो; हर सांस के साथ फेफड़ों में ऑक्सीजन नहीं, बल्कि जलती हुई आग भर रही थी। जल्द ही, कई और पिकअप ट्रक आए—हर एक में मेरे जैसे कैदी भरे हुए थे, ऐसी आत्माएं जो झूठ के जाल में फंसकर खाई में धकेल दी गई थीं।
उन्होंने हमें जबरदस्ती बाहर निकाला और कतार में खड़ा कर दिया। जब मैंने चारों ओर देखा, तो मेरे सामने का दृश्य मेरी निराशा को और भी गहरा कर गया। हम ऊँचे-ऊँचे पहाड़ों और एक घने, दम घोंटने वाले जंगल से घिरे हुए थे। पहाड़ियाँ अंतहीन रूप से फैली हुई थीं, मानो आसमान को एक घने, हरे कफ़न की तरह ढक रही हों। हमारे पैरों के नीचे की धरती गहरे, गहरे लाल रंग से रंगी हुई थी—खून के रंग की मिट्टी का सागर।
यहां सभ्यता या सामान्य जीवन का नामोनिशान नहीं था। यह जंगल के बीचोंबीच छिपा एक बंदी शिविर था, एक ऐसी जगह जिसे हर नक्शे से मिटा दिया गया था, जीवितों की दुनिया से पूरी तरह अलग-थलग। मेरे बाईं ओर, कंक्रीट की ऊंची दीवारें और वह बर्फीला लोहे का गेट, लुप्त होती स्वतंत्रता और इस भयानक जंगल के बीच अंतिम बाधा बनकर खड़े थे। यह एक ऐसी जगह थी जहां, अगर आप गेट से बच भी जाते, तो नुकीली चोटियों और घने जंगल में जीवित रहना किसी चमत्कार से कम नहीं होता। फिर भी, इस क्रूर, बर्बर प्रकृति के बीच, एक अथाह विरोधाभास मौजूद था: रेंज रोवर, फरारी और नवीनतम मर्सिडीज-बेंज उस लाल कीचड़ पर सरपट दौड़ रही थीं। ये आलीशान वाहन किसी दूसरे ग्रह से आई मशीनों की तरह लग रहे थे। बाद में ही मुझे एहसास हुआ कि यह एक गुप्त साम्राज्य था।

म्यांमार से पलायन

खून और आंसुओं की नींव पर निर्मित। ऊंचे दांव लगाने वाले जुआरी और बंधक लड़कियों के लिए आने वाले "ग्राहक" उस विलासिता का प्रतीक थे जिसने इस नरक को हवा दी।

* * *

गार्ड ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे लोहे के गेट की ओर धकेल दिया। दूसरी तरफ एक विशाल निर्माण स्थल हमारा इंतजार कर रहा था। यह किसी तैयार परिसर जैसा नहीं लग रहा था; बल्कि, ज़मीन बेतरतीब ढंग से ढेर की गई ईंटों, सीमेंट की बोरियों और बिखरे हुए निर्माण सामग्री का एक अव्यवस्थित ढेर थी।
जैसे ही मैंने उन लोहे के फाटकों से प्रवेश किया, एक भयावह अहसास मेरे मन में आया: यह कालकोठरी-शहर अभी भी फैल रहा था। हर जगह काम चल रहा था; नई इमारतें ज़मीन से उभर रही थीं। यह दृश्य हृदयविदारक था। इसका मतलब था कि वे और भी पीड़ितों को यहाँ फंसाने की योजना बना रहे थे—हर नई इमारत बस एक और पिंजरा थी जिसमें और जिंदगियों को कैद किया जाना था।
प्रवेश द्वार पर एक चेकपॉइंट था, जिसके दोनों ओर कई सशस्त्र गार्ड तैनात थे। उन्होंने मुझे निर्माण मलबे के ढेर के पास रोक दिया। “रुको!” वे चिल्लाए। कोई सिग्नल नहीं, कोई इंटरनेट नहीं… मैं हर किसी से और हर चीज़ से कट गया था। असहाय और फंसा हुआ, मैं वहीं खड़ा रहा, एक अज्ञात, भयावह भविष्य को अपनी ओर रेंगते हुए देखता रहा।

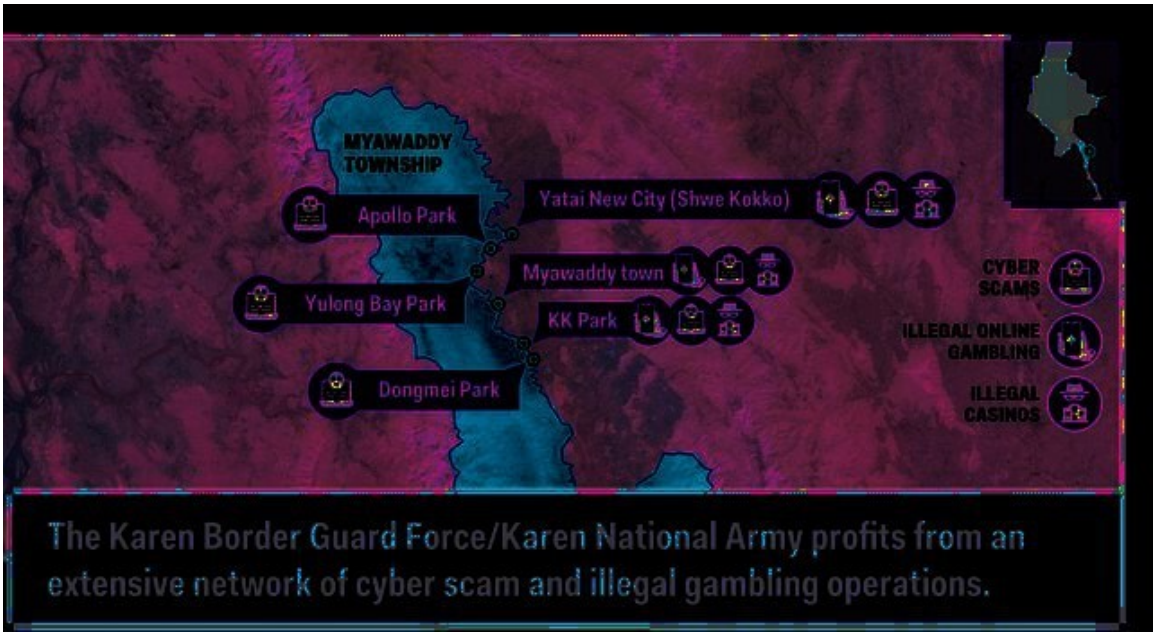

कैद में : पहला दिन

MYAWADDY TOWNSHIP
Apollo Park
Yatai New City (Shwe Kokko)
Myawaddy town
Yulong Bay Park
KK Park
Dongmei Park
CYBER SCAMS
ILLEGAL ONLINE GAMBLING
ILLEGAL CASINOS

The Karen Border Guard Force/Karen National Army profits from an extensive network of cyber scam and illegal gambling operations.

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]— [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

म्यांमार से पलायन

शिविर में। कुछ लोग आराम से लेटे थे, कुछ चुपचाप बातें कर रहे थे, जबकि कुछ लोग बेपरवाही से उन हरी पत्तियों को चबा रहे थे—क्रैटम या इसी तरह का कोई नशीला पदार्थ—जिसने उनके दिमाग को सुस्त कर दिया था। पास की इमारतों से आती यातना की चीखें उनके लिए महज़ पृष्ठभूमि संगीत थीं—बेजान, ठंडी और भयावह रूप से बेपरवाह।
यह परिसर जंगल के बीचोंबीच कैंसर की कोशिका की तरह फैलता जा रहा था। एक तरफ कीचड़ भरी सड़कें और निर्माण का मलबा बिखरा था; दूसरी तरफ इस अंधेरी दुनिया के "मालिकों" - काले कार्ड माफिया सरगनाओं - के लिए बने आलीशान विला खड़े थे। परिसर की सुरक्षा सिर्फ दीवारों से ही नहीं, बल्कि ऊंचे- ऊंचे चौकियों और कंटीले तारों के अभेद्य घेरे से भी की जा रही थी। ये तार दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करते थे: हमें मवेशियों की तरह अंदर रखते थे और बाहरी खतरों से ढाल का काम करते थे।
लेकिन सबसे दिल दहला देने वाला दृश्य था वह अवास्तविक विरोधाभास: गाड़ियाँ गाढ़ी, लाल मिट्टी में सरकती हुई, और उनसे निकलने वाले “अजीबोगरीब लोग”। कलाई पर सोने के कंगन, गले में भारी सोने की चेन और पूरे शरीर पर टैटू गुदे हुए पुरुष। वे सिर्फ डरावने ही नहीं थे; वे ऐसे प्राणी थे जिन्होंने अपनी मानवता इतनी खो दी थी कि वे किसी व्यक्ति को टुकड़े- टुकड़े करते हुए भी हँस सकते थे। ये “बॉस” बंधक महिलाओं का शोषण और बलात्कार करते थे। उनकी विकृत भूख तब और भी हिंसक हो जाती थी जब वे उन लड़कियों को देखते थे जो एशियाई नहीं दिखती थीं—जिनमें एपिकैंथिक फोल्ड नहीं था, जिनमें यूरोपीय विशेषताएं थीं। उनके लिए, यह विशिष्टता एक इंसान को शिकार करने योग्य जंगली ट्रॉफी बना देती थी।
उन आलीशान कारों से आती महंगी इत्र की खुशबू, कोनों में पीटे जा रहे लोगों के खून की धातु जैसी दुर्गंध के साथ घुलमिल गई। उनकी आत्मसंतुष्ट, घमंडी मुस्कान और दर्द भरी चीखों के बीच एक भयानक खाई थी।

कैद में: पहला दिन

पीड़ित… यह मेरे द्वारा देखा गया सबसे बड़ा अन्याय था। और मैं, अपने नाम पर एक भी पाप न होते हुए भी, उस खाई के ठीक बीच में फंसा हुआ था।

क्षेत्र पर नियंत्रण रखने वाले सैनिक।
दुखी और टूटा हुआ, मेरे सपने चकनाचूर हो गए और मेरी आशाएँ राख में तब्दील हो गईं, मैं उस लाल, खून से लथपथ धरती पर लगभग दो घंटे तक खड़ा रहा। समय मानो थम सा गया था, गतिहीन... मैं दुनिया से कटा हुआ एक आत्मा था, अंधकार के एक दूसरे आयाम में अकेला फंसा हुआ।
मेरे अंदर का असहनीय भय केवल "मृत्यु" का नहीं था। अगर मैं मर जाती, तो मेरे लिए सब कुछ समाप्त हो जाता। लेकिन मेरे परिवार के लिए... उनके लिए, पीड़ा कभी समाप्त नहीं होती। बिना किसी सुराग के, बिना यह जाने कि मैं कहाँ हूँ, वे जीवन भर दरवाजे की ओर देखते रहेंगे, हर दिन हर पल मेरा इंतजार करते रहेंगे। हर फोन कॉल पर उनके दिल की धड़कन तेज हो जाएगी; वे सोचेंगे कि

म्यांमार से पलायन

जब भी कोई द्वार पर दस्तक देता, तो मेरा यही हाल होता था। बिना किसी कारण के, बिना किसी वजह के, दुनिया से मिट जाना—मानो मेरा कभी अस्तित्व ही न रहा हो—यही डर मेरे भीतर तक मुझे जकड़े रखता था।
उस क्षण मुझे एहसास हुआ कि किसी व्यक्ति को मारने वाली चीज शरीर में लगने वाली गोली नहीं होती; बल्कि वह असीम निराशा होती है जो आत्मा को कुचल देती है और उन लोगों का भारी बोझ होता है जिन्हें आप पीछे छोड़ आए हैं, जो दूर से आपके कंधों पर पड़ता है।

* * *

मैं वहीं बैठा रहा… एक ही बिंदु को घूरता रहा। सारी आवाज़ें गायब हो गई थीं, मानो दुनिया की आवाज़ अचानक बंद हो गई हो। मुझे अपनी साँसों के सिवा कुछ सुनाई नहीं दे रहा था—भारी, गहरी और काँपती हुई साँसें। ऐसा लग रहा था जैसे मेरे गले में एक असहनीय गाँठ कस गई हो।
जैसे ही मैंने पास के पानी के स्रोत की ओर बढ़ते सैनिक की आँखों में देखा, मानो समय थम गया हो। सदमे से स्तब्ध होकर मैं उससे अपनी नज़रें नहीं हटा पा रही थी। मुझे अभी भी उसकी साँसों में शराब की तीखी गंध याद है, जब उसने अपनी बोतल एक तरफ फेंक दी और चीखते हुए मेरी ओर बढ़ा, मेरा सीना पकड़कर मुझे ज़ोर से हिलाने लगा। उसी पल, दूर से एक आवाज़ आई— “उसे मत छुओ!”—जैसे जीवन रेखा हो। यह यांग थी। जब सैनिक ने मुझे घृणा से धक्का दिया, तो मेरा पैर मेरे सामान में फँस गया और मैं पीछे गिर पड़ी। जैसे ही मेरी पीठ एक गर्म लोहे के खंभे से टकराई, बिजली के झटके जैसा दर्द मेरी रीढ़ की हड्डी से होते हुए मेरे दिमाग तक पहुँच गया। मेरी साँस रुक गई। मैं ज़मीन पर सिकुड़कर पड़ी रही, साँस लेने के लिए तड़पती रही, लेकिन साँस नहीं आ रही थी। मैं अपने सीने पर हाथ मारती रही, मानो बंद फेफड़ों में हवा भरने की बेताब कोशिश कर रही थी। मेरे चारों ओर चीखें, शराब की बदबू से लथपथ सैनिक और कीचड़ से सनी ज़मीन मुझे निगलने ही वाली थीं। ठीक उसी क्षण, मेरे सिर के ऊपर व्याप्त अफरा-तफरी के बीच से एक आवाज़ आई—एक ऐसी आवाज़ जिसने मुझे अपनी ओर खींच लिया।

कैद में: पहला दिन

मुझे उस आतंक से बाहर निकालो।
सहज ही मैंने अपना सिर उठाया। मेरी आँखों में अभी भी पानी भरा था, दृष्टि धुंधली थी। मैंने अपने सामने एक हाथ देखा—फैला हुआ, कमजोर लेकिन दृढ़ निश्चयी।
— “उठो…” आवाज ने कहा।
मैंने पलकें झपकाईं और अपनी नज़रें टिका दीं। खंभे को पकड़े हुए, मैंने अपनी ताकत जुटाई और खुद को पैरों पर खड़ा किया। उसने मेरी तरफ देखा और धीरे से फुसफुसाया: — “मैं हूँ, यांग।”
मैंने उसे पहली बार आमने-सामने देखा था। मेरे सामने एक लंबा, दुबला- पतला आदमी खड़ा था, मानो उसके शरीर से सारी ऊर्जा निकल चुकी हो। लेकिन उस पल, उसकी शारीरिक बनावट मायने नहीं रखती थी। उस पल, उसी क्षण... ऐसा लगा जैसे इस घने जंगल और इन हथियारबंद हत्यारों के बीच, मुझे मेरा अपना भाई, मेरी खोई हुई दुनिया मिल गई हो।
मेरे भीतर के सारे बंधन टूट गए। बिना सोचे समझे, मैंने हाथ बढ़ाया और पूरी ताकत से उसे गले लगा लिया। मैं उससे ऐसे लिपट गई मानो उसे छोड़ना मेरे लिए खाई में गिरने जैसा होगा। दिनों से जमा डर, तनाव और अनिश्चितता का बोझ अचानक टूट गया। मेरे गले में एक सिसकी अटक गई; मैं एक बच्चे की तरह जोर-जोर से रोना चाहती थी।
उसके कंधे से लगकर, मुझे ऐसा लगा जैसे सालों की थकान उतर गई हो। उस पल, मुझे एहसास हुआ कि एक इंसान किसी जाने-पहचाने चेहरे, किसी ऐसी आवाज़ के लिए कितना तरस सकता है जो कहे, "मैं यहाँ हूँ।" यांग अब सिर्फ़ यांग नहीं था; उस पल, वह स्वयं जीवन बन गया था।

* * *

उन्होंने मेरा सामान कार में रख दिया। यांग के साथ एक आदमी था, लेकिन वह एक परछाई की तरह था, शांत और रहस्यमय। पहले वे मुझे एक दफ्तर में ले गए।
यांग रुका, गंभीर भाव से मेरी ओर मुड़ा।

म्यांमार से पलायन

उसने हावभाव दिखाते हुए कहा, "यह पुलिस स्टेशन है। आपको पहले यहां से गुजरना होगा।"
एक पुलिस स्टेशन? नियम-कानून? इस नरक के बीचोंबीच, खून से लथपथ जंगल के भीतरी हिस्से में? मेरे भीतर एक कड़वी हंसी गूंज उठी—ऐसी हंसी जिसमें आत्मा अपने ही भाग्य का उपहास करती है। तब मुझे एहसास हुआ कि यहाँ पुलिस, कानून और न्याय महज़ एक नाटक था। उन्होंने इस दिखावटी राज्य का निर्माण केवल अपनी गंदगी को छुपाने के लिए किया था।
जैसे ही मैंने अंदर कदम रखा, उन्होंने मेरा सामान छीन लिया। जैसे कोई अपराधी के सामान की तलाशी लेता है, वैसे ही उन्होंने सब कुछ तहस-नहस कर दिया, मेरी जिंदगी उलट-पुलट कर दी। उन्होंने मेरा कंप्यूटर ज़ब्त कर लिया—दुनिया से मेरा एकमात्र संपर्क। उन्होंने बेरहमी से मेरा फोन छीना, सिम कार्ड निकाल लिया और उसे कूड़ेदान में फेंक दिया, मानो वे मेरे अतीत और मेरी पहचान को मिटा रहे हों। फिर, उन्होंने आगे और पीछे दोनों कैमरों को मोटी काली टेप से सील कर दिया। अब मैं दुनिया के लिए अंधा हो गया था, और दुनिया मेरे लिए अंधी हो जाएगी। उन्होंने मुझे एक ठंडी कुर्सी पर बिठा दिया। एक ऊंचे ओहदे वाली चीनी लड़की मेरे पास आई। उसकी आँखें खाली थीं, उसकी आवाज़ मशीनी थी: "तुम किसके निमंत्रण पर आए हो?" "यांग... यांग दरवाजे पर इंतज़ार कर रहा है," मैंने कांपती हुई आवाज़ को दबाने की कोशिश करते हुए कहा। "उसने तुम्हें क्या वादा किया? वेतन कितना है?" "दो हज़ार।"
डॉलर… मुझे अनुवादक बनना है,” मैंने जवाब दिया।
उसने मुझे एक कागज़ थमा दिया: “नियम और विनियम।” उसने मुझसे इसे पढ़ने और हस्ताक्षर करने को कहा। जैसे ही मैंने उस पर लिखी बातें पढ़ीं, मुझे यह बेहद हास्यास्पद लगा। कागज़ पर लिखा था: “लड़ाई मना है। भागना मना है। अगर कोई समस्या हो, तो तुरंत पुलिस को सूचना दें।” यह अविश्वसनीय था… जैसे बच्चे रेत के डिब्बे में “पुलिस-चोर” का खेल खेल रहे हों। लेकिन इस खेल के अंत में, खून असली था। बाहर, लोगों को पीटा जा रहा था, यातना के कारण वे खून की उल्टी कर रहे थे और चीख रहे थे; फिर भी यहाँ, वे मुझे यह समझाने की कोशिश कर रहे थे कि यह अराजकता “कानूनी” थी।

कैद में: पहला दिन

मेरे पास कोई विकल्प नहीं था। घोर हताशा में आकर मैंने उस फर्जी दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर कर दिए। मैंने अपना सामान उठाया और बाहर निकल गया। मैं अब सिर्फ एक इंसान नहीं था; मैं आधिकारिक तौर पर इस व्यवस्था का एक पंजीकृत हिस्सा बन चुका था।
यांग ने मुझसे कहा, “पहले हम अस्पताल चलते हैं। तुम्हारी जाँच होनी चाहिए। यह पता लगाने के लिए कि तुम्हें कोई संक्रामक या अंतर्निहित बीमारी तो नहीं है, तुम्हारी चिकित्सीय जाँच होगी।” मैंने बस सिर हिला दिया। “चलो चलते हैं” ही मेरे पास एकमात्र रास्ता बचा था।
अस्पताल पास ही था, परिसर के ठीक अंदर। हम अंदर गए... सब कुछ बहुत तेज़ी से हुआ। उन्होंने मेरी जाँच की, खून का सैंपल लिया और कई टेस्ट किए। तीस मिनट के अंदर सब कुछ हो गया। उन्होंने मुझे एक कागज़ थमा दिया: "सब ठीक है।"
मैं फिर से यांग के पीछे-पीछे बाहर गया। उसने कहा, “तुम्हें भूख लगी होगी। चलो मेरे दफ्तर चलते हैं, फिर खाना खाएंगे। तुम थोड़ी देर आराम कर लो।” मेरे पास मना करने का विकल्प नहीं था। मैंने सिर झुकाकर कहा, “ठीक है।”
लेकिन मेरे भीतर एक तीव्र पीड़ा थी… मैं अपने परिवार के बारे में सोच रही थी। अचानक, मैंने कहा: “यांग… मुझे अपने परिवार से संपर्क करना होगा। वे चिंतित हैं।”
यांग ने अपनी आँखें बंद कीं और गहरी साँस ली। “यहाँ इसकी अनुमति नहीं है। आप बाहर फ़ोन का इस्तेमाल नहीं कर सकते। काम शुरू होने के बाद, आपको अपने कमरे में रोज़ाना आने की अनुमति होगी। तब आप बात कर सकते हैं।”
इस बार मेरी आवाज़ तेज़ हो गई। “यांग, तुमने मुझे बताया था कि मैं अनुवादक हूँ, और यहाँ अनुवादक मिलना मुश्किल है। अगर तुम चाहते हो कि मैं ठीक से काम करूँ और तुम्हारे आदेशों का पालन करूँ, तो कम से कम मुझे अपने परिवार को यह बताने दो कि सब ठीक है।” उसने एक पल सोचा। फिर बोला: “देखो, यहाँ वीडियो बनाना, फ़ोटो लेना या फ़ोन करना मना है; इसका मतलब है तुरंत मौत। अगर तुम वादा करो कि तुम इन नियमों को नहीं तोड़ोगे, तो हम तुम्हारे लिए एक सिम कार्ड ले आएंगे।” “मैं वादा करती हूँ,” मैंने कहा।

□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□... □□□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□□, □□□□, □□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□□□□□□, □□□□□□... □□□□□□□□ □□□□, □□ □□

□□□□□□□□□ □□ □□□□□

□□ □□□□□□□ "□□□" □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ "□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□," □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□: "□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□... □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□"

□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□, "□□□ □□□ □□□" □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□

* * *

□□□□□□, □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□... □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□; □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□

CASINO
CASINO
领航娱乐

कैद में: पहला दिन

जैसे ही मैंने अंदर कदम रखा, मेरी नज़र अनगिनत जुए की मेज़ों पर पड़ी। और वहाँ, उन मेज़ों के शीर्ष पर, वे बंदी लड़कियाँ खड़ी थीं… उन्हें मुस्कुराने का आदेश दिया गया था, और उनके चेहरों पर बनावटी विनम्रता का मुखौटा चिपका हुआ था। लेकिन जब आप उनकी आँखों में देखते, तो सच्चाई सामने आ जाती। उन आँखों की गहराई में एक टूटी हुई, दबी हुई चीख छिपी थी। हालाँकि वे खेल को नियंत्रित करने वाली "डीलर" प्रतीत होती थीं, वास्तव में वे पीड़ित थीं जो अपने भाग्य को भी नियंत्रित नहीं कर सकती थीं, हर पल आतंक में जी रही थीं।
कुछ मेजों पर वे "बॉस" बैठे थे जिनका मैंने जिक्र किया था। ऐसे लोग जिन्होंने दुनिया के हर घिनौने और हर पाप को छुआ था... मेज पर उनकी हरकतें मुझे जुआरियों की नहीं, बल्कि भूखे भेड़ियों की याद दिला रही थीं जो इंसानी मांस खाने की तैयारी कर रहे हों। उनके लिए, वे लड़कियां और मैं महज़ संख्याएँ थीं, मात्र औजार।
इन चकाचौंध भरी रोशनी के नीचे, हर कोई एक भूमिका निभा रहा था, लेकिन अब मैं इस रंगमंच के पर्दों के पीछे छिपे गहरे अंधकार को उसके पूरे नग्न भयावह रूप में देख सकता था।

* * *

यांग ने मुझे पीछे आने का इशारा किया और हम सीढ़ियाँ चढ़कर दूसरी मंज़िल पर पहुँच गए। हमारे सामने फैला लंबा गलियारा मानो अनंत तक जाता हुआ प्रतीत हो रहा था। दाएँ और बाएँ खुले दरवाज़ों वाले दफ्तर थे, जिनमें विदेशी लोग बिना सिर उठाए काम कर रहे थे। उनमें भारतीय सबसे ज़्यादा प्रमुख थे; उनकी निगाहों में ऐसी थकावट और गहरा अंधकार था, मानो वे सब चुपचाप एक ही बुरे सपने में डूब रहे हों। कोई नहीं बोल रहा था; हवा में बस एक काली ऊर्जा छाई हुई थी।
लेकिन यांग का कार्यालय बिल्कुल अलग ही दुनिया थी। महंगे सोफे, आलीशान आर्मचेयर, एक सुंदर चीनी शैली का चाय सेट... सब कुछ आँखों को भाने वाला था, मानो मेरे साथ हुई क्रूरता को भुलाने के लिए।

म्यांमार से पलायन

कुछ क्षण पहले जो मैंने देखा, वह महज़ कुछ कदम दूर नहीं था। उसने मुझे उन कुर्सियों में से एक पर बैठने के लिए मजबूर किया और बगल वाले कमरे में जाकर कामगारों के साथ शामिल हो गया।
दरवाजा थोड़ा खुला रह गया... और उस दरार से मैंने अंदर बंद कैदियों की निगाहें देखीं। भगवान करे, वो निगाहें किसी को न दिखाई दें। वो खौफ, वो अथाह निराशा, और वो भाव जो फुसफुसा रहा था, "तुम्हें अभी कुछ पता नहीं है..." उनकी आँखों से मानो मुझसे विनती हो रही थी, कह रहे थे: "जो तुम अभी देख रहे हो वो कुछ भी नहीं है; काश तुम्हें पता होता कि तुम्हारा क्या इंतजार कर रहा है..." उन निगाहों ने तीर की तरह मेरी आत्मा को भेद दिया। तभी कमरे से एक लड़की निकली। वह लगभग पच्चीस साल की थी, सांवली त्वचा और काले बाल थे—बेहद खूबसूरत। वह धाराप्रवाह चीनी बोलती थी, हालांकि उसके चेहरे के हाव-भाव से साफ था कि वह खुद चीनी नहीं थी। "स्वागत है। कैसी हो? कहां से हो?" उसने पूछा। इस जगह की गंभीरता के बावजूद उसकी आवाज़ में एक अजीब सी कोमलता थी। "मैं ठीक हूँ... धन्यवाद... मैं अज़रबैजान से हूँ," मैंने कहा और बताया कि मैं यांग के निमंत्रण पर यहाँ आया हूँ।
उसके होठों पर एक उदास मुस्कान आ गई: “मैं म्यांमार से हूँ, लेकिन मुझे चीनी भाषा अच्छी तरह आती है। आपकी भाषा भी अच्छी है। क्या आपको भूख लगी है?” “हाँ… मैंने घंटों से कुछ नहीं खाया है।” “यांग के बाहर आते ही हम आपके लिए खाना मंगवा लेंगे। आराम से बैठिए,” उसने कहा।
मैंने सोचा कि वह यांग की व्यावसायिक साझेदार है, इस व्यवस्था का एक हिस्सा। उसने मुझसे नज़रें नहीं हटाईं और चुपचाप मुस्कुराती रही। तब मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यही लड़की इस कालकोठरी से निकलने में मेरी सबसे बड़ी—शायद इकलौती—सहयोगी बनेगी। वह इस अंधेरे में चमकते एक छिपे हुए सितारे की तरह थी।
जब यांग आखिरकार बाहर आया, तो उसके साथ एक दुबला-पतला, छोटा चीनी युवक था। लेकिन मेरी नज़र उन दोनों के गले में लटके रंगीन डोरियों पर पड़ी। यहाँ, हर रंग

कैद में: पहला दिन

वाक्य कुछ इस प्रकार था: बंदी बनाए गए विदेशियों ने नीले रंग के कपड़े पहने थे; यांग और लड़की ने लाल रंग के कपड़े पहने थे; और उस दुबले-पतले लड़के के गले में एक काला बैज बंधा था। उस छोटे से शरीर पर लगा वह काला बैज पूर्ण अधिकार का प्रतीक था—हर किसी पर जीवन और मृत्यु का अधिकार। यांग ने फुसफुसाते हुए कहा: “ये मेरे बॉस हैं। सावधान रहना, ये खतरनाक हैं।” ब्लैक-कार्ड बॉस के चेहरे पर घिनौनी मुस्कान और उसके कहे शब्द मुझे बिजली की तरह लगे: “लोगों को धोखा देकर तुम खूब पैसा कमाओगे… हा हा हा।” मैं जम गया। अनुवादक बनने के मेरे सपनों पर एक काला साया छा गया। जब मैंने किसी तरह कहा, “मैं यहाँ धोखा देने नहीं आया हूँ,” तो यांग ने तुरंत मुझे कमरे से बाहर निकाल दिया। अब बहस करने का समय नहीं था। अब सिर्फ अपनी जान बचाने का समय था।
मुझे परिवार से संपर्क कराने के लिए वे मुझे कांच की दीवारों वाले एक कमरे में ले गए। जब मैंने फोन उठाया, तो मेरी उंगलियां बेकाबू होकर कांपने लगीं और नंबर मेरी आंखों के सामने धुंधले हो गए। मैंने घर फोन किया। अपने पिता और माता की आवाज़ सुनकर, मेरे अंदर कुछ टूट गया। गले में अटकन के कारण बोलना लगभग नामुमकिन हो गया था, लेकिन मुझे इस नरक की गहराई से उन्हें एक "स्वर्ग" की कहानी सुनानी पड़ी: "पिताजी, सब ठीक है... जगह बहुत अच्छी है... वे मेरा अच्छे से ख्याल रख रहे हैं... चिंता मत करो।"
हर शब्द मेरे सीने में छुरा घोंपने जैसा था। जहाँ वे मुझे अपना सफल, पैसा कमाने वाला बच्चा समझते थे, वहीं असल में मैं एक जेल जैसे शहर में गुम हो रहा था।
सबसे मुश्किल काम था अपने मंगेतर से बात करना। उसकी आवाज़ उम्मीद से भरी थी; वह भविष्य, हमारे बनने वाले परिवार और हमारे सपनों के बारे में बात कर रहा था। उसकी आवाज़ में जो खुशी थी, वह मेरी मौत के डर से टकरा रही थी। वह सफेद शादी के जोड़े का सपना देख रहा था, जबकि मैं, इन कंटीले तारों के पीछे, यह भी नहीं जानती थी कि अगले पल मैं सांस ले पाऊंगी या नहीं। फोन रखने के बाद, उस कांच के कमरे की ठंडी दीवारें मुझे जकड़ती हुई महसूस हो रही थीं। एक खालीपन, एक असहनीय पीड़ा...

म्यांमार से पलायन

* * *

यांग की तीखी आवाज़—एकदम "चलो चलें"—ने मुझे उस काँच की दीवारों वाले कमरे के दुख से झकझोर कर रख दिया। मैंने फ़ोन जेब में रखा और घिसटते कदमों से उसके पीछे चल दिया। मेरा सामान यांग के दफ्तर में ही रह गया। रास्ते में मुझे कई लड़कियाँ दिखीं जो रूसी या यूक्रेनी लग रही थीं। वे इस लाल मिट्टी वाले, उष्णकटिबंधीय जंगल के बीच बिल्कुल बेमेल लग रही थीं... उस पल मुझे यह समझ नहीं आया था कि उनमें से हर एक कैदी थी, किसी झूठ के झांसे में यहाँ लाई गई थी, उनकी आत्मा कुचली हुई थी। पूरी सच्चाई जानने में मुझे कुछ और कड़वे दिन लगने थे।
हम रेस्टोरेंट में दाखिल हुए। चीनी व्यंजन सजे हुए थे— लंबे नूडल्स, ऐसा मांस जिसका खून पूरी तरह से नहीं निकला था, और तीखी, अजीब गंध वाली चटनी। मेरी भूख गायब हो गई थी; हर निवाला गले में पत्थर की तरह अटक रहा था। यांग के बगल में खड़ी म्यांमार की लड़की ने मुझसे नज़रें नहीं हटाईं। वह धीरे से मुस्कुराई, लेकिन उस मुस्कान में कुछ ऐसा था जिसने मुझे बेचैन कर दिया, कुछ ऐसा जिससे मेरा सीना कस गया। मुझे शर्म महसूस हुई और मैं बार-बार नज़रें फेरता रहा। जब यांग ने यह देखा और कहा, "यह मेरी प्रेमिका है," तो मेरी घबराहट और बढ़ गई। मुझे डर था कि इस क्रूर कानून वाली जगह पर, यांग मुझे गलत समझ सकता है, और पल भर में सब कुछ बेकाबू हो जाएगा।
खाना खत्म हुआ। यांग खड़ा हुआ और ठंडी, सपाट आवाज में बोला:
— “चलिए, अपना सामान ले आइए। मैं आपको आपके ठहरने की जगह तक छोड़ देता हूँ।”
“ठीक है, चलो चलते हैं,” मैंने जवाब दिया, लेकिन मेरे दिल का अंधेरा पहले ही एक भारी मुट्ठी की तरह कस चुका था। मैं कहाँ जा रहा था? किन दीवारों के भीतर मुझे दफ़नाया जाने वाला था?

□□□ □□□: □□□□ □□□

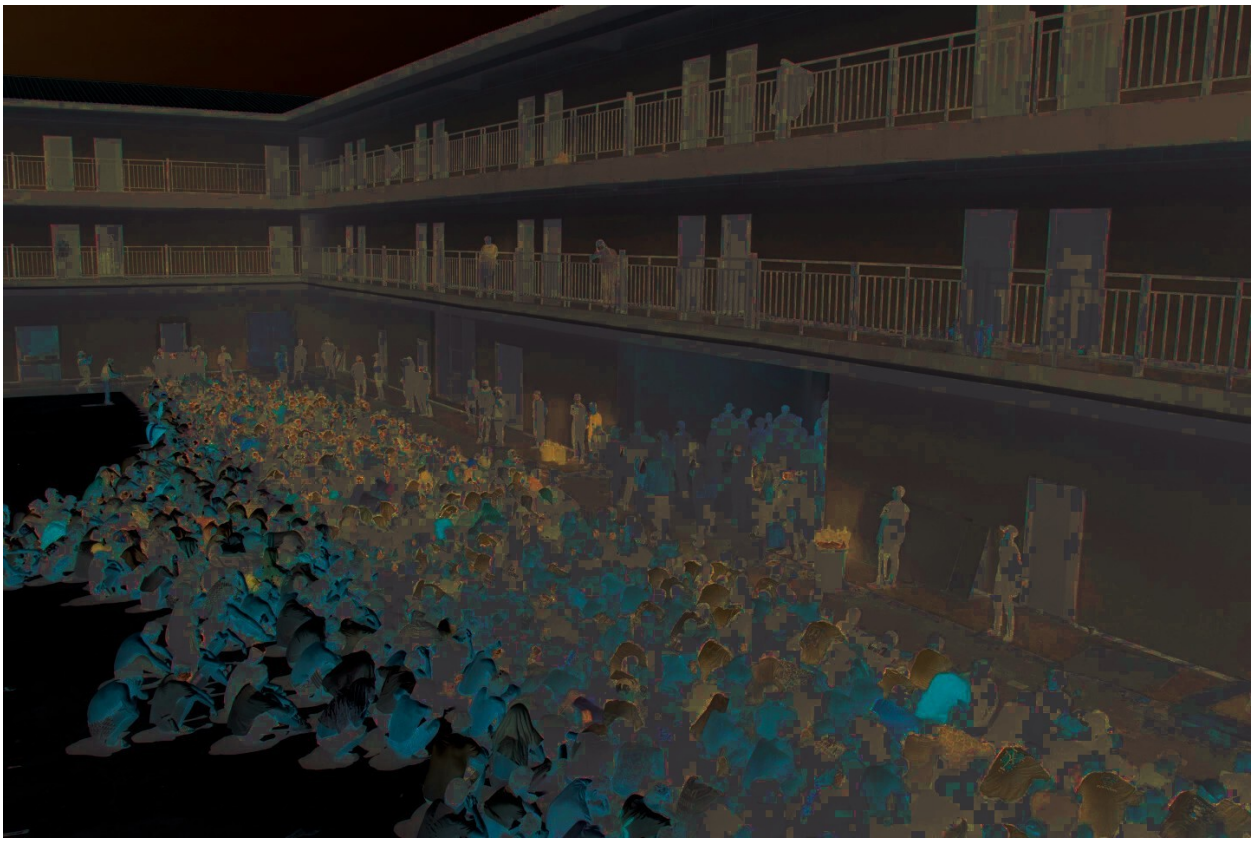

□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□, □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ - □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□

* * *

□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□

□□ □□□ □□□□ □□□□ □□; □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□-□□□□ □□ □□□ □□□ □□... □□ □□□ □□□□□-□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□-□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□

म्यांमार से पलायन

लेकिन सबसे भयावह बात दुर्गंध और दृश्य था: गद्दों और कंबलों पर मल के धब्बे लगे थे... दीवारों पर सूखा खून बिखरा हुआ था... बाथरूम गंदगी का एक गड्ढा मात्र था। मेरी आँखों में आंसू आ गए और मुझे मतली होने लगी।
— “यांग, ये क्या है? हम दिन भर हंसते-हंसते बातें करते रहे, और यही जगह तुम्हें मेरे लिए ठीक लगी? मैं यहाँ कैसे सोऊँगी? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है?” — मैं चिल्लाई।
लेकिन यांग मानो किसी दूसरी ही दुनिया में जी रहा था। वह इतना शांत, इतना निर्मम था... — “बस एक रात के लिए है, बर्दाश्त कर लो। बॉस कल आएंगे और तुम्हें किसी साफ-सुथरी जगह पर भेज देंगे। अब हम मौज-मस्ती करने जा रहे हैं; वैसे भी तुम सिर्फ एक-दो घंटे ही सो पाओगे,” — उसने कहा।
मुझे एहसास हुआ कि आवाज़ उठाना व्यर्थ था। यहाँ कानून उन्हीं का था, और कोई भी विरोध मुझे दीवार पर लगे उन खून के धब्बों का अगला मालिक बना सकता था। मुझे यह सब सहना ही था। जाने से पहले, यांग ने कहा: “अपने कपड़े बदल लो। हम नाइटक्लब जा रहे हैं; मैं तुम्हें अपने दोस्तों से मिलवाऊँगा।”
जब वे चले गए, तो मुझे उस गंदगी के बीच अकेला छोड़ दिया गया। मेरे अंदर नफरत का ज्वालामुखी फट पड़ा। "और वह मुझे तैयार होने को कहता है... वह कमीना..." मैंने बुदबुदाया। जैसे ही मैंने कमरे को करीब से देखा, मेरा डर और बढ़ गया। मल के निशान, खून के धब्बे... ये यातना के निशान थे। डर से मल त्याग पर नियंत्रण खो चुके या पिटाई से खून उगलने वाले लोगों की खामोश चीखें अभी भी हवा में गूंज रही थीं। "क्या मुझे भी यही भुगतना पड़ेगा?" मैंने सोचा। नहीं, मैं हार नहीं मानूंगी। उस घिनौने कमरे की अवहेलना करते हुए, मैंने अपना सामान खोला। मैंने अपने सबसे अच्छे, सबसे आकर्षक कपड़े पहने। मैंने अपने बाल संवारे और आत्मविश्वास से खड़ी हो गई। खून और मल से बदबूदार उस कोठरी के बीचोंबीच, मैंने खुद को ऐसे तैयार किया जैसे मैं किसी मंजिल की ओर बढ़ रही हूँ।

□□□ □□□: □□□□ □□□

□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□: □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□

□□□□□ □□□□□

म्यांमार से पलायन

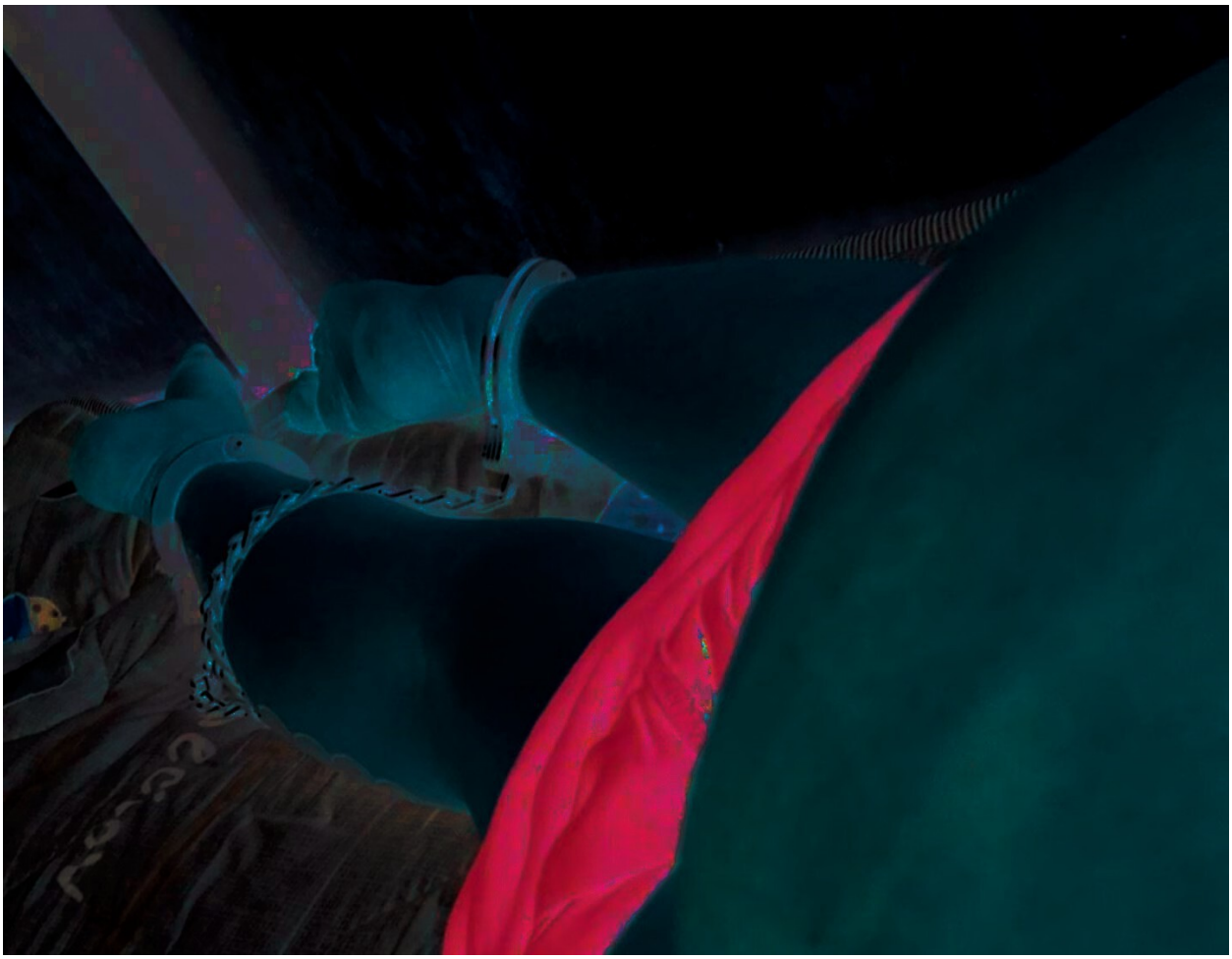

एक चीनी व्यक्ति को यातना दी जा रही है।

* * *

जब यांग की प्रेमिका कमरे में दाखिल हुई, तो मैं उस गंदगी के बीच में शान से खड़ा था, मानो मैंने उसके सामने आत्मसमर्पण ही न किया हो। मुझे उस "आकर्षक" अंदाज़ में देखकर उसकी आँखें चमक उठीं; वह अपनी प्रशंसा छिपा नहीं सकी। — "वाह, तुम कितने सुंदर लग रहे हो... मुझे बहुत पसंद आया। तुम्हारा शरीर एकदम आदर्श है—बाल, दाढ़ी... मुझे तुम अच्छे लगे। तुम इस जगह पर कैसे आ गए?" — उसने कहा। उसकी आवाज़ में प्रशंसा और "अफसोस" दोनों का भाव था। मैंने तुरंत बातचीत का रुख बदल दिया, क्योंकि इस माहौल में हर एक शब्द मौत की सजा जैसा था: "यांग अभी

□□ □□□□□ □□□□?" □□□□□□ □□□□□□ "□□ □□□□□ □□, □□□ □□□□□ □□□□," □□□□□ □□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□

कैद में: पहला दिन

मेरी आत्मा को नई ऊर्जा मिली। लेकिन जिस नाइटक्लब में वे मुझे ले गए, वह एक अलग ही तरह के अंधकार का केंद्र था। अंदर जाते ही मेरी नज़र एक लंबी मेज पर टिक गई। बिकिनी पहनी लड़कियाँ उस पर नाच रही थीं। लेकिन यह नाच नहीं था... ऐसा लग रहा था मानो वे हर हरकत के साथ रो रही हों, हर कदम एक खामोश चीख हो।
हम यांग के दोस्तों के साथ बैठे थे। फल, पेय पदार्थ... माहौल गरमा रहा था। अचानक, यांग के एक दोस्त ने उसकी ओर देखा और पूछा: "शुरू करें?" यांग ने सिर हिलाकर कहा: "शुरू करो।" उसी क्षण, उसने अपनी जेब से एक मुड़ा हुआ कागज़ निकाला और उस पर से वह सफ़ेद पाउडर निकाल दिया। वे एक स्ट्रॉ के ज़रिए उस वर्जित पदार्थ को सूंघने लगे। जब मेरी बारी आई, तो उन्होंने कहा: — "अब तुम्हारी बारी।" — "नहीं, प्लीज़। मैं यहाँ काम करने आया हूँ; ऐसी चीज़ें मेरे काम पर असर डालेंगी। अगर बॉस को पता चल गया, तो तुम्हारे लिए भी मुसीबत हो जाएगी। मैं ऐसे ही ठीक हूँ," — मैंने कहा।
उन्होंने मेरा इनकार तो मान लिया, लेकिन मेरे लिए एक और जाल बिछाया। उन्होंने एक लड़की को बुलाया और उसे मेरे बगल में बिठा दिया। यांग की घिनौनी हंसी गूंजी: — “आज रात ये तुम्हारी है। जो चाहो करो… हा हा हा!” — “यांग, मुझे इन सब चीजों की ज़रूरत नहीं है। मैं यहाँ काम करने आई हूँ। वैसे भी, मेरी सगाई हो चुकी है। प्लीज़, बस बैठ जाइए, मैं थक गई हूँ,” — मैंने कहा। उसी क्षण, मुझे यांग की प्रेमिका की निगाहें अपने ऊपर महसूस हुईं। मेरे शब्दों ने मानो उसके दिल को छू लिया; इस भ्रष्ट दुनिया में भी एक आदमी अपनी वफादारी निभा सकता है, यह देखकर वह हैरान रह गई।
यांग ने हार नहीं मानी: “जाना मना है! मेरी गर्लफ्रेंड अच्छी डांसर है, जाओ उसके साथ डांस करो।” मेरे पास कोई चारा नहीं था, वरना तनाव चरम पर पहुँच जाता। हम बाहर गए और डांस किया। उस लड़की ने मुझे ऐसी भावना, ऐसी गहराई से देखा… मानो उसकी आँखों में कोई छिपा हुआ अपनापन हो।
तभी, सोने की चेन पहने उन बॉस में से एक अंदर आया। वह बीच में खड़ी लड़कियों के पास गया और शिकारी की तरह व्यवहार करने लगा। उसने एक लड़की को अपनी गोद में खींचने की कोशिश की, और जब वह

म्यांमार से पलायन

विरोध करते ही, एक ज़ोरदार थप्पड़ की आवाज़ से पूरा क्लब स्तब्ध रह गया। लड़की ज़मीन पर गिर पड़ी, उसकी सिसकियाँ संगीत की आवाज़ को भी दबा रही थीं। उस निर्दयी बॉस ने चिल्लाकर कहा: — “रो मत! मैंने तुमसे कहा था कि रोना मत! तुम गुलाम हो! मैं तुम्हें मार डालूँगा! नाचो!”
भय से कांपती हुई और आँसुओं से भरी हुई वह लड़की उसकी गोद में नाचने लगी। यह दृश्य देखकर मेरा हृदय चकनाचूर हो गया। वे अपनी मर्जी से यहाँ नहीं आई थीं... वे सब बंदी थीं। कौन जाने—वे किसी की बेटी, किसी की मंगेतर, किसी की माँ थीं... वे उन फूलों की तरह थीं जो गर्मियों के बीच में खिले थे, लेकिन बेरहमी से तोड़कर मुरझाने के लिए छोड़ दिए गए थे। और उस लड़की को देखते हुए, मुझे खुद की झलक दिखाई दी। क्या यही मेरा भी भाग्य था? क्या मेरे लिए भी ऐसी ही टूटने की प्रक्रिया इंतजार कर रही थी?

* * *

मैं क्लब की घुटन भरी हवा, थप्पड़ों की आवाज़ और रोती हुई लड़कियों के शोर से बचना चाहता था। यांग अब पहले जैसा नहीं रहा था; नशे में उसकी ज़बान लड़खड़ा रही थी और वह मुश्किल से खड़ा हो पा रहा था। मैंने उसकी प्रेमिका से कहा, "मैं जाना चाहता हूँ, मैं थक गया हूँ।" उसकी मदद से हम दोनों ने यांग की एक-एक बांह पकड़ी और उसे बाहर ले आए। हम रात के अंधेरे में एक मंडप में बैठ गए। यांग वहीं बेंचों पर गहरी नींद में सो गया।
यांग की प्रेमिका ने चुप्पी तोड़ी। उस पल उसकी आवाज़ में ज़्यादा सच्चाई और उदासी झलक रही थी। मेरी आँखों में देखते हुए उसने कहा: “तुम एक पवित्र और नेक इंसान हो। तुम्हारा यहाँ कोई स्थान नहीं है। काश यांग भी तुम्हारी तरह होता… लेकिन वह तो बस मुझे एक वस्तु की तरह इस्तेमाल करता है। उसके अंदर कोई भावना नहीं है; वह अंदर से बिल्कुल निर्मम है।”
मैं चुप रहा। मेरे भीतर का असहनीय दर्द मुझे चुप नहीं करा पा रहा था।

कैद में: पहला दिन

मुझे बोलने दीजिए। उसने आगे कहा: “मैं यहीं की रहने वाली हूँ, म्यांमार से। यहाँ कोई मुझे छू नहीं सकता; मुझे डर नहीं है। यहाँ के सैनिक मेरे अपने हैं। अगर आपको कभी मदद की ज़रूरत हो, तो मुझे बताइएगा।”
ये शब्द अंधेरे में मेरी ओर बढ़ाए गए एक गुप्त हाथ की तरह थे, लेकिन उस क्षण मैं उस घिनौने कमरे में वापस जाने के डर से ही जी रहा था। हमने किसी तरह यांग को ऊपर उठाया और उसे उसके कमरे में पहुँचा दिया। लड़की ने मुझे विदा किया, और मैं एक बार फिर उस भयानक कोठरी में लौट आया।
जैसे ही मैं कमरे में दाखिल हुआ, गंदगी की वह दुर्गंध फिर से मेरे फेफड़ों में भर गई। भला कहाँ सो सकता था? लेट कैसे सकता था? हर जगह मल, खून और मैल फैला हुआ था। जी मिचलाने लगा, मैंने अपना सामान खोला। मैंने अपने साफ कपड़े निकाले और उन्हें उस गंदे तकिये पर इस तरह लपेट दिया ताकि मेरा चेहरा उस गंदगी को न छुए। मैंने अपने नीचे भी उसी तरह कपड़े बिछाए, मानो अपने लिए स्वच्छता का एक छोटा सा "द्वीप" बना रहा हो।
दुनिया के छोर पर, इस घने जंगल के बीचोंबीच, हर चीज़ और हर किसी से दूर... मैंने अपने सिर को कपड़ों के बंडल पर टिकाया और आँखें बंद कर लीं। लेकिन यह नींद नहीं थी; यह कल आने वाले और भी भयानक दृश्यों से पहले बस एक छोटा, गहरा विराम था।

कैद में: चौथा दिन

मानो या न मानो... तीन दिनों तक कोई नहीं आया। न यांग, न वो बॉस
जिसके बारे में सब बात करते थे, न कोई और। उन चार दीवारों के
भीतर, उस कोठरी में जहाँ साँस लेना भी असहनीय था।
यह एक तरह की सज़ा थी, मैं पूरे तीन दिन बिना भोजन और पानी के रहा। मेरे बैग के कोने में रखा एक छोटा सा केक और आधा लीटर पानी की बोतल, जो पहले ही आधी खाली हो चुकी थी, मेरी एकमात्र उम्मीदें थीं—जीवन से जुड़े मेरे आखिरी धागे। मैं उन्हें एक-एक टुकड़ा करके, एक-एक बूंद करके खा रहा था… हर निवाले के साथ, मैं मरने से बचने के लिए संघर्ष कर रहा था, लेकिन हर गुजरते घंटे के साथ मेरी ताकत कम होती जा रही थी।
थकान से मेरा शरीर भारी हो गया था; मेरे होंठ सूखकर फटने लगे थे, गला आग की तरह जल रहा था। थाईलैंड की उमस भरी हवा में मुझे जो सूखी खांसी हुई थी, वह फिर लौट आई थी। हर बार खांसने पर ऐसा लगता था जैसे मेरे फेफड़े टुकड़े-टुकड़े होकर गले में फंस रहे हों। सारा दिन मैं उस घिनौने गद्दे पर अपने ही कपड़ों में लिपटी हुई लेटी रही। मैंने कुछ नहीं किया, कुछ सोच भी नहीं पा रही थी; बस खुद को सांस लेने के लिए मजबूर कर रही थी ताकि मेरी जिंदगी खत्म न हो जाए।
कभी-कभार दरवाजा खुल जाता और एक गार्ड अंदर आ जाता। वह मुझे इंसान की तरह नहीं देखता था, बल्कि कोने में फेंकी हुई किसी पुरानी, बेकार वस्तु की तरह देखता था। दरवाजा बंद किए बिना ही वह मेरे सामने पेशाब कर देता था।

कैद में: चौथा दिन

मैं। उन पलों में, मैंने अपने शरीर की हर कोशिका से महसूस किया कि मेरी मानवता को कैसे कुचला जा रहा है, मेरा अस्तित्व कैसे नष्ट हो रहा है। मैं एक लाश की तरह जम गया, अपनी आँखें बंद कर लीं ताकि मुझे उस अपमान को न देखना पड़े। मेरे दिमाग में बस एक ही वाक्य बार-बार गूंज रहा था:
"तो, यही मेरा अंत है... मैं यहीं, इस गंदगी और खून के धब्बों के बीच, पूरी तरह से भुला दिया जाऊँगा और मर जाऊँगा।"

* * *

शाम हो चुकी थी, और कमरे का अंधेरा और दुर्गंध मुझ पर भारी पड़ रही थी। अचानक, दरवाजा खुला और एक दुबला-पतला चीनी आदमी अंदर आया। उसके गले में लटका लाल कार्ड इस व्यवस्था में उसके अधिकार का प्रतीक था। शांत लेकिन बर्फीली आवाज में उसने कहा: — “उठो। नीचे जाओ।”
मैंने खुद को खड़े होने के लिए मजबूर किया। तीन दिनों की भूख और खांसी से मेरा शरीर इतना कमजोर हो गया था कि मेरे पैर बेकाबू होकर कांप रहे थे। लेकिन एक आंतरिक भावना से प्रेरित होकर, मैंने अपने कंधे सीधे किए। मैं कोई लाश नहीं थी; मैं अब भी एक इंसान थी। उसने ठंडी निगाहों से मेरे चेहरे को देखा और आगे कहा: — “हम वही कंपनी हैं जिसके बारे में यांग ने आपको बताया था। आप हमारे लिए काम करेंगे। अब, आप उनके साथ रात के खाने पर जाइए, और फिर आप ऑफिस आ जाइए। बॉस आपसे मिलना चाहते हैं। मीटिंग के बाद, मैं आपको आपके नए ठिकाने पर छोड़ दूंगा।”
वह चला गया, और कमरा एक बार फिर उस गहरी खामोशी में डूब गया। मैं कमजोर थी; हर हरकत से मेरी छाती में सूखी खांसी उठ जाती थी। लेकिन मैंने खुद को घसीटते हुए अपने कपड़े समेटे। मैंने अपना सामान ज़िप किया और आखिरी बार उस घिनौने बाथरूम में कदम रखा। तीखी, दम घोंटने वाली गंध ने मेरी सांस रोक दी। मैंने खुद को आईने में देखा—धंसी हुई आँखों और फटे होंठों वाली एक परछाई… फर्श पर फैली गंदगी और मैल के धब्बे देखकर मैं दंग रह गई।

म्यांमार से पलायन

दीवारों पर बनी आकृतियाँ देखकर मेरा पेट खराब हो गया।
मैंने उल्टी रोकने के लिए अपना गला दबाया और आँखें बंद कर लीं। उसी क्षण, मेरे भीतर व्याप्त अपार घृणा, बेबसी और पीड़ा ज्वालामुखी की तरह फूट पड़ी। मैंने दाँत पीसे, अपनी सारी ताकत मुट्ठी में समेटी और गंदी दीवार पर प्रहार किया। मेरी उंगलियों का दर्द मेरे दिमाग में गूंज उठा, लेकिन इसने मुझे झकझोर कर जगा दिया। उस दर्द ने मुझे याद दिलाया कि मैं अब भी महसूस कर सकता हूँ।
मैंने जलते फेफड़ों से गहरी सांस ली। दीवार का सहारा लेकर मैंने खुद से फुसफुसाया: “हिम्मत रखो, इफ्तिखार… हिम्मत रखो। धैर्य रखो। ईश्वर तुम्हारे साथ है। कोई न कोई रास्ता जरूर निकलेगा। इस नरक से निकलने का कोई न कोई रास्ता जरूर होगा।”

* * *

यांग आया... उसी ठंडे, भावहीन चेहरे के साथ, उसने मेरा सामान उठाया। तीन दिनों से मैं उस दुर्गंध में, मल-मूत्र और खून के धब्बों से घिरी हुई, भुला दी गई थी। भूख और प्यास से मेरा सिर इतना चकरा रहा था कि ऐसा लग रहा था मानो मैं किसी खाली जगह में चल रही हूँ। हर कदम पर मेरे घुटने लड़खड़ा रहे थे, लेकिन जीने की आखिरी इच्छा ने मुझे डटकर खड़े रहने के लिए मजबूर कर दिया।
हमने अपना सामान वापस ऑफिस में रखा और खाना खाने चले गए। यांग की प्रेमिका पहले से ही मेज पर बैठी थी, जो खाने से लबालब भरी हुई थी। मैंने ऐसे खाया जैसे मैंने पहले कभी खाना नहीं खाया हो। हर निवाला पेट में जाते ही, मेरे शरीर की हर कोशिका मानो जश्न मना रही थी; मेरी आत्मा धीरे-धीरे उस घिनौने कमरे से बाहर निकल रही थी। लेकिन जैसे ही मुझे होश आया, मेरे आस-पास के घिनौने माहौल का एहसास और भी गहरा होता चला गया।
यांग और उसकी प्रेमिका शराब ऐसे पी रहे थे जैसे पानी। दोनों नशे में चूर थे। लेकिन मेरे मन में बस एक ही डर था: “अब क्या होगा? वे उन्हें कहाँ ले जा रहे हैं?”

कैद में: चौथा दिन

मुझे?"
यांग के वॉशरूम जाते ही, उसकी प्रेमिका अचानक मेरी ओर झुकी। नशे में धुंधली आँखों से उसने एक ऐसा घिनौना प्रस्ताव रखा जिसकी मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी: — “मुझे तुमसे कुछ चाहिए… मैं तुम्हें पसंद करती हूँ। क्या तुम आज रात मेरे साथ रह सकते हो?”
ऐसा लगा जैसे दुनिया मेरे सिर पर गिर पड़ी हो। मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई। — “तुम क्या बात कर रहे हो?!”
मैंने फुसफुसाते हुए कहा, मेरी आवाज़ में व्याप्त भय को छुपाना मुश्किल था। “मैं कैदी हूँ! अगर यांग को पता चला तो वो मुझे ज़िंदा दफ़ना देगा! कृपया मेरे लिए मुसीबतें खड़ी मत कीजिए। मैं तीन दिनों से उस हवा रहित कोठरी में बिना भोजन-पानी के कष्ट झेल रही हूँ; मुझमें अब कुछ भी नहीं बचा है। इसे छोड़ दीजिए!”
लेकिन वह पीछे हटने को तैयार नहीं थी, मानो मेरी बेबसी में उसे आनंद आ रहा हो: — “मैंने तुमसे कहा था ना, मैं यहीं की रहने वाली हूँ! मुझे कोई छू नहीं सकता। मैं तुम्हें आज रात चाहती हूँ!”
मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था और मैं पसीने से भीग चुकी थी। मैंने उससे म्यांमार के लोगों की दयालुता के बारे में, अपने भीतर की ईमानदारी के बारे में बात की। मैंने उससे विनती की कि वह मेरा सहारा बने, खतरा नहीं। वह चुप हो गई... तभी यांग वापस आ गई और मेज पर फिर से वही गहरी खामोशी छा गई।
हम जाने के लिए खड़े हुए। लेकिन रास्ते में यांग ने जो शब्द कहे... उन शब्दों ने मेरी नफरत को चरम सीमा तक पहुंचा दिया। उसने अपनी बेइज्जती का जिक्र इतनी सहजता से किया: — “अगर आपका कोई दोस्त अंग्रेजी जानता हो तो उसे फोन करके बुलाओ। अगर आप उसे यहां लाते हैं तो मैं आपको 10,000 युआन दूंगा। और जो चीनी और अंग्रेजी दोनों जानता हो, उसे 20,000 युआन दूंगा!”
मैंने शांत भाव से जवाब दिया, "ठीक है... मैं इस पर गौर करूँगा।" लेकिन अंदर ही अंदर मैं गुस्से से उबल रहा था। मन ही मन मैं यांग के नशे में धुत चेहरे पर चिल्ला रहा था: "तुम किस तरह के राक्षस हो?! मैं इस नरक में जल

रहा हूँ, और तुम चाहते हो कि मैं अपने ही दोस्तों को इस आग में झोंक दूँ? तुम इंसान नहीं हो; तुम तो साक्षात शैतान हो!"

म्यांमार से पलायन

ऐसी क्रूरता और विश्वासघात के बीच जीवित रहना असंभव सा लग रहा था। लेकिन जब मैं उस मेज से उठकर चली गई, तो मुझे एक बात निश्चित रूप से पता चल गई: इस आदमी के लिए मैं दोस्त नहीं थी; मैं महज बिक्री के लिए रखा गया एक "उत्पाद" थी।

* * *

भोजन ने मेरी आत्मा को मेरे शरीर में वापस ला दिया था, लेकिन यांग का घिनौना प्रस्ताव—मेरे दोस्तों को पैसों के लिए बेचना—अभी भी मेरे दिमाग में घूम रहा था। मैं दफ्तर में अकेला बैठा बॉस का इंतज़ार कर रहा था। सन्नाटा इतना गहरा था कि मेरी अपनी साँसों की आवाज़ भी मेरे कानों में गूँज रही थी।
अचानक दरवाज़ा खुला। यांग की प्रेमिका अंदर आई। खाने की मेज़ पर दिखी वो जोशीली और खतरनाक औरत गायब हो चुकी थी; उसकी जगह एक ऐसी औरत थी जो थकी हुई सी लग रही थी, फिर भी दृढ़ निश्चयी थी। वो आकर मेरे बगल में बैठ गई। हमारे बीच एक तनावपूर्ण सन्नाटा छा गया, मानो समय रुक गया हो। उसने गहरी साँस ली, मानो पूरी दुनिया का बोझ उठा रही हो, और मेरी आँखों में सीधे देखने लगी। उसकी निगाहों में पहले वाला नशा बिल्कुल नहीं था।
अचानक, वह आगे झुकी। अपने कांपते हुए लेकिन गर्म हाथ से उसने हल्के से मेरे हाथ को छुआ। वह स्पर्श इतना अपरिचित लगा, फिर भी साथ ही साथ इतना परिचित भी... धीमी, फुसफुसाती आवाज़ में उसने कहा:
— “जब भी आपको मदद की जरूरत हो… मैं यहाँ हूँ।”
ये शब्द कहते ही उसने तुरंत मेरा हाथ छोड़ दिया और बिना किसी जवाब का इंतज़ार किए, मानो कोई राज़ छोड़कर चली गई हो। मैं स्तब्ध रह गया। उसकी उंगलियों की गर्माहट अभी भी मेरे हाथ के पिछले हिस्से पर महसूस हो रही थी। ये क्या था? कोई जाल, या इस नरक में मेरी रक्षा करने वाली एकमात्र ढाल? उसके शब्द, "मैं यहीं की हूँ, मुझे कोई छू नहीं सकता," मेरे दिमाग में फिर से गूंज उठे। शायद,

कैद में: चौथा दिन

यांग मेरे साथ जो भी बुरा बर्ताव कर रहा था, उसके बावजूद भगवान इस लड़की के माध्यम से मेरे लिए एक रास्ता खोल रहे थे।

* * *

दरवाजा अचानक खुल गया। तीखी, शिकारी निगाहों वाला एक लंबा चीनी आदमी अंदर आया। उसके गले में वह कुख्यात काला कार्ड लटका हुआ था—मौत और पूर्ण प्रभुत्व का प्रतीक। बिना कुछ कहे, वह ठंडे स्वर में अंदर के दफ्तर की ओर बढ़ गया। यांग जा चुका था; उसने मुझे इस अँधेरे गड्ढे के किनारे अकेला छोड़ दिया था। लाल कार्ड लिए दुबला-पतला चीनी आदमी, जो पहले मेरे कमरे में आया था, मेरे बगल में खड़ा हो गया। बर्फीली आवाज़ में उसने कहा: “सब तैयार है। अंदर जाओ।”
मैंने दरवाजा खोला और अंदर चला गया। बॉस डेस्क के पीछे बैठे थे। उनके लिए मैं कोई जीवित प्राणी नहीं, बल्कि महज एक वस्तु था। कठोर और आदेशात्मक स्वर में उन्होंने चिल्लाकर कहा, "बैठो!" मैं बैठ गया। उन्होंने चीनी भाषा में लिखा एक दस्तावेज़ उठाया और मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा: "पढ़ो।" मैंने पढ़ना शुरू किया। मैंने हर शब्द का उच्चारण धाराप्रवाह किया। इससे पहले मैं आधे रास्ते तक पहुंचा, तभी उसने हाथ उठाया और कहा, "बस करो।" फिर उसने एक खाली कागज़ और कलम मेरी तरफ बढ़ा दी: "जो मैं कहूँ, लिखो।" उसने जटिल चीनी वाक्य बोलकर लिखवाना शुरू कर दिया। मेरी उंगलियां कांप रही थीं, फिर भी मैंने सब कुछ एकदम सही लिखा, आखिरी विराम चिह्न तक। कुछ सेकंड के लिए कमरे में गहरी खामोशी छा गई। आखिर में, बॉस ने अपनी निगाहें मुझ पर टिका दीं: "तुम पास हो गए। तुम काम करने के लायक हो।" लेकिन फिर उसका लहजा और भी गंभीर हो गया: "लेकिन क्या तुम्हें पता है कि हमारा धंधा क्या है? क्या तुम्हें पता है कि यहाँ क्या होता है?"
“हाँ,” मैंने जवाब दिया, “मुझे पता है कि मैं अनुवादक बनकर आई हूँ।” उसने तेज़ी से सिर हिलाया: “हाँ, अनुवादक। लेकिन यहाँ हम लोगों को धोखा देते हैं और उनका पैसा चुराते हैं। हमारे कर्मचारी भारतीय हैं; तुम उनके और हमारे बीच सेतु बनोगी। अब, अपना फैसला करो: क्या तुम

म्यांमार से पलायन

क्या आप इस चोरी में हमारी मदद करेंगे या नहीं?
उस पल मेरा दिमाग सुन्न पड़ गया। मैंने सोचा कि मेरे परिवार को अब तक मेरी गैरमौजूदगी का पता चल गया होगा, उन्होंने मेरी गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा दी होगी—उम्मीद तो है, मदद तो ज़रूर मिलेगी। वैसे भी, मैं एक विदेशी हूँ, एक अज़रबैजानी; यकीनन वे मेरे साथ कुछ गंभीर नहीं करेंगे। यही उस पल की सबसे कड़वी सच्चाई थी। मुझे अभी तक यह एहसास नहीं था कि यह महज़ एक दफ्तर या अपराधियों का आम ठिकाना नहीं था। यह शिविर म्यांमार की सेना की सीधी सुरक्षा में था, सशस्त्र सैनिकों से घिरा एक अभेद्य किला। कोई खुफिया एजेंसी, कोई सरकार यहाँ नहीं पहुँच सकती थी; क्योंकि अंदर जाना म्यांमार के साथ सीधा युद्ध था। मैंने जोखिम उठाने का फैसला किया: “नहीं, मैं सहमत नहीं हूँ। मैं यहाँ लोगों को धोखा देने नहीं आया हूँ!” बॉस का चेहरा तुरंत गुस्से से भर गया। उसने दरवाज़ा खोला और उस दुबले-पतले आदमी को बुलाया: “इसे ले जाओ! इसे सबक सिखाओ! इसे ज़्यादा मत मारो, हमें इसकी ज़रूरत है।”
दो गार्डों ने मेरी बांहें प्लास की तरह पकड़ लीं और मुझे घसीटते हुए ले गए। जिस कमरे में मुझे फेंका गया, वह किसी जानवर के लिए भी असहनीय था। सब कुछ कंक्रीट का बना था। अंदर एक पाइप था जिससे लगातार पानी टपक रहा था। कमरा नम था, दीवारों और फर्श पर काई हरी हो रही थी। उन्होंने मेरे हाथ-पैर कसकर बांध दिए और मुझे उस ठंडे, गीले कंक्रीट पर फेंक दिया। "हम कल वापस आएंगे। बेहतर होगा कि तुम अपना इरादा बदल लो!" उन्होंने मेरे मुंह पर दरवाजा पटकते हुए कहा।
मैं पूरी रात और अगले दिन भी वहीं पड़ा रहा। मेरी ताकत और हिम्मत दोनों ही खत्म होती जा रही थीं। पहले कुछ घंटों में, मैंने गीले फर्श को छूने से बचने के लिए खड़े होने की कोशिश की, लेकिन मेरा शरीर जैसे लकवाग्रस्त हो गया था। आखिरकार, थककर मैं गिर पड़ा। गीले कंक्रीट की ठंड मेरी हड्डियों तक समा गई। और फिर... मैंने अपने जीवन के सबसे भारी, सबसे अपमानजनक पल जिए। मेरा शरीर अब मेरे वश में नहीं था। मैंने खुद को गंदा कर लिया था... मैं उसी ठंड में अपने ही मल में पड़ा रहा।

कैद में: चौथा दिन

पानी और गंदगी। मैं कांप रहा था, मेरे दांत बज रहे थे।
“क्या मैं सचमुच यहीं, इस अपमान के बीच मरने वाली हूँ? किसलिए?” मैंने मन ही मन चीखा। लेकिन उस अँधेरे की गहराई में एक चिंगारी जगी। नहीं! इसका अंत ऐसे नहीं होना चाहिए! मुझे यहाँ से ज़िंदा निकलना ही होगा। अपने मंगेतर के लिए, अपनी माँ के लिए, अपने पिता के लिए…
मैंने फैसला कर लिया: मैं मान जाऊँगी। मैं उनके साथ चलूँगी, उन्हें अपना बना लूँगी, उनका भरोसा जीतूँगी। मैं उनकी हर माँग पर हाँ कह दूँगी, लेकिन मेरे मन में बस एक ही विचार रहेगा: भाग निकलना। मैं इन शैतानों को उन्हीं के खेल में हराऊँगी और इस नरक से निकलने का रास्ता ढूँढूँगी।

* * *

वे आए… दरवाज़ा खुला, और उस कंक्रीट और अपमान के बीच से मैंने उन्हें अपना जवाब दिया। मैंने स्वीकार कर लिया। मैंने उनसे कहा कि मैं काम करूँगा, कि वे जो कहेंगे मैं वही करूँगा। उन्होंने मेरे कपड़े उतार दिए और पाइप से चुभने वाला ठंडा पानी चालू कर दिया। जैसे ही पानी मेरे शरीर पर पड़ा, ऐसा लगा जैसे मेरी आत्मा जम गई हो; मैं बेकाबू होकर काँपने लगा। वह पानी सिर्फ़ गंदगी धोने के लिए नहीं था; ऐसा लगा जैसे वह मेरे अंदर के प्रतिरोध को भी धोकर बहा ले जाने के लिए था। उन्होंने मुझे सूखने के लिए एक तौलिया और पहनने के लिए नए कपड़े दिए। मैंने खुद को सुखाया और कपड़े पहने, लेकिन वह अंदरूनी ठंडक मुझे नहीं छोड़ रही थी।
हम वापस बॉस के पास, उस अंधेरे दफ्तर में गए। बॉस ने मेरे सामने खाने का एक प्लास्टिक का डिब्बा रख दिया। मैंने वह खाना खाया जबकि वह शांत लेकिन धमकी भरे स्वर में बोले: — “यहाँ तुम्हें कोई हाथ नहीं लगाएगा। अपने काम को गंभीरता से लो, अनुवाद सही करो। तुम कमाओगे भी। अगर तुम ठीक से काम करोगे, तो कोई समस्या नहीं होगी।” बेशक, यह सिर्फ एक झूठ था जो सुनने में अच्छा लगता था। बाद में मुझे पता चला कि अगर यहाँ के कर्मचारी पैसे नहीं चुरा सकते, तो

म्यांमार से पलायन

दो दिन बाद, उन्हें तुरंत दंडित किया गया और उनकी तनख्वाह में कटौती कर दी गई। हम अनुवादकों के लिए भी एक जाल बिछाया गया था: वे हम पर दोष मढ़ते हुए कहते, "आपने सही अनुवाद नहीं किया, इसलिए पैसे नहीं मिले।" फिर बॉस ने एक दस्तावेज़ आगे बढ़ाया और मुझे उस पर हस्ताक्षर करने को कहा। उसमें लिखा था कि मैं यहाँ एक साल तक काम करने के लिए सहमत हूँ। अगर मैंने अनुबंध तोड़ा, तो मुझे कंपनी को 80,000 AZN का जुर्माना देना होगा। यह हास्यास्पद था... पैसे देना भी कोई बचने का रास्ता नहीं था। मैं समझ चुका था कि इन लोगों को पैसे दे भी दो, तो भी ये तुम्हें यहाँ से ज़िंदा नहीं जाने देंगे। मैं बेबस था। मैंने कलम उठाई और अपने नाम पर हस्ताक्षर कर दिए। उस पल मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने न सिर्फ अपनी आज़ादी, बल्कि अपनी आत्मा भी गिरवी रख दी हो। बॉस अपने दुबले-पतले और घिनौने सहायक की ओर मुड़ा और बोला: — “उसका कार्ड तैयार करो। उसे कॉलर पर पहनने को दो। एक नाम चुनो और उस पर लिख दो।” दुबले-पतले चीनी आदमी ने डेस्क के कोने से देखा और जवाब दिया: — “हमारे पास नहीं है।”
अभी तक येलो कार्ड नहीं मिला। चलो उसे अस्थायी तौर पर ब्लू कार्ड दे देते हैं।
बॉस ने सहमति में सिर हिलाया। और उसी क्षण, मुझे पहली बार पता चला
कि उन कार्डों का असल मतलब क्या था—कि कैसे वे इस शापित शिविर में लोगों को रंगों के आधार पर वर्गीकृत और श्रेणीबद्ध करते थे।
इस पदानुक्रम में, रंग केवल पहचान के लिए नहीं थे—वे जीवन
और मृत्यु के बीच की सीमाएँ थे। आपने इसे बिल्कुल सही ढंग
से समझाया है:
⬛ ब्लैक कार्ड — निरंकुश शासक (बॉस):
वे इस नरक के देवता थे। किसी की हिम्मत नहीं होती थी उनके
पास जाने की, उनसे बात करने की, या यहाँ तक कि उनकी निगाहों
से नज़र मिलाने की भी। जीवन और मृत्यु की शक्ति उनके हाथों
में थी।
□ रेड कार्ड — पर्यवेक्षक (प्रबंधक): लोग

□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□

□ □□□□ □□□□□ — □□□□□□□□: □□□□□□ □□

□□ “□□□□□” □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ “□□□□” □□ □□□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□—□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

□ □□□□ □□□□□ — □□□□□□□□□□ (□□□□□):

□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□□□□□ □□□□ “□□□□” □□□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□□□, □□□□□□□□ □□□… □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□, □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□… □□□□□□□□ □□□□ □ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□-□□□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□: — “□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□… □□□□ □□ □□□□□□ □□□□? □□ □□□□□! □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□”

□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□

म्यांमार से पलायन

जहां मुझे ठहरना था। वह दो मंजिला इमारत थी जिसमें बालकनियाँ थीं, लेकिन अंदर लोगों की भीड़ के कारण घुटन महसूस हो रही थी। कमरे का दरवाजा खुलते ही, चारपाइयों की गंध, हवा की कमी और उदासी का वह अजीब सा एहसास फिर से मुझ पर छा गया। 8-10 लोगों के लिए एक कमरा... चारों ओर बिखरी हुई अनजानी चीजें और अनजानी जिंदगियाँ।
— “यह तुम्हारा बिस्तर है। सो जाओ, आराम करो। कल हम तुम्हारी ज़रूरत का सामान खरीद लेंगे। तुम्हारे सहकर्मी अभी काम पर हैं; उनके लौटने पर तुम उनसे मिलोगे। कल तैयार रहना!” — उसने कहा, फिर दरवाजा बंद किया और चला गया।
कमरे में मैं अकेली रह गई थी। मैं चारपाई के किनारे पर बैठ गई। मैंने अपने कॉलर पर लगे नीले कार्ड को देखा: "मैडो"। मैंने मन ही मन सोचा: "तो, आज रात के बाद, मैं मैडो बनकर जागूंगी।"
छात्रावास की गहरी खामोशी ने मुझे एक ही बात फुसफुसाई: कल से असली जंग शुरू हो रही है। एक ऐसी जंग जिसमें न सिर्फ जीवित रहना है, बल्कि अपनी पहचान को भी खोना नहीं है।

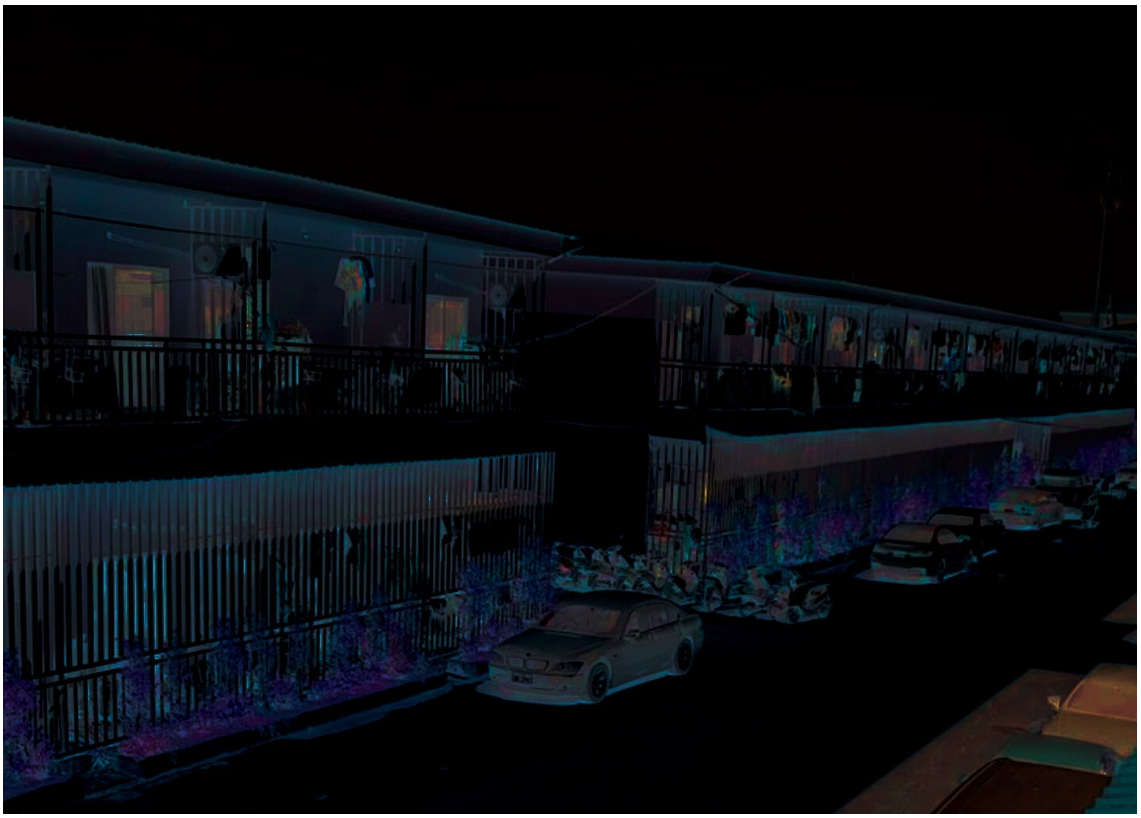

कैद में : चौथा दिन

* * *

म्यांमार से पलायन

जब मुझे छात्रावास में रखा गया, तो सबसे पहले मैंने यही देखा कि यह पिछली कोठरी से कहीं ज़्यादा साफ़ थी, जो मल-मूत्र और खून की बदबू से भरी थी। लेकिन जहाँ मेरा शरीर नरम बिस्तर पर आराम कर रहा था, वहीं मेरी मानसिक स्थिति पूरी तरह से बिगड़ चुकी थी। मेरे दिमाग में उथल-पुथल मची हुई थी। शांति... अब मेरे लिए असहनीय विलासिता बन चुकी थी।
दोपहर में अचानक शोरगुल से मेरी नींद खुल गई। बंदी बनाए गए मजदूर कमरे में घुस रहे थे। थकावट, भूख और तनाव मुझ पर हावी हो रहे थे। मैं दरवाजे के पास वाले पलंग पर सो रहा था। उसी क्षण, मेरे भीतर का ज्वालामुखी फट पड़ा। अचानक ही मैं खड़ा हो गया और दरवाजे पर इतनी जोर से लात मारी कि उसकी आवाज पूरी इमारत में गूंज उठी। मैंने उसे पूरी ताकत से बंद किया और बिना किसी की ओर देखे वापस अपने बिस्तर पर लेट गया। कमरे में मौजूद सभी लोग स्तब्ध रह गए। यह नया आदमी कौन था? वह इतना गुस्से में क्यों था? किसी को कुछ समझ नहीं आया।
मैं फिर से सो गया, लेकिन मेरे सपने भी मेरी ही तरह ज़ख्मी थे। मैं बुरे सपनों में डूब रहा था। अचानक, अपना आपा खोकर, मैं पूरी ताकत से चीखा और झटके से जाग गया। मैं पसीने से भीगा हुआ था। कमरे में मौजूद बाकी लोग अब मुझे हैरानी से नहीं देख रहे थे; वे मुझे ऐसे देख रहे थे मानो मैं कोई "पागल" हूँ। वे समझ नहीं पा रहे थे कि मेरी आत्मा ने इस जगह तक पहुँचने के लिए किन-किन नरकों को पार किया है।
मैं उठ खड़ी हुई, मुझे पता था कि वो चिड़चिड़ा, दुबला-पतला चीनी आदमी जल्द ही मुझे लेने आ जाएगा। मैंने खुद को संभालने के लिए नीचे जाकर अपने रूममेट्स के साथ स्थिति को थोड़ा नरम करने का फैसला किया। मैं उनके पास गई और थकी हुई आवाज़ में बोली: — “मुझे माफ़ कर दीजिए… मैं बहुत परेशान हूँ। अगर आपको पता होता कि मेरे साथ क्या हुआ है, तो आप समझ जाते।”
उनके चेहरों पर उदासी के भाव एक जैसे थे। उन्होंने सिर हिलाया: — “हाँ, कोई बात नहीं। हम सब एक ही जैसी परिस्थितियों से गुज़र रहे हैं,” उन्होंने कहा। — “लेकिन यहाँ सबसे ज़रूरी है अपने आप पर काबू रखना। आपको शांत रहना होगा, नहीं तो वे आप पर हावी हो जाएँगी।”

कैद में: चौथा दिन

हम तुम्हें अंग माफिया को बेच देंगे।"
उस पल मेरा पूरा शरीर बर्फ़ जैसा ठंडा पड़ गया। ऐसा लगा जैसे मेरी नसों में खून जम गया हो। मुझे शांत करने के लिए कहे गए वे शब्द तीर की तरह मेरे दिल में चुभ गए। उनमें से एक ने अपनी आवाज़ और धीमी कर दी और मेरे कान में एक ऐसी सच्चाई फुसफुसाई जिसने मेरी सांसें रोक दीं: — “हमारे साथ आए लोगों में से एक ने चुपके से एक तस्वीर खींची और उसे साझा कर दिया। जैसे ही उन्हें पता चला, वे उसे ले गए… उन्होंने उसे सीधे अंग माफिया को बेच दिया। उसके बारे में फिर कभी कुछ पता नहीं चला। और न ही कभी पता चलेगा।”
उसने मेरी आँखों में देखा, और उस निगाह में हज़ारों भटकी हुई आत्माओं की कहानियाँ समाई हुई थीं: — “इसलिए चुप रहो। अपना सिर नीचे रखो और सहन करो। यहाँ कोई और रास्ता नहीं है।”
उस पल मुझे एहसास हुआ कि मैं सिर्फ धोखेबाजों के चंगुल में ही नहीं फंसा था; मैं एक मौत के कारखाने में था। और हर गलत कदम मुझे सिर्फ मार ही नहीं डालता, बल्कि मुझे टुकड़े-टुकड़े कर देता जब तक कि मैं पूरी तरह गायब न हो जाता।

* * *

मेरे रूममेट, भारतीय, एक-एक करके अपने-अपने बिस्तरों पर चढ़ गए। उनके चेहरों पर थकावट के अलावा और भी बहुत कुछ था; एक तरह की सुन्नता थी। यहाँ समय उल्टा चल रहा था। काम की शिफ्ट रात 10:00 बजे शुरू होती थी और अगले दिन दोपहर 3:00 बजे तक चलती थी। पूरे 17 घंटे... एक ऐसा शेड्यूल जिसमें सिर्फ एक घंटे का ब्रेक मिलता था, जो इंसान को रोबोट, सिर्फ मांस और हड्डियों का ढेर बना देता था। तब मुझे एहसास हुआ कि यहाँ लंबे समय तक रहना सिर्फ मानसिक पतन ही नहीं था; इसका मतलब था बीमार पड़ना और पूरी खामोशी में मर जाना।
वह चिड़चिड़ा चीनी आदमी परछाई की तरह फिर प्रकट हुआ। वह मुझे शिविर के अंदर बाजार ले गया। उसने मेरे लिए एक धातु खरीदी।

म्यांमार से पलायन

एक प्लेट और एक चम्मच। फिर एक तौलिया, एक टूथब्रश और टूथपेस्ट… सब कुछ एकदम बुनियादी स्तर का था, बस इतना ही काफी था जिससे मैं ठीक-ठाक काम कर सकूं।
— “ये लो। आज रात इन्हें पहनकर खाना खाने जाओ, और फिर सीधे काम पर! देर मत करना!” — उसने मुझे छात्रावास में छोड़कर कहा।
कमरे में बैठकर अपने रूममेट्स के जागने का इंतज़ार करते हुए मुझे पता चला कि हमारे फ़ोन गार्ड के कमरे में कैद करके रखे गए थे। हमें उन्हें इस्तेमाल करने के लिए दिन में सिर्फ़ आधा घंटा ही दिया जाता था। वे ऐसा दया भाव से नहीं करते थे; वे ऐसा इसलिए करते थे ताकि हम अपने परिवारों से बात कर सकें, "प्रेरित" रह सकें और अंततः उनके लिए ज़्यादा पैसे कमा सकें। हर चीज़ गणितीय सटीकता से तय की जाती थी। हर हँसी, हर आँसू, हर साँस उनके नियंत्रण में थी।
मैंने अपने हाथ में रखी धातु की थाली और चम्मच को देखा और सोचा: इस बर्बर व्यवस्था में, मुझे खुद को बचाना भी था और ऐसा दिखाना भी था जैसे मैं इनके साथ तालमेल बिठा रहा हूँ। क्योंकि यहाँ जीवित रहने का एकमात्र तरीका यही था कि अपने दुश्मन की तरह दिखो और अपने मौके का इंतज़ार करो।

काम का पहला दिन

रात के 9:30 बज रहे थे… यह महज़ शाम का समय नहीं था; यह दमनकारी मशीन के चलने का उलटी गिनती का समय था। हर कोई दहशत में था; आपको आधे घंटे के भीतर वह घिनौना खाना निगलना था और रात 10:00 बजे तक अपने स्टेशन पर पहुंचना था। यहाँ समय जीवन और मृत्यु के बीच की एक पतली रेखा थी: गार्ड एक मिनट भी देर करने वाले को कुत्ते की तरह पकड़ लेते और सबके सामने तब तक पीटते जब तक उसकी हड्डियाँ दुखने न लगें। ये मेरे शुरुआती दिन थे; डर मेरी रगों में दौड़ रहा था, और हर चीज़
इस फिल्म ने मेरी मानसिक स्थिति की सीमाओं को परख दिया।
मेरे एक भारतीय रूममेट ने मुझे रास्ता दिखाया। हाथ में ठंडी धातु की प्लेट और चम्मच लिए, अपने कॉलर कार्ड को ठीक करते हुए— वह नीली मुहर जो कैद की निशानी थी—हम कैंटीन की ओर चल पड़े। अगर आपके पास कार्ड नहीं है, तो आपका कोई अस्तित्व नहीं है; अगर आपके पास कार्ड नहीं है, तो रोटी का एक टुकड़ा भी आपके लिए वर्जित है।
कैंटीन में घुसते ही मैंने जो दृश्य देखा, वह मानवता की त्रासदी थी। चीनी, रूसी, इंडोनेशियाई, मलेशियाई... दुनिया भर से आए लोग यहाँ आकर बस गए थे। सैकड़ों लोग हाथों में बर्तन लिए कतार में खड़े थे। और सबसे भयावह बात यह थी कि उस विशाल भीड़ में किसी के चेहरे पर मुस्कान नहीं थी। सबकी निगाहें खालीपन में गड़ी थीं; चेहरे जमे हुए थे; मानो उनकी आत्माएं शरीर छोड़कर जा चुकी हों।

म्यांमार से पलायन

खाने की बात करें तो, वह बेहद घटिया था। मेरे लिए स्थिति और भी कठिन थी; बर्तनों में सिर्फ़ सूअर का मांस ही पक रहा था। मेरा विश्वास और मेरा अंतर्मन इसकी इजाज़त नहीं दे रहा था, पर मुझे ज़िंदा रहना था। अपनी ऊर्जा बनाए रखने और उन 17 घंटों के अत्याचार को सहने के लिए, मैंने किसी तरह चावल, अंडे और उन बेस्वाद सब्जियों से अपने पेट को संतुष्ट किया।
जब मैंने सिर उठाकर कैंटीन के दूसरी तरफ देखा, तो मुझे न्याय का खून बहता दिखाई दिया। काले और लाल कॉलर कार्ड वाले—वे खून चूसने वाले— शानदार मेजों पर बैठे थे, उन धातु की प्लेटों से बहुत दूर जिन पर हम कुत्ते की तरह दुबके हुए थे। उनके सामने गरमागरम स्वादिष्ट भोजन, फल, मिठाइयाँ और महँगे पेय थे… जबकि हम उस नम और दुर्गंधयुक्त हॉल में जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे थे, वे हमसे कुछ ही कदम दूर हमारी जान की कीमत पर कमाए गए सुखों का आनंद ले रहे थे।
उस क्षण मुझे अहसास हुआ कि जो व्यक्ति यहाँ गिरता है, वह न केवल अपनी स्वतंत्रता खोता है, बल्कि न्याय की भावना और मानवता में विश्वास भी खो देता है। यह विरोधाभास, यह अपमानजनक दृश्य, मेरे हृदय पर पहाड़ की तरह बोझ बन गया।

* * *

उस रात के खाने के बाद, हम कार्यालयों की ओर ऐसे बढ़ने लगे जैसे जानवरों का झुंड कसाईखाने की ओर जा रहा हो। जब मैंने गलियारे में कदम रखा, तो वहाँ का नज़ारा मुझे अंदर तक झकझोर गया: हर जगह अदृश्य, पारदर्शी कांच से घिरे कार्यालय ही कार्यालय थे। बाहर से सब कुछ इतना व्यवस्थित, इतना आधुनिक लग रहा था... लेकिन अंदर फंसे लोग ही जानते थे कि उन कांच के पर्दों के पीछे हज़ारों लोगों की ज़िंदगी कैसे तबाह हो रही थी।
इनमें से प्रत्येक कार्यालय को एक अलग "कंपनी" कहा जाता था। लेकिन यह शब्द महज एक मुखौटा था, एक खेल था। हम सभी अच्छी तरह समझते थे कि ये स्थान जिन्हें वे "कंपनियां" कहते थे, वे वास्तव में एक अलग इकाई थे।

काम का पहला दिन

दरअसल, ये खून के प्यासे माफिया गिरोह थे जिन्होंने दुनिया के कोने- कोने में अपना जाल फैला रखा था। उन्होंने अपने घिनौने कामों को इस नाम के पीछे छिपा रखा था। जिस नरक में हमें धकेल दिया गया था, उसका नाम "रॉकेट" था। ऐसा लगता था मानो यह नाम इस बात का प्रतीक था कि वे लोगों की जेब से बिजली की गति से पैसा चुराकर उसे हवा में उड़ा देंगे।

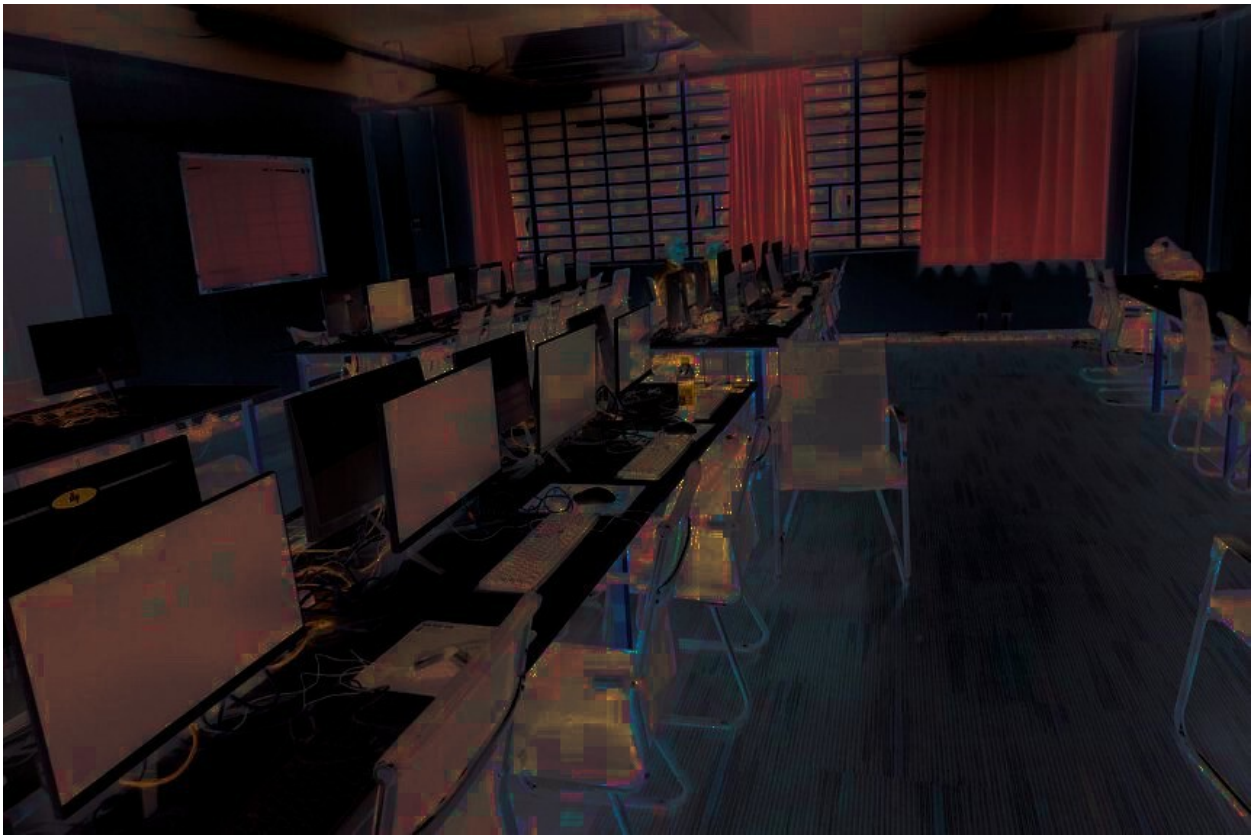

म्यांमार से पलायन

रात के 9:58 बज रहे थे… हम दफ्तर की बालकनी पर खड़े होकर घने जंगल को देख रहे थे, मानो आज़ादी की आखिरी साँसें ले रहे हों। अचानक, एक लंबा- चौड़ा, हट्टा-कट्टा मलेशियाई-चीनी आदमी कमरे में दाखिल हुआ। उसके कॉलर पर लगा लाल कार्ड किसी जल्लाद के बैज जैसा लग रहा था। उसके आते ही सब कुछ सैन्य अनुशासन में बदल गया। उन्होंने हम सबको—सभी नीले कार्ड वालों को—बलि के जानवरों की तरह दफ्तर के बीचोंबीच कतार में खड़ा कर दिया। लाल और पीले कार्ड वाले हमारे सामने गर्व से खड़े थे, हमारी कतारों को देख रहे थे; वे “न्यायाधीश” थे और हम “दोषी”।
उस आदमी ने मुझे लाइन से खींचकर आगे ले आया। कमरे में मौजूद दर्जनों निगाहें मुझ पर टिकी थीं। — “यह नया है। इसके नीले कार्ड को नज़रअंदाज़ करो; यह अनुवादक है। इसका स्वागत करो!”
— उसने गरजते हुए कहा। दर्जनों निराश लोगों की एक साथ "स्वागत है!" चिल्लाने की आवाज़, एक मशीनी स्वर में, मेरे कानों में गूंज उठी। फिर वह मेरी ओर मुड़ा: "तुम भी कुछ बोलो।"
मैंने एक कदम आगे बढ़ाया। मेरा गला सूख रहा था, और मैं अपनी भीतरी नफरत को अपनी आवाज़ में झलकने से रोकने की पूरी कोशिश कर रही थी: —

“मेरा नाम ‘मैडो’ है। मैं अभी-अभी आई हूँ। मैं अनुवादक हूँ। मैं आपमें से कुछ लोगों के साथ एक ही कमरे में रहती हूँ, और बाकी लोगों से धीरे- धीरे जान-पहचान कर लूँगी। अगर आपको कोई समस्या हो, तो मैं मदद के लिए तैयार हूँ।”

काम का पहला दिन

अनुवाद करें... बस इतना ही।
फिर उस हट्टे-कट्टे चीनी आदमी ने अपना “प्रेरणादायक” भाषण शुरू किया। लेकिन यह प्रेरणा नहीं थी; यह दबाव का एक घिनौना रूप था जो किसी व्यक्ति की सबसे पवित्र भावनाओं—परिवार, बच्चे, आज़ादी की चाह—को हथियार बनाकर इस्तेमाल करता था। “तुम एक हफ्ते से पैसे नहीं चुरा पाए! क्या तुम जाना नहीं चाहते?! क्या तुम अपने परिवार, अपने बच्चों को नहीं देखना चाहते?! बैठो और कमाओ! जो कुछ भी तुम चुराते हो उसका आधा तुम्हारा है! कमाओ और आज़ाद हो जाओ!”
कमरे में सन्नाटा छा गया। फिर भयानक रस्म शुरू हुई। सभी ने अपना दाहिना हाथ उठाया और पूरी ताकत से तीन बार चिल्लाए: — “कंपनी के लिए! कंपनी के लिए! कंपनी के लिए!”
सभी अपनी-अपनी सीटों पर बैठ गए। लेकिन उस दिन के बाद, मैं कभी भी आगे नहीं बढ़ा। मैं हमेशा सबसे पीछे खड़ा रहता था। क्योंकि मैं जानता था कि भले ही मेरे पास ब्लू कार्ड हो, मेरे दिल में कभी भी उन पीले या लाल शक्तियों की लालसा नहीं जागेगी। मैं भी उन्हीं की तरह एक कैदी था; मैं उनसे अलग नहीं था। और सबसे महत्वपूर्ण बात... भले ही मेरे होंठ हिले, मैंने कभी भी वह शापित वाक्य नहीं बोला—"कंपनी के लिए!" मैं कंपनी के लिए वहाँ नहीं था; मैं वहाँ बस जीवित रहने के लिए था।

* * *

“कंपनी के लिए!” के उस नारे के बाद मैं जाकर अपनी डेस्क पर बैठ गया। लेकिन यह सिर्फ़ एक डेस्क नहीं थी; यह एक कैदी का कोना था, जिसके हर इंच पर खून से नियम लिखे हुए थे। यहाँ, एक इंसान की ज़िंदगी की कोई कीमत नहीं थी, फिर भी डेस्क के नीचे कुर्सी कैसे रखी है, यह किसी भी चीज़ से ज़्यादा महत्वपूर्ण था। अगर आपको खड़ा होना था, तो आपको उस कुर्सी को डेस्क के नीचे इतनी सफ़ाई से धकेलना था कि उंगली का भी हाथ न लगे।

म्यांमार से पलायन

चौड़ाई बाहर ही रह गई। ऐसा लग रहा था मानो वे सैकड़ों लोगों के तबाह हुए भाग्य की रक्षा नहीं कर रहे थे, बल्कि उन कुर्सियों की व्यवस्था की रक्षा कर रहे थे।
पानी पीना भी डर का कारण बन गया था। अगर आप गिलास का पानी पूरा नहीं पीते और उसे आधा भरा हुआ मेज पर छोड़ देते, तो इसे "नियम का उल्लंघन" माना जाता था। और पानी के उस अधूरे घूंट की कीमत भयानक यातना—क्रूर पिटाई—थी। ये नियम इतने अतार्किक थे कि मानव मन उन्हें मुश्किल से समझ पाता था, फिर भी इनका उद्देश्य आत्मा को तोड़ना था। खैर... नींद की कमी से मेरी आँखें धुंधली हो रही थीं; मुझे ठीक से भोजन नहीं मिला था और मैं अंदरूनी भूख से जूझ रहा था; मैं अपने परिवार, अपने मंगेतर और अपने प्रियजनों से हजारों किलोमीटर दूर था; और मैं हर पल सांस ले रहा था।
मृत्यु के भय के कारण…
इन सभी भारी बोझ के ऊपर, कुर्सी के कोण या पानी की मात्रा जैसी छोटी- छोटी बातों की चिंता करना मेरी इंसानियत को खत्म कर रहा था। और यही उनका मकसद था: आपको ऐसी तुच्छ बातों में डुबो देना कि आपकी आत्मा चूर-चूर हो जाए, आपकी पहचान मिट जाए, और आप महज़ एक बेजान मांस का ढेर बन जाएं जो उनकी आज्ञा मानता रहे। हर चीज़ इतनी कठोर थी कि हर कदम पर "गलती" करने और सज़ा पाने का डर मुझे अंदर से खा रहा था।

* * *

मेरे सामने रखे दस्तावेजों को देखकर मुझे जी मिचलाने लगा। उन्होंने मुझसे कहा, "तीन दिन पढ़ो, फिर परीक्षा दो।" उन्हें लगा कि मैं इस धोखाधड़ी के तरीके को समझने के लिए कई दिनों तक दिमाग खपाऊंगा। लेकिन वे गलत थे। उन दस्तावेजों में मुझे नियम-कानून नहीं दिखे; मुझे तो बदमाशों और दुष्टों द्वारा तैयार किए गए घिनौने टेम्पलेट्स दिखे, जिनमें इंसानों को लूटने के तरीके बताए गए थे।

काम का पहला दिन

मैंने तीन दिन का काम आधे घंटे में निपटा दिया। मेरे दिमाग में सब कुछ स्पष्ट था: लक्ष्य, धोखा, पैसों का हस्तांतरण... ये सब एक खूनी तंत्र के पुर्जे थे।
हालांकि, जब मैं उस डेस्क पर बैठकर पढ़ने का नाटक कर रहा था, मेरी नज़रें तो लिखी हुई पंक्तियों पर टिकी थीं, लेकिन मेरी आत्मा दफ्तर की खिड़की से बाहर लगे कांटेदार तार को नाप रही थी। मेरे मन में बस एक ही सवाल था: मैं यहाँ से कैसे निकलूँ?
व्यवस्था को समझना ही काफी नहीं था; मुझे इस नरक के भूगोल और सीमाओं को भी जानना था। एक पल की जल्दबाजी, एक गलत कदम—इसका मतलब होगा मेरी क्षत-विक्षत लाश उन जंगलों में सड़ रही होगी। मैंने अवलोकन करना शुरू किया:
1. क्षेत्र का सर्वेक्षण करना
2. पहरेदार चौकियों की संख्या गिनना
3. सबसे कमजोर बिंदु का पता लगाना
4. रात में पिकअप ट्रकों के गुजरने का अंतराल
5. मौन के घंटे
6. परिसर के बाहर के खतरे
मैंने धीरे-धीरे सब कुछ अपने दिमाग में बिठा लिया। जब मैंने कहा कि मैंने दस्तावेज़ तैयार कर लिए हैं, तो मैंने बॉस के दफ्तर में लोगों के हैरान चेहरे देखे। उन्होंने मुझसे सवालों की बौछार कर दी। मैंने हर सवाल का जवाब ऐसे दिया जैसे मैं सालों से इस गंदगी के बीच फंसा हुआ हूँ। मैंने बॉस की आँखों में "कीमती कर्मचारी" वाली चमक देखी। उनका भरोसा जीतना ही मेरा सबसे बड़ा हथियार था—जिसका इस्तेमाल मैंने ज़िंदा रहने और आज़ादी का रास्ता खोजने के लिए किया।
और उन दस्तावेजों में छिपी वह "व्यवस्था", जो हजारों लोगों के परिवारों और संपत्तियों को तबाह कर देती है... अब मैं आपको विस्तार से बताऊंगा कि वह व्यवस्था कैसे काम करती है और वे लोगों की भावनाओं से कैसे खिलवाड़ करते हैं, ताकि कोई भी दोबारा इन जालों में न फंसे। यह सिर्फ मेरी कहानी नहीं है; यह एक जाल का पर्दाफाश है।

[illegible] of [illegible]

[illegible] of [illegible] [illegible]

यह प्रणाली कैसे काम करती है

यह खंड अपने आप में एक आपराधिक पाठ्यपुस्तक है। उन्होंने प्रणाली को इस प्रकार तैयार किया था कि कोई खामी न रह जाए। उन्होंने कैदियों को—उन टूटे हुए लोगों को—
निर्दयी आत्माओं—पहले भावनाओं को चुराने का तरीका, फिर पैसे को। उदाहरणों से भरे दस्तावेजों में, हर छोटी से छोटी बात लिखी हुई थी: दूसरे पक्ष का अभिवादन कैसे करें, किस प्रश्न का कौन सा "ईमानदार" उत्तर तैयार करें... तर्क सरल और इतना क्रूर था कि रोंगटे खड़े हो जाएं: पहले उनका विश्वास जीतें, फिर उनका पैसा चुरा लें।
जल्दीबाजी सख्त मना थी। अगर कोई कर्मचारी बहुत जल्दी पैसे वसूलने की कोशिश करता, तो सिस्टम की नज़र में इसे एक बड़ी नाकामी माना जाता था। वे अपने शिकार को डराना नहीं चाहते थे। उनका मकसद दूसरे व्यक्ति का सबसे करीबी दोस्त, विश्वासपात्र या शायद एक काल्पनिक प्रेमी बनना था। लंबे समय तक चलने वाली दोस्ती के जाल बुने जाते थे। कई दिनों, यहाँ तक कि हफ्तों तक, बिना पैसे का ज़िक्र किए, वे रोज़मर्रा के साधारण संदेशों जैसे "आपका दिन कैसा रहा?" या "आपने नाश्ते में क्या खाया?" के ज़रिए उस व्यक्ति के दिल में जगह बना लेते थे। एक बार पूरा भरोसा कायम हो जाने पर, पीड़ित अपने पैरों तले खाई की ओर चल पड़ता था।
प्रत्येक कर्मचारी के सामने दो, कभी-कभी तीन फोन रखे होते थे। सभी फोन के कैमरों को काले टेप से कसकर ढक दिया गया था।

म्यांमार से पलायन

उनके लिए फोन अपनों से बात करने, तस्वीरें लेने या दुनिया को देखने का साधन नहीं था। हर मजदूर के हाथ में मौजूद वो फोन हजारों किलोमीटर दूर निर्दोष लोगों को निशाना बनाने वाले निर्मम हथियार थे। ढके हुए कैमरे इस बात का भी प्रतीक थे कि कैसे उन कैदियों को दुनिया से अलग-थलग कर दिया गया था—कैसे उनकी "आंखें" अंधी कर दी गई थीं।
जब मैं उस डेस्क पर बैठकर इस घिनौनी प्रक्रिया का हर विवरण पढ़ रहा था, तो मुझे उन लोगों के लिए बहुत डर लग रहा था जो इस जाल में फंसेंगे और उन बेचारे कैदियों के लिए भी जिन्हें यह काम करने के लिए मजबूर किया गया था। यह सिर्फ "रॉकेट" नाम की एक कंपनी नहीं थी; यह मानवता के अंतिम अवशेषों को नष्ट करने वाली एक फैक्ट्री थी।

यह प्रणाली कैसे काम करती है

Redmi
tiful flower

ये सब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) द्वारा तैयार किए जाते हैं! वे इन्हें आपके सामने ऐसे खुशहाल व्यक्तियों के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिन्होंने कथित तौर पर निवेश किया है और लाभ कमाया है। लेकिन वास्तविकता में, सब कुछ उन अपराधियों के हाथों में है। वे लाभ को ऐसा दिखाते हैं जैसे वह आपके लिए कमाया गया हो, जबकि वास्तव में वे सीधे आपका पैसा चुरा लेते हैं। ऐसे समूहों से दूर रहें! कोई भी आय आसानी से नहीं मिलती—हमेशा सतर्क रहें।

म्यांमार से पलायन

एक और तरीका है जो ज़्यादा गुप्त और खतरनाक है: आवाज़ की चोरी। कभी- कभी किसी अनजान नंबर से कॉल आती है। आप कॉल उठाते हैं और बस एक-दो शब्द बोलते हैं। बस इतना ही काफी है! आपकी आवाज़ रिकॉर्ड हो जाती है। बाद में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करके आपकी आवाज़ की नकल की जाती है। आपके नाम से आपके रिश्तेदारों और परिवार के सदस्यों को कॉल किए जाते हैं। क्योंकि लोग आवाज़ पहचान लेते हैं, उन्हें शक नहीं होता और जब बहुत देर हो चुकी होती है, तब उन्हें पता चलता है कि उनके साथ धोखा हुआ है।
“चरित्र चयन” — म्यांमार में अपनी कैद के दौरान मैंने इस प्रक्रिया को अपनी आँखों से देखा। कैदियों को विशेष रूप से “चरित्र चयन” के पाठ पढ़ाए जाते थे। वहाँ उन्हें चरण-दर-चरण सिखाया जाता था:
• इंटरनेट पर फर्जी पहचान बनाना।
• किसी की तस्वीर, नाम और दैनिक पोस्ट करने के तरीके की चोरी करना।
• लक्षित व्यक्ति को मनाना।
• उनकी धनराशि और उनकी सभी जानकारी जब्त करना।
उन्होंने न सिर्फ महिलाओं की, बल्कि पुरुषों की भी तस्वीरें चुराईं।
वे सोशल मीडिया पर किसी भी असली व्यक्ति की प्रोफाइल में घुसकर उनकी तस्वीरें डाउनलोड करते और उनका नाम, उपनाम, बायो जानकारी और जीवनशैली — सब कुछ कॉपी कर लेते। फिर, वे उन तस्वीरों का इस्तेमाल करके एक बिलकुल नई, लेकिन असली जैसी दिखने वाली प्रोफाइल बना लेते।
पहले, संवादों का अनुवाद होने के कारण प्रोफाइलों में बहुत सारी टाइपिंग की गलतियाँ होती थीं। लेकिन अब फर्क साफ नज़र आता है—क्योंकि अब उनके पास ऐसे लोग भी हो सकते हैं जो अलग-अलग भाषाएँ जानते हों। अनुवाद की गलतियाँ अब न के बराबर हैं। इसका मतलब है कि… जिसकी भी तस्वीर इस्तेमाल हो रही है, वो आप भी हो सकते हैं। वो कोई भी हो सकता है!
वे फर्जी प्रोफाइल कुछ दिनों तक "प्यारी" पोस्ट करते हैं और फिर फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजते हैं—जैसे खाने की तस्वीरें, कार्यस्थल का माहौल, आदि।

यह प्रणाली कैसे काम करती है

दिन का नजारा... ये सब सिर्फ इसलिए की गई तैयारियां हैं ताकि प्रोफाइल खाली न लगे और आपको इस पर विश्वास हो जाए।
हालांकि आज मैं उन जंगलों से बहुत दूर हूँ, फिर भी मैं देख सकता हूँ कि वही व्यवस्था आज भी वैश्विक स्तर पर कैसे काम कर रही है, कैसे वही जाल आज भी बिछाए जा रहे हैं। उदाहरण के लिए, वैश्विक बाज़ार में आजकल ऐसे समूह मौजूद हैं जिनमें ज़्यादातर महिलाएं हैं। वे कथित तौर पर "निवेश" करती हैं, कथित तौर पर "घर बैठे हज़ारों अमेरिकी डॉलर कमाती हैं"। वे हर दिन आलीशान जीवन की तस्वीरें, कॉफी कप के बगल में रखे नोटों के ढेर और सफलता की कहानियाँ साझा करती हैं।
लेकिन मैं जानती हूँ कि उन तस्वीरों में मुस्कुराती हुई महिलाओं के पीछे कौन सा निर्मम दफ्तर, कौन सा "रॉकेट"-शैली का माफिया गिरोह है। उन समूहों में दिखने वाली अधिकतर "महिलाएँ" असल में अस्तित्वहीन लोग हैं। ये सब फर्जी प्रोफाइल हैं—दूसरे देशों के असली लोगों के सोशल मीडिया अकाउंट से चुराई गई तस्वीरें, नाम और दैनिक जीवन से जुड़ी सामग्री।

बंदी महिलाएं

वहाँ एक महिला के रूप में पहुँचना… मृत्युदंड से भी बदतर था।
पुरुष कैदियों के रूप में, चाहे हमें कितना भी उत्पीड़न सहना
पड़ा हो या कितना भी भय झेलना पड़ा हो,
कम से कम हम दिन के उजाले में उन खूनी गलियारों और कांटेदार तारों के बीच से तो गुजर सकते थे। हमारे लिए एक कदम उठाना अभी भी संभव था। लेकिन एक महिला के लिए... उस इलाके में चलना मौत के बराबर खतरनाक था; हर कदम खाई के समान था।
एक पल के लिए कल्पना कीजिए: आप ऐसे लोगों से घिरी हुई हैं जिनमें पशुवत प्रवृत्ति है, ऐसे लोग जिन्होंने बहुत पहले ही अपनी अंतरात्मा खो दी है, जो दया का नामोनिशान नहीं रखते, और जो बिना पलक झपकाए सबसे जघन्य अपराध कर सकते हैं। और वहाँ, आप एक महिला के रूप में बंदी हैं। लंबे समय तक, मैं अपनी आँखों से जो देख रही थी उस पर विश्वास नहीं कर पाई; मेरा मन इस अपमान को स्वीकार करने से इनकार कर रहा था।
एक दिन मैंने एक युवती को कैंटीन की ओर जाते देखा। सब कुछ पलक झपकते ही घट गया। एक महंगी काली कार उसके सामने आकर रुकी। उस लड़की के चेहरे पर जो डर था, वह आज भी मेरे मन में बसा हुआ है; वह पीछे हटी, छिपने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। दो चीनी आदमी शिकारियों की तरह कार से बाहर निकले; दोनों ने उसका एक-एक हाथ पकड़ा और उसे घसीटना शुरू कर दिया। लड़की न चीख सकी, न भाग सकी... उसकी आवाज गले में ही अटक गई। कुछ ही सेकंड में उसे उस कार में धकेल दिया गया और कार उसे लेकर चली गई।

बंदी महिलाएं
मैंने अपनी आँखों से देखा कि कैसे म्यांमार के जंगलों में अगवा की गई और जबरन लाई गई युवतियों को अमीर "मालिकों" को सामान की तरह बेचा जाता था। कुछ इमारतों की पहली और दूसरी मंजिलें सिर्फ "कार्यालय" नहीं थीं; वे मानव तस्करी के अड्डे थे, बंधन के कमरे जो जबरन यौन गुलामी के अड्डे बन गए थे। उन कमरों में ऐसी महिला कैदी थीं जिन्हें उनके भाग्य के भरोसे छोड़ दिया गया था, जिन्होंने दुनिया से सारी उम्मीदें खो दी थीं... एक "मालिक" आता और बड़ी बेरुखी से महिलाओं को बेचने वाले को गंदे पैसे गिनकर देता। जैसे ही पैसे दिए जाते, वह मालिक अपनी मर्जी से किसी भी शिकार को चुन लेता। उन कमरों के अंदर जो कुछ हुआ वह सिर्फ जबरन यौन गुलामी नहीं थी— वह जानवरों जैसी क्रूरता थी। वे निर्दयी आदमी जिन्हें वे "मालिक" कहते थे, उन बेचारी महिलाओं के साथ जो चाहते थे वो करते थे। किसी ने उन्हें "रुकने" के लिए नहीं कहा, किसी ने उन लड़कियों की चीखों का जवाब नहीं दिया। उन भयानक हमलों और उन महिलाओं को दरवाजे बंद होने के बाद जिस तरह अपमानित किया गया, उसकी कल्पना मात्र से ही रूह कांप उठती है। एक बॉस कमरे में आता, मनचाहा अत्याचार करता, अपनी मर्जी से कुछ भी करता और फिर ऐसे बाहर निकल जाता जैसे कुछ हुआ ही न हो। वहाँ सिर्फ पैसे की ताकत और पशुवत प्रवृत्ति का ही राज चलता था।
उन दृश्यों को देखकर मुझे अंदर से बहुत दुख हुआ। मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकती कि कमरे में लौटते ही मुझे ऐसा लगा जैसे दीवारें मुझ पर गिर रही हों, या वो बंक बेड मेरे लिए ताबूत बन गया हो। बस एक ही विचार मेरे मन में बार-बार घूम रहा था: "अगर मैं यहाँ से नहीं निकली, तो चुपचाप देखते रहने के कारण मैं भी इस शर्मनाक घटना में भागीदार बन जाऊंगी।"
कुछ मामलों में, युवा महिला कैदियों को वयस्कों के प्लेटफॉर्म पर जबरन ले जाया गया। उन्हें कैमरे के सामने सबसे घिनौने कृत्य करने के लिए मजबूर किया गया। यह कथित तौर पर "स्वैच्छिक" काम था, लेकिन उन लड़कियों के जमे हुए भाव और आँखों में व्याप्त भय ने सब कुछ बयां कर दिया। उनकी स्वतंत्र इच्छा का अधिकार छीन लिया गया था।

म्यांमार से पलायन

उन कांटेदार तारों के प्रवेश द्वार पर ही उसे मार डाला गया था।
उन प्लेटफार्मों पर दर्शकों द्वारा भेजे गए "टोकन", पैसे, व्यू काउंट... इनमें से कुछ भी उन महिलाओं तक नहीं पहुंचा। इस तरह की बदनामी और अपमान के बदले में इकट्ठा किया गया हर डॉलर सीधे आपराधिक नेटवर्क, उन शातिर सरगनाओं की जेब में चला गया।
उन दस्तावेजों में सबसे भयावह सच्चाई छिपी थी: उन वेबसाइटों पर दिखाई देने वाली अधिकांश महिलाओं को या तो कर्ज के जाल में फंसाया गया था, ब्लैकमेल किया गया था, या म्यांमार के जंगलों में जबरन अपहरण करके बंधक बनाया गया था। उनके दस्तावेज जब्त कर लिए गए थे; उनके परिवारों से उनका सारा संपर्क तोड़ दिया गया था। अगर वे जरा सा भी विरोध करतीं, तो उन्हें गंभीर यातना या उन कमरों में बैठे सरगनाओं की बर्बरता का सामना करने की धमकी दी जाती थी।
यह कोई "ऑनलाइन मनोरंजन" नहीं है। यह आधुनिक युग की गुलामी का सबसे खामोश और क्रूर रूप है। लोगों को डिजिटल पर्दे के पीछे जिंदा ही सड़ाया जा रहा था। जब भी मैं उन इमारतों के पास से गुज़रती, मुझे उन लड़कियों का दर्द महसूस होता और हर बार मैं खुद से वादा करती: "अगर मैं यहाँ से निकल पाई, तो मैं पूरी दुनिया को इसके बारे में बताऊँगी।"
उस व्यवस्था की क्रूरता की कोई सीमा नहीं थी। वहाँ उन्होंने पुरुष कैदियों को डिजिटल स्कैमर बनाने का एक ऐसा तरीका ईजाद किया था जिसकी कल्पना केवल कोई शैतान ही कर सकता था। अगर कोई पुरुष कैदी बड़ी रकम चुरा लेता था, तो उसे दो दिन का "इनाम" दिया जाता था। उसे उन कुख्यात इमारतों के कमरों में रखा जाता था, जहाँ उसे बढ़िया खाना, पेय पदार्थ और... एक महिला कैदी भी दी जाती थी।
जब वह पुरुष कैदी दो दिन तक "आराम" कर रहा था और उस महिला पर हर तरह की क्रूरता कर रहा था, तब भी वह उसी गुलामी की जंजीरों में जकड़ी घुटती रही। सबसे अधिक शोषित, सबसे अधिक यातना झेलने वाली वे महिलाएं ही थीं। वे उस शिविर में सबसे असुरक्षित, सबसे उपेक्षित और सबसे असहाय प्राणी थीं।

बंदी महिलाएं
मैं जो कुछ भी आपको बता रहा हूँ, वह कोई काल्पनिक कहानी नहीं है। कंबोडिया, लाओस, फिलीपींस, म्यांमार और अन्य क्षेत्रों में स्थापित वे रॉकेट-शैली के कार्यालय हर पल नए शिकार की तलाश में रहते हैं। किसी पर विश्वास न करें! किसी भी बात पर भरोसा न करें! कभी यह न कहें, "मुझे कुछ नहीं होगा, मैं समझदार हूँ, मुझे धोखा नहीं दिया जा सकता।"
इन जगहों पर, एक पल का गलत भरोसा, एक पल की लापरवाही, किसी व्यक्ति के पूरे भाग्य को अंधकारमय कर सकती है और उसे कांटेदार तारों के पीछे उन अंधेरे कमरों में कैद कर सकती है। अपनी रक्षा करो, क्योंकि उन घने जंगलों में न कोई कानून है, न कोई न्याय जो तुम्हारी पुकार सुनेगा।

मेरी भागने की योजना
हर दिन, जब मैं उन बालकनियों पर कदम रखता था, तो मेरी आत्मा का एक
टुकड़ा उन रोते हुए लोगों के साथ मर जाता था। दूसरी बालकनियों
पर, मैंने लोगों को अपने हाथों को अपने सिर पर रखे देखा।
उनके सिर कांप रहे थे, घुटने कांप रहे थे, वे उस यातना कक्ष के भय से इतनी बुरी तरह कांप रहे थे जहाँ उन्हें ले जाया जाने वाला था कि उन्होंने पेशाब कर दिया। यह केवल सजा नहीं थी; यह एक इंसान को मांस के ढेर में बदलने की प्रक्रिया थी।
एक बार, मेरी आँखों के सामने, एक कैदी ने गलती से बॉस के कुत्ते को छू लिया। उसके बाद जो हुआ वह अकल्पनीय था। बॉस हिंसक हो गया, मानो उसके अपने बच्चे को चोट पहुँची हो। उसने उस आदमी को इतना पीटा कि ज़मीन पर केवल एक शरीर ही बचा था—मुँह और नाक खून से लथपथ, बेहोश, और घोर भय से खुद पर काबू पाने में असमर्थ। उन्होंने उसे एक गुजरती हुई पिकअप ट्रक में बेजान वस्तु की तरह फेंक दिया। उन्होंने कहा कि वे उसे जंगल में ले जा रहे हैं, जहाँ वे उसे मार डालेंगे और लाश फेंक देंगे। और मैं बस देखता रहा… मैं जम गया था। उस पल, मुझे एहसास हुआ कि यहाँ एक कुत्ते का जीवन हम सभी के जीवन से कहीं अधिक मूल्यवान है।

* * *

सुबह के 4:00 बज रहे थे… वो समय जब दुनिया के कुछ हिस्सों में लोग

मेरी भागने की योजना

जहां रात के सन्नाटे में लोग गहरी नींद में सो रहे थे, वहीं हम "व्यायाम" के नाम पर नरक जैसी जिंदगी जी रहे थे। कान फाड़ देने वाले संगीत की धुन पर हमें उछलने-कूदने और हिलने-डुलने के लिए मजबूर किया जाता था। नींद की कमी से हमारी आंखें सूजी हुई थीं और भूख से हमारे घुटने कांप रहे थे, लेकिन हम रुक नहीं सकते थे। फिर वे हमें बाहर उस उमस भरे अंधेरे में ले जाते। हमें आधे घंटे तक बिना रुके दौड़ना पड़ता था।
एक बार मैंने दूसरे समूह के एक व्यक्ति को गिरते हुए देखा। उसके फेफड़े जल रहे थे; उसने हाथ से इशारा किया, "रुको, मैं सांस नहीं ले पा रहा हूँ।" लेकिन उस घने जंगल में किसी को दया नहीं आई। दो गार्ड लाठियों से उस पर टूट पड़े। उन्होंने उसे इतनी बेरहमी से पीटा कि उस पल शायद वह दौड़ जारी रखने से ज़्यादा मरना चाहता था। यहाँ तक कि जो लोग बीमार थे और बुखार से तड़प रहे थे, उन्हें भी बिस्तर से घसीटकर उन दौड़ों में धकेल दिया गया।
इस क्रूरता के बीच भागते हुए, मैं अपने पैरों के दर्द को नहीं, बल्कि अपने मन में हर सेकंड को गिन रहा था। हर कदम मुझे उन कांटेदार तारों के करीब ला रहा था, उन पिकअप ट्रकों के आने-जाने के सटीक समय का पता लगाने के करीब। क्योंकि मैं जानता था: या तो मैं यहाँ से बच निकलूँगा, या मैं मर जाऊँगा।

म्यांमार से पलायन

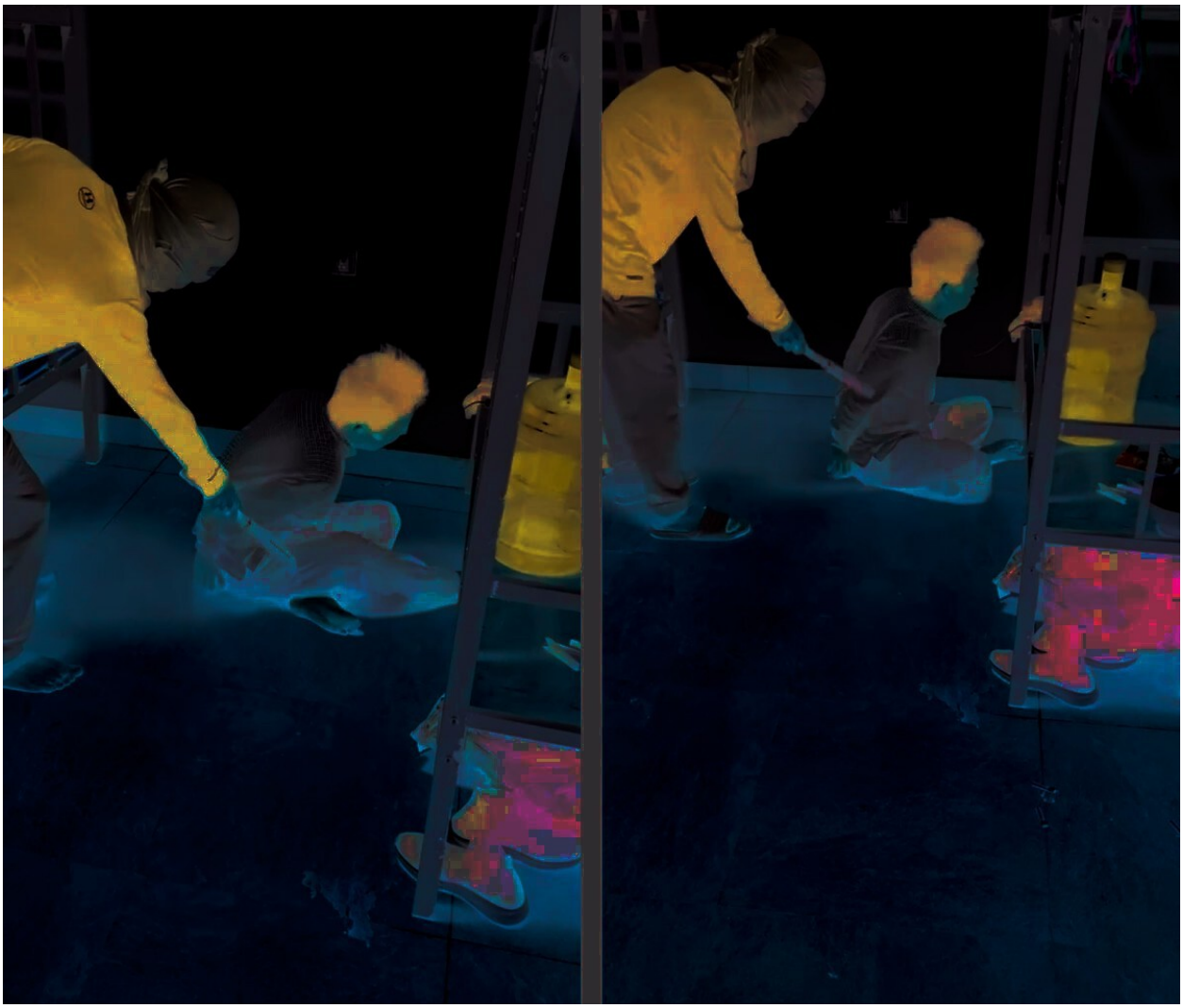

चलिए, मैं आपको उस घटना के बारे में बताता हूँ जो आप उस तस्वीर में देख रहे हैं… यह एक चीनी युवक है जिसे बंदी बना लिया गया है। उसकी माँ को लाइव वीडियो कॉल के ज़रिए उससे जोड़ा जाता है। ज़रा सोचिए, एक माँ को यह सब देखने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है… उसके बच्चे को लाइव प्रसारण में यातनाएँ दी जा रही हैं, पीटा जा रहा है और बिजली के झटके दिए जा रहे हैं। युवक अपनी माँ की आँखों के सामने बार-बार गिर पड़ता है और उठने की कोशिश करता है। उसे पीटा जा रहा है जबकि वह चीख रहा है, उसके हाथ-पैर काँप रहे हैं, हर बार बिजली का झटका लगने पर

उसका शरीर काँप रहा है… और माँ स्क्रीन के दूसरी तरफ़ से बेबस होकर यह सब देख रही है, कुछ भी करने में असमर्थ।
उस समय, उन्होंने उनसे 500,000 चीनी युआन की मांग की—जो लगभग 70,000 डॉलर के बराबर है। लेकिन सबसे दुखद बात यह थी कि चाहे उन्होंने पैसा दिया हो या नहीं, उनके बेटे का भाग्य नहीं बदलता। क्योंकि उनका एकमात्र लक्ष्य पैसा ही था। ऐसी कई कहानियां थीं… मैंने हर दिन जो दर्दनाक दृश्य देखे, यातना की आवाजें—यह

मेरी भागने की योजना

ऐसा लग रहा था मानो ये बातें मेरे दिमाग में छप गई हों। अब इन्हें सहना नामुमकिन था। हर गुजरता पल मुझे भागने के अपने फैसले पर और भी दृढ़ बना रहा था। मेरी योजना आखिरकार तैयार थी; मैंने हर कदम को अपने दिमाग में सौ बार परखा था।
मेरे भीतर की एक आवाज़ ने मुझे बताया कि यहाँ रहना वैसे भी मौत के समान है। या तो मैं एक दिन बीमार पड़कर उपेक्षा से मर जाऊँगी, या मैं इन अत्याचारों से अपना धैर्य खो दूँगी, कुछ कहूँगी, और वे मुझे उन नौजवानों की तरह यातना देकर चुप करा देंगे। मेरे पास दो रास्ते थे: धीरे-धीरे गायब हो जाना, या आज़ादी के लिए सब कुछ दांव पर लगा देना। भाग जाना... ऐसा करने का साहस करना उस पल दुनिया का सबसे भारी बोझ लग रहा था। लेकिन मेरे लिए, यह सिर्फ़ एक विकल्प नहीं था; यह
यही एकमात्र द्वार था जो स्वतंत्रता की ओर खुल सकता था।

* * *

योजना ए: कांटेदार तार
हर दिन, जब मैं उन कांटेदार तारों को देखता, तो अपने मन में एक शतरंज का बोर्ड बना लेता। पहरेदार का हर कदम, खंभे का हर कोण, एक चाल होती। लेकिन एक रास्ता सबसे सरल और छोटा लगता था: तारों पर चढ़कर भाग जाना! एक पल के लिए मैं कल्पना करता—मैं उन कांटेदार तारों को पार करता हूँ, मेरे पैर ज़मीन पर पड़ते हैं, और मैं जंगल के अंधेरे में गायब हो जाता हूँ। लेकिन हकीकत इस सपने से कहीं ज़्यादा क्रूर थी।
हर 50 मीटर पर खड़े खून से सने वो चौकियां... वे सिर्फ खड़े नहीं रहते थे; वे घात लगाकर बैठे शिकारियों की तरह दुबके रहते थे, रात की हल्की सी भी आहट पर नजर रखते थे। मैंने देखा कि अंधेरा होते ही वो पहरेदार पक्षियों की तरह सजग हो जाते थे; छोटी सी टहनी के टूटने की आवाज पर भी विशाल सर्चलाइटें उस आवाज की ओर घूम जाती थीं। उस रोशनी की चपेट में आना सीधे अपनी कब्र में जाने जैसा था।

म्यांमार से पलायन

मेरी भागने की योजना

मान लीजिए मैंने सब कुछ दांव पर लगा दिया... मान लीजिए मैं उन पहरेदार चौकियों को पार कर गया जो हर 50 मीटर पर बनी थीं, जिनकी सर्चलाइटें रात के अंधेरे को चाकू की तरह चीर रही थीं। मान लीजिए कि जब मैं उन कांटेदार तारों पर चढ़ा, तो कोई आवाज़ नहीं हुई, न ही मेरे पीछे से कोई गोली चली। लेकिन फिर क्या? क्या तारों के दूसरी तरफ आज़ादी थी, या उससे भी बड़ा जाल? इस सवाल का जवाब जानने के लिए, मैंने उस चीनी व्यक्ति से बातचीत शुरू की जो सुरक्षा कक्ष में मौजूद था, जहाँ हम हर दिन अपने फोन जमा कराते थे। वह व्यक्ति अपने काम से असंतुष्ट था; उसके चेहरे की थकान से साफ पता चल रहा था कि उसे यह जगह बिल्कुल पसंद नहीं थी। म्यांमार में जन्म होने के कारण वह वहाँ की हर एक जगह से वाकिफ था। चूंकि मुझे चीनी आती थी, इसलिए उसने मुझ पर भरोसा किया और हमारे बीच कुछ इस तरह की बातचीत हुई:
मैंने कहा: “अगर कोई उन कांटेदार तारों को पार कर ले, तो क्या दूसरी तरफ सुरक्षित है? आप यहीं के रहने वाले हैं, आप हर जगह को जानते हैं, मुझे सच बताइए।”
गार्ड ने पहले चारों ओर देखा, फिर अपनी आवाज धीमी करके मेरे सामने एक ऐसी सच्चाई रख दी जिससे मेरा खून जम गया:
गार्ड: “नहीं! वहाँ कोई कानून-व्यवस्था नहीं है। तार पार करते ही आप आज़ाद नहीं हो जाते; आप सीधे गृहयुद्ध के बीच पहुँच जाते हैं। हर तरफ़ हथियारबंद गिरोह भरे पड़े हैं। आपका चेहरा, आपका हाव-भाव, सब कुछ चीख-चीखकर बता देता है कि आप विदेशी हैं। जैसे ही वे आपको देखेंगे, उन्हें पता चल जाएगा कि आप यहाँ के नहीं हैं। वे आपके साथ ऐसे खेल खेलेंगे कि आप यहाँ अपने दिन गुज़ारने की दुआ करेंगे। वे आपको फिर से बेच देंगे, या शायद इससे भी बदतर काम करेंगे। इसीलिए कोई यहाँ से भाग नहीं सकता, कोई भाग ही नहीं सकता।”
वह जवाब सुनकर मेरी योजना 'ए' पूरी तरह से उलट गई। मुझे समझ में आया कि इतने सारे लोग इतनी यातना और इतना उत्पीड़न क्यों सहते हैं, फिर भी कोई भागने की कोशिश क्यों नहीं करता। क्योंकि वे कांटेदार तार सिर्फ हमें अंदर रखने के लिए नहीं थे; वे हमारी "रक्षा" के लिए थे।

म्यांमार से पलायन

हमें बाहर की अनियंत्रित क्रूरता से बचाना है।
वह रास्ता मौत का था। भावनाओं में बहकर उन तारों की ओर दौड़ना, अपने ही पैरों तले एक और जल्लाद के हाथों में खुद को झोंकने जैसा था। मुझे सिर्फ तारों को पार करना ही नहीं था; मुझे एक बिल्कुल अलग, कहीं अधिक समझदारी भरी योजना की ज़रूरत थी जो मुझे उन तारों के पार की अराजक दुनिया में जीवित रहने में मदद करती।
योजना बी: मोई नदी
हर रात, कंप्यूटर के सामने खड़े होकर उस स्क्रीन को घूरते हुए, मैं खुद से एक ही सवाल पूछता था: मैं यहाँ कैसे पहुँचा? जवाब मेरी याददाश्त के सबसे दूर कोने से कौंध गया: नदी पार करके। उस नदी का दूसरा किनारा थाईलैंड था— मेरी एकमात्र उम्मीद। अगर मैं उस पानी को पार कर लेता, तो यह घिनौना नरक खत्म हो जाता। लेकिन उस किनारे तक पहुँचने के लिए, मुझे पाँच बड़ी खाईयों, पाँच अनिश्चित समस्याओं का सामना करना पड़ा।
हर दिन, मैं एक-एक करके हर चीज़ को समझने की कोशिश करता और फिर उसे नए सिरे से जोड़ता। पहला सवाल: मैं नदी तक कैसे पहुँचूँगा? इसका जवाब मेरे आने के तरीके में छिपा था—पिकअप ट्रक से। दूसरा सवाल: मैं ट्रक में कैसे घुसूँगा? इसका जवाब भी मुझे मिल गया था। बारिश से बचने के लिए बनी तिरपाल के नीचे, पीछे की सीट पर भूत की तरह छिपकर। तीसरा सवाल: मैं चुपके से ट्रक तक कैसे पहुँचूँगा? इसके लिए मुझे एक "रेड कार्ड" चाहिए था। वह कार्ड ही छात्रावास और बाहर निकलने के रास्ते के बीच की जंजीरों को तोड़ने की एकमात्र चाबी थी। अगर कोई मुझे रोक लेता, तो मैं कह सकता था, "मैं अस्पताल जा रहा हूँ," और उस लोहे के गेट तक पहुँच जाता। लेकिन मेरे पास वह कार्ड नहीं था... अभी तक।
चौथा और पाँचवाँ सवाल सबसे ज़्यादा पेचीदा थे: मैं रात में कैसे भागूँगी, और मुझे ट्रकों के निकलने का समय कैसे पता चलेगा? दिन में भागना तो आत्महत्या के बराबर था। रात में सब लोग काम पर होते थे, और परिसर खाली होता था। मुझे काम छोड़कर छात्रावास में ही रुकना पड़ता। लेकिन कैसे? और अगर, जैसे ही मैं उस ट्रक में चढ़ी, ट्रक नदी के बजाय कहीं और चला गया… तो मेरी जान ही चली जाती।

मेरी भागने की योजना

कागज़ पर तो योजना सरल लग रही थी, लेकिन हर खामी यातना से मौत का कारण बन सकती थी। मुझे तीन चीज़ों की ज़रूरत थी: रेड कार्ड, सटीक समय और भागने वाले दिन छात्रावास में रहने की अनुमति।
फिर अचानक मुझे यांग की प्रेमिका याद आ गई—वह बर्मी लड़की। उसने मेरी मदद करने का वादा किया था। उसके पास वह रेड कार्ड था, और अगर वह उसे "खो" भी देती, तो उसके लिए नया कार्ड बनवाना आसान था। लेकिन वह क्षेत्र दो भागों में बंटा हुआ था; चीनी और विदेशियों के बीच एक दुर्गम चौकी थी। मुझे यांग के लालच के कारण इस बाधा को पार करना था। यांग एक जल्लाद था जो हर कैदी को बेचकर अमीर बना था। वह मुझसे पहले ही 300,000 युआन (लगभग 42,000 डॉलर) कमा चुका था। मैं उसे एक जाल में फंसाऊंगा: "मुझे एक आदमी मिल गया है, वह दोनों भाषाएँ जानता है और आना चाहता है।" यह झूठ मुझे वहाँ तक ले जाएगा...
उसे, रेड कार्ड को, और ट्रकों के सटीक शेड्यूल को।
फिर भी, सबसे बड़ी दुविधा बनी रही: जिस दिन मुझे भागना था, उस दिन मैं छात्रावास में कैसे रहूँगी? अकेले पीछे रहना मना था। लेकिन तब मुझे नहीं पता था कि ईश्वर मेरे लिए इस द्वार को सबसे दर्दनाक तरीके से खोलेंगे। उस दिन मुझे जो क्रूर यातना सहनी पड़ी, वही वास्तव में मेरे भागने का ज़रिया बन गई। उस यातना की पीड़ा से तड़पते हुए, मुझे इस बात का एहसास नहीं था कि भाग्य मेरी आज़ादी की कहानी लिख रहा था।
मैंने अपना फैसला पहले ही कर लिया था। हर दिन धीरे-धीरे मौत का इंतजार करने के बजाय, मौत की ओर दौड़ना और आजादी पाना ज्यादा तर्कसंगत था।

यातना दिवस

काम खत्म होने के बाद, जब हम अपने कमरों में लौटते थे, तो सन्नाटा
नहीं छाता था; बल्कि, हर किसी का दुख दीवारों से टकराता था। हम
भारतीय श्रमिकों के साथ इकट्ठा होते थे।
उनमें से एक बेचारा आदमी था, दो बच्चों का बाप… वह अपने बच्चों को भूख से बचाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा लेने निकला था, लेकिन अंत में इस घने जंगल के बीचोंबीच एक गुलामों के बाज़ार में पहुँच गया। बीमारी उसे कमज़ोर कर रही थी; उसकी आँखें लगातार क्षितिज की ओर भटकती रहती थीं। लेकिन मालिक ने उससे अपने परिवार के पास बचा आखिरी पैसा भी बेचने की माँग की। हम जानते थे: भले ही वह पैसा मिल जाए, वह बेचारा बाप यहाँ से ज़िंदा नहीं निकल पाएगा।
जब उन्होंने मेरी तरफ देखकर पूछा, “तुम्हारे जैसा व्यक्ति, जो इतनी भाषाएँ जानता है और पूरी दुनिया घूम चुका है, यहाँ कैसे आ गया?” तो मुझे कोई जवाब नहीं सूझा। शायद यही मेरे जीवन की सबसे कठिन परीक्षा थी। लेकिन उन पर दया आने के बावजूद, मैंने अपनी योजना गुप्त रखी। क्योंकि मैं जानता था कि विश्वासघात उन कांटेदार तारों से भी ज़्यादा तेज़ी से जान ले लेता है।
लेकिन मेरा सबसे बड़ा दर्द कमरा नंबर 5 था। वहाँ इथियोपिया की 18 साल की हिजाब पहनने वाली मुस्लिम लड़की रहती थी। उसे कोई भाषा नहीं आती थी; वह बस चुप रहती थी। और हर दिन, वह चिड़चिड़ा चीनी गुंडा आता था... जब वह उस कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर देता था, तो मेरे लिए समय थम सा जाता था। वह उस युवती को जबरदस्ती अपने कब्जे में ले लेता था।

यातना दिवस
लड़की की दबी हुई कराहें, वो बेबस चीख, दीवारों को चीरती हुई सुनाई दी। हर बार जब मैं वो आवाज़ सुनता, तो मेरे अंदर कुछ टूट जाता। मैं उठ खड़ा होना चाहता, दरवाज़ा तोड़कर उस दरिंदे को रोकना चाहता। लेकिन जिन्हें मैं पीछे छोड़ आया था, अज़रबैजान में मेरा परिवार, मेरी माँ... ऐसा लग रहा था जैसे वे मेरा हाथ थामे मुझे "रुक जाओ" कह रहे हों। एक तरफ मेरा ज़मीर खून के आँसू बहा रहा था; दूसरी तरफ, ज़िंदा रहने की ज़रूरत। यह किसी इंसान के लिए सबसे कठिन परीक्षा थी: किसी और के नरक को देखना और अपनी जान बचाने के लिए चुप रहना।
वो कराहें, वो बेबसी, इन सबने तुरंत मेरे भागने की योजना को पक्का कर दिया। मैं इस शापित जगह पर नहीं रुक सकता था।

* * *

हमने अभी-अभी काम खत्म किया था और छात्रावास में बैठकर बातें कर रहे थे। मेरे मन में एक ही सवाल बार-बार घूम रहा था: मैं छात्रावास में कैसे रहूँ? मुझे शांति और एकांत की ज़रूरत थी ताकि मैं तनाव से मुक्ति पा सकूँ, लेकिन मुझे अभी तक कोई रास्ता नहीं मिला था। हमारा दरवाज़ा खुला था।
अचानक, वह चिड़चिड़ा चीनी आदमी फिर से आ गया। गलियारे से गुज़रते हुए उसने हमें देख लिया। वैसे भी हम सब उस आदमी के बर्ताव और व्यवहार से तंग आ चुके थे। वह अंदर घुस आया और हम पर चिल्लाया: “क्या बात कर रहे हो? क्या योजना बना रहे हो? सो जाओ, और आज रात काम पर लग जाओ। अगर मैंने किसी को सोते हुए देखा, तो मैं तुम्हें पीट दूँगा!” वह चला गया और सीधे अफ्रीकी लड़की के कमरे में चला गया।
कुछ ही देर में, दीवारों के दूसरी तरफ से आवाज़ें आने लगीं... ऐसा लग रहा था जैसे लड़की विरोध कर रही हो, उससे दूर भागने की कोशिश कर रही हो। चीनी आदमी की आवाज़ भी सुनाई दी—कठोर, आक्रामक... उसे लड़की पर वार करते हुए साफ़ सुना जा सकता था। वह इतनी ज़ोर से चिल्ला रहा था कि ऐसा लग रहा था जैसे वह उस लड़की को वहीं, उसी कमरे में जान से मार डालेगा।
मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता था। मेरी सहनशक्ति की सीमा समाप्त हो गई थी।

म्यांमार से पलायन

धैर्य रखो। वो कराहें चाकू की तरह मेरे दिमाग में चुभ रही थीं। मैं उठा और दरवाज़ा खटखटाने गया। उसने दरवाज़ा नहीं खोला। इस बार मैंने पूरी ताकत से, ज़ोर से दरवाज़ा खटखटाया।
“अरे, बाहर निकलो!” मैंने चिल्लाकर कहा। उसने दरवाज़ा खोला, उसके चेहरे पर घृणा और हैरानी का भाव था। “क्या बात है?” उसने चिढ़कर पूछा। “बस करो! लड़की को अकेला छोड़ दो। तुम हमारी मानसिक शांति भंग कर रहे हो; शोर के कारण हम सो नहीं पा रहे हैं। हम ऐसे काम नहीं कर सकते, हमसे कुछ उम्मीद मत करो। अगर बॉस को पता चला तो वो बहुत गुस्सा होंगे। इसे बंद करो!”
ऐसा लगा जैसे उस आदमी के सिर पर उबलता पानी डाल दिया गया हो। उसी क्षण मैंने उसकी आँखों में देखा: “एक कैदी… एक गुलाम… इसकी हिम्मत कैसे हुई मुझसे इस तरह बात करने की?” उसने सोचा। “अरे गुलाम, अब मैं तुझे सबक सिखाऊँगा!” वह चिल्लाया: “गार्डो!”
दरवाजे पर तैनात दोनों गार्ड दौड़ते हुए आए। उसने गुस्से में मेरी ओर इशारा करते हुए उनमें से एक से कहा: "इसे मारो!" अपने हाथ में भारी लाठी लिए हुए - जो बेसबॉल बैट जैसी दिखती थी - गार्ड ने पूरी ताकत से मेरे पैर पर वार किया।
वह चोट मेरे बाएं पैर पर, टखने के ठीक ऊपर, मांसपेशी के बिल्कुल पीछे लगी।
हे भगवान… दर्द इतना तेज़ था कि मैं अंदर ही अंदर चीख पड़ी। मेरे कान फटने वाले थे, कानों में घंटियाँ बजने लगीं और पल भर में मेरी आँखें काली पड़ गईं। उस तेज़ दर्द ने मेरे पूरे शरीर को सुन्न कर दिया। मैं लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ी।
मैंने अपने दांत इतनी जोर से भींचे कि मेरे जबड़े में दर्द होने लगा। मैं रेंग रही थी, दर्द से मेरी सांसें अटक रही थीं, मुंह से लार टपक रही थी। दुनिया घूम रही थी, मुझे कुछ सुनाई या दिखाई नहीं दे रहा था... मैं बस उस असहनीय पीड़ा को महसूस कर पा रही थी।
ठंडी आवाज में उसने पहरेदारों से कहा: "इसे ले जाओ।"

[illegible]

यातना दिवस
मेरे टखने से मेरे दिमाग तक चोट लगी। लेकिन उनके लिए मैं इंसान नहीं था; मैं महज़ एक वस्तु, एक चीज़, एक गुलाम था।
वे मुझे उस जगह ले गए जिसे कुख्यात "यातना कक्ष" के नाम से जाना जाता है। कमरे का माहौल अजीब और घुटन भरा था। न पूरी तरह उजाला था, न पूरी तरह अंधेरा... ऐसा लग रहा था मानो मौत की तीखी गंध दीवारों से भी चिपकी हुई हो। गलियारे में कतार से लगे हर दरवाजे के पीछे कोई भयानक राज़ छिपा हुआ महसूस हो रहा था। लेकिन एक कमरे के अंदरूनी हिस्से ने एक ऐसा दृश्य दिखाया जो मेरी यादों से कभी नहीं मिटेगा।
जब मुझे घसीटते हुए ले जाया जा रहा था, तो मेरी नजर एक पल के लिए अंदर की ओर पड़ी।
वहाँ—ठंडी ज़मीन पर बेजान पड़ा हुआ—एक इंसान था। ये शब्द कहते हुए मेरी ज़बान लड़खड़ा रही है; रूह काँप रही है… लेकिन उस शरीर से एक अंग निकाल लिया गया था। ठीक बगल में एक लंबा, गहरा और खून से सना हुआ चीरा था, जैसे किसी चाकू का निशान हो। वो इंसान… चाहे जो भी रहा हो… चला गया था। वो अंग माफिया का शिकार हो गया था।

म्यांमार से पलायन

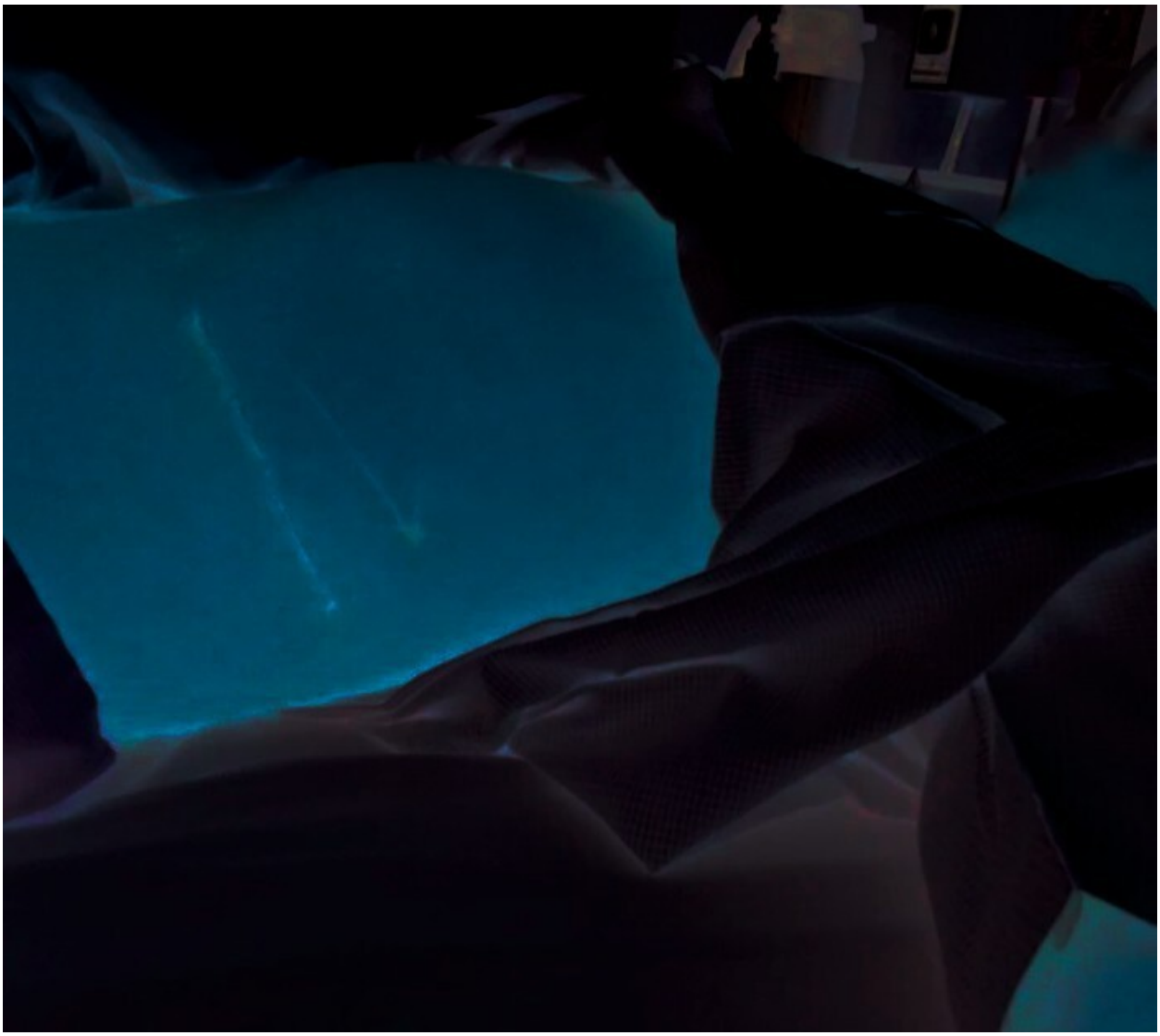

वो व्यक्ति… चाहे जो भी हो… अंग माफिया का शिकार हो गया था। मैंने एक बार वहाँ एक गुप्त रूप से रिकॉर्ड किया गया वीडियो देखा था। वे किसी व्यक्ति को जिंदा रहते हुए ही चीरकर उसके गुर्दे निकाल लेते थे। जी हाँ, ये हैं कड़वी सच्चाई…
और मुझे केवल एक ही बात का एहसास हुआ:
यहां हर किसी को या तो बेचा जा रहा था, पीटा जा रहा था या टुकड़े- टुकड़े किया जा रहा था...

* * *

[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

[redacted]

[redacted] [redacted] [redacted] [

म्यांमार से पलायन

मैं आधी रात तक उसी स्थिति में रहा…
मैंने खुद को सीधा खड़ा रहने के लिए मजबूर किया, मौत के कगार पर खड़े होकर अपने पैरों की उंगलियों के बल लड़खड़ा रही थी। मैंने अपना सारा वजन अपनी सुन्न उंगलियों पर डाल दिया, और उस गहरे पानी में डूबने से बचने के लिए अपने दांत भींच लिए। मेरा पैर इतना सूज गया था कि ऐसा लग रहा था जैसे मेरा

यातना दिवस
त्वचा किसी भी क्षण फट सकती थी... टखने के ऊपर लगी चोट का दर्द ऐसा था मानो मेरी नसें फट रही हों। सामान्य तौर पर, उस पैर पर खड़ा होना असंभव होता— लेकिन मेरे लिए, न खड़ा होना मृत्यु के समान था।
हर पल एक सदी जैसा बीत रहा था; समय मानो थम सा गया था। मेरी शक्ति क्षीण होती जा रही थी, और मेरी आत्मा शरीर से अलग होने के लिए व्याकुल थी। मेरी मांसपेशियां इतनी ज़ोर से कांप रही थीं कि पानी की सतह पर लहरें उठ रही थीं। मेरे पैर की उंगलियां सुन्न पड़ रही थीं, सारी संवेदनाएं क्षीण होती जा रही थीं… मुझे पता था कि बहुत कम समय बचा है। मैं अब और सहन नहीं कर पाऊंगा… जल्द ही, बची हुई आखिरी शक्ति भी समाप्त हो जाएगी, मेरा सिर उस गहरे पानी में डूब जाएगा, और सब कुछ एक पल के सन्नाटे में डूब जाएगा।
दिन के समय, यह नरक इतना गर्म था कि साँस लेना भी मुश्किल था। लेकिन रात में, रूह कंपा देने वाली ठंड छा जाती थी, जो हड्डियों तक को कंपा देती थी... और मैं उस बर्फीले पानी में बेकाबू होकर काँप रहा था। मेरा शरीर जवाब दे रहा था... मेरा दिमाग सुन्न हो रहा था... मेरी नज़र धुंधली हो रही थी। सब कुछ मुझे उस अपरिहार्य अंत—मृत्यु—की ओर ले जा रहा था। जीवन... ऐसा लग रहा था जैसे मेरे हाथों से पानी टपक रहा हो। और मैं कुछ नहीं कर सकता था। लाचारी मेरे अंदर दर्द से भी ज़्यादा जल रही थी।

* * *

आधी रात के सन्नाटे में, ठीक उस आखिरी पल में जब मेरी आत्मा मेरे शरीर से निकलने ही वाली थी, अचानक दरवाजा खुल गया। बॉस, वह चिड़चिड़ा चीनी आदमी, और दो गार्ड अंदर आए। बॉस दफ्तर से लौट आया था, और जैसे ही उसे स्थिति के बारे में पता चला, वह गुस्से से आग बबूला हो गया। उसकी आँखों में बसी ठंडी नफरत ने सबको याद दिला दिया कि इस

म्यांमार से पलायन

कसाईखाने में केवल एक ही शासक था।
कमरे की दीवारों से टकराती हुई बॉस की आवाज़ गूंज उठी, वह शेर की तरह चीनी गुंडे पर दहाड़ते हुए बोला: “बेवकूफ! यहाँ सिर्फ एक ही बॉस है, और वो मैं हूँ! हमें इस अनुवादक की ज़रूरत है; हमारा काम अधूरा रह गया है! मेरी जानकारी के बिना तुमने उस आदमी पर हाथ कैसे उठाया जिसके लिए मैंने इतनी बड़ी रकम खर्च की?! अब तुम नया अनुवादक कहाँ से लाओगे? मैंने उसके लिए 300,000 युआन दिए हैं—मैं तुमसे वो पैसा वापस ले लूँगा! अभी निकल जाओ और अपना पहचान पत्र मुझे सौंप दो!” उसी क्षण, उस चीनी आदमी का घमंडी चेहरा तुरंत पीला पड़ गया, जैसे कफ़न। कांपते हाथों से उसने अपना पहचान पत्र निकाला और उसे आगे बढ़ाया। बॉस ने उसके हाथ से कार्ड छीन लिया, फिर गार्डों की ओर मुड़ा:
“उसे खोलो! अभी!”
उन्होंने मुझे उस बर्फीले ठंडे पानी से बाहर निकाला। मेरा जमा हुआ शरीर मिट्टी की तरह भारी और बेजान लग रहा था। जब उन्होंने मुझे ज़मीन पर लिटाया, तो मेरे हाथ-पैर खोल दिए, लेकिन मैं हिल नहीं पा रहा था। मैं बस साँस लेने की कोशिश कर रहा था।
मेरा पूरा शरीर बुरी तरह कांप रहा था; एक असहनीय ठंड ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया था। जब मैंने अपने बाएं पैर को देखा, तो मेरा खून जम गया: वह इतना सूजा हुआ था कि काला पड़ने लगा था। मेरे भीतर से एक आवाज़ चीखी: “मुझे गैंग्रीन हो रहा है… मैं अपना पैर खोने वाला हूँ…” उस पल जो दर्द मैंने महसूस किया, उसका वर्णन करना असंभव था; ऐसा लग रहा था जैसे मेरी हड्डियाँ ज़िंदा ही पीसी जा रही हों। मेरा शरीर और मेरी आत्मा दोनों असहनीय पीड़ा से तड़प रहे थे।
बॉस मेरे ऊपर खड़े होकर अपना अंतिम आदेश दिया: “इसे इसके कमरे में ले जाओ। इसे खाना-पानी दो। इस आदमी को जल्द ही ठीक होना होगा। हमारे सामने एक बड़ा काम आने वाला है। यह सबसे अच्छा अनुवादक है… और हमें इसकी ज़रूरत है।”
जब उन्होंने मुझे उस ठंडी ज़मीन से उठाया, तो मुझे एहसास हुआ कि मेरी इंसानियत ने नहीं, बल्कि बॉस के लालच और पैसे ने मुझे बचाया था। लेकिन अब मैं अपने कमरे में "सर्वश्रेष्ठ" बनकर नहीं लौट रहा था।

यातना दिवस
अनुवादक”—मैं एक घायल भेड़िये की तरह लौट रहा था जिसने भाग निकलने की कसम खाई थी।

* * *

वे मुझे घसीटकर मेरे कमरे में ले गए। उसके बाद उन्होंने मेज पर खाने की एक थाली, एक गिलास पानी और मेरे पैर के लिए कोई मरहम रख दिया। फिर वे चले गए। बड़ी मुश्किल से मैंने खुद को ज़मीन से उठाया। मेरे पैर में इतना दर्द था कि खड़े रहना भी किसी सज़ा जैसा लग रहा था। मैंने कपड़े बदले और बिस्तर पर बैठ गई। लेकिन मुझे अपनी भूख, प्यास या दिन भर की तकलीफ का कोई एहसास नहीं था... मेरे सारे विचार मेरे पैर पर ही केंद्रित थे। वह एकदम काला पड़ गया था। सूजन इतनी ज़्यादा थी कि लग रहा था जैसे किसी भी पल फट जाएगा। मैंने सोचा... मुझे गैंग्रीन हो गया है। मेरे अंदर एक भयानक डर बैठ गया। मैंने धीरे से खुद से कहा, "मैं भागने वाली थी... सब कुछ तैयार था... फिर भी ऐसा क्यों हुआ?..."
एक पल के लिए ऐसा लगा मानो समय रुक गया हो। मैं बस सोफे के हेडबोर्ड से टिककर छत को घूरता रहा और हताशा से सोचने लगा… मेरे सारे प्लान धराशायी हो गए थे। तभी, दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। इथियोपियाई लड़की अंदर आई। जैसे ही उसने मेरे लौटने की खबर सुनी, वह तुरंत वहाँ पहुँच गई। उसकी आँखों में आँसू भरे थे। बिना कुछ कहे, वह मेरे पास घुटनों के बल बैठ गई, अपनी बाहों को मेरी गर्दन के चारों ओर लपेट लिया और मेरे गाल पर चुंबन किया। उसके हाथ काँप रहे थे।
वह मुझे धन्यवाद दे रही थी... ऐसा लग रहा था कि उस चिड़चिड़े चीनी आदमी से पहचान पत्र छीनकर बॉस ने उसकी सत्ता छीन ली थी। वह दरिंदा अब इस लड़की को छू भी नहीं सकता था। मैं कम से कम एक व्यक्ति के जीवन में थोड़ी सी रोशनी लाने में कामयाब हो गई थी। इस विचार से मेरे अंदर एक अजीब सी गर्माहट पैदा हुई। मुझे थोड़ी सी ताकत मिली; मैंने एक गहरी सांस ली। मानो आशा की एक लौ जल उठी हो।

म्यांमार से पलायन

मेरे भीतर फिर से जागृति आ गई... लड़की झट से खड़ी हुई, मेज से मरहम उठाया और मेरे घुटने के पास बैठ गई। हालाँकि उसके हाथ काँप रहे थे, फिर भी उसने बड़ी सावधानी और कोमलता से मेरे सूजे हुए, काले पड़ चुके पैर पर मरहम लगाना शुरू किया। उसकी उंगलियों के स्पर्श से मानो मैं कुछ पल के लिए दर्द भूल गया।
फिर उसने खाना मेरी तरफ बढ़ाया। लेकिन मैंने अपने हावभाव से उसे जाने का इशारा किया और समझाया कि वह खतरे में है। वह समझ गई। उसकी आँखों में उदासी भरी कृतज्ञता का भाव था और वह कमरे से चली गई। उसके जाने के बाद, गहरी खामोशी छा गई। मैंने खाना अपनी तरफ खींचा। हालाँकि हर चम्मच निगलना मुश्किल था, फिर भी मुझे खाना ही था। पानी का हर घूँट मेरे अंदर मरती हुई ताकत को फिर से जगा रहा था। मैंने खुद से फुसफुसाया: “मुझे अपनी ताकत जुटानी होगी… मुझे खड़ा होना होगा… मैं यहाँ से निकल जाऊँगी।”
उसी क्षण, एक विचार बिजली की तरह मेरे मन में कौंध गया। मैं कमरे में हूँ। मैं काम पर नहीं हूँ। चारों ओर सन्नाटा है। क्या यही... क्या यही मैं नहीं चाहती थी? मैंने एक पल के लिए अपनी साँस रोक ली। ऐसा लगा जैसे मेरे भीतर से किसी ने फुसफुसाया हो: "देखो... यही वह पल है जिसके लिए तुमने प्रार्थना की थी।" तब मुझे एहसास हुआ कि शायद जो यातना मैंने सहन की, मेरे पैर पर लगी चोट, मौत के कगार पर पानी में फेंका जाना... यह सब एक संकेत था। वह पल जब ईश्वर ने मेरे लिए द्वार खोला। मेरी योजना का अंतिम भाग।
अब मेरे पास छात्रावास में रुकने का एक ऐसा कारण था जिस पर कोई आपत्ति नहीं कर सकता था। वे ऐसे किसी व्यक्ति को नहीं रख सकते थे जो काम पर जाने के लिए हिल-डुल न सके। तो... योजना पूरी हो चुकी थी। अब बस भागना बाकी था। मुझे अधिकतम तीन दिन दिए गए थे—यह मेरा आखिरी मौका था। मेरे विचार अचानक तेज हो गए: मुझे फोन लेना होगा, यांग को पत्र लिखना होगा, रेड कार्ड प्राप्त करना होगा और इस नरक से गायब हो जाना होगा। अब कार्रवाई करने का समय था...

आखिरी चाल: भाग निकलना

मुझे कमरे से निकलकर ऑफिस जाना पड़ा। मुझे बॉस से बात करनी थी। मेरे पैर में असहनीय दर्द हो रहा था; हर कदम पर ऐसा लग रहा था जैसे
कोई कील ठोंकी जा रही हो।
यह बात मेरे दिल में बैठ गई थी। लेकिन कोई और रास्ता नहीं था। मुझे यांग से संपर्क करने के लिए अपना फोन वापस लेना ही था—यही मेरा एकमात्र मौका था।
जब मैं छात्रावास से निकल रहा था, तभी एक गार्ड परछाई की तरह मेरे सामने आ खड़ा हुआ। "बाहर जाना मना है।"
मेरे ब्लू कार्ड ने इसकी इजाज़त नहीं दी। मैंने अपनी आवाज़ को दृढ़ करते हुए और एक-एक शब्द को सावधानी से चुनते हुए कहा: “तो बॉस को यहाँ बुलाओ। मेरे पास उनके लिए बहुत ज़रूरी खबर है। अगर मैंने उन्हें अभी नहीं बताया, तो बाद में पता चलने पर तुम्हारे लिए मुसीबत खड़ी हो जाएगी।”
गार्ड एक पल के लिए झिझका, उसकी आँखों में संदेह झलक रहा था। "समझ गया। अंदर जाओ और कमरे में इंतज़ार करो।"
कुछ मिनट अनंत घंटों की तरह बीत गए। आखिरकार, बॉस अंदर आए। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, लेकिन मैंने अपनी आवाज़ में ज़रा भी कंपन नहीं आने दी। शांत और आत्मविश्वास से मैंने कहा: “मुझे मेरा फ़ोन दीजिए। मेरा एक दोस्त है—वह मुझसे भी बेहतर चीनी और अंग्रेज़ी जानता है। वह यहाँ आने के लिए तैयार है। वह थाईलैंड में ही है। वह अनाथ है; कोई उसकी तलाश नहीं करेगा। मैं उसे बता दूँगा, और आप उसे नदी पार ले आएँगे। मेरा फ़ायदा यह है कि अगर मैं उसे ले आऊँगा, तो मुझे भी पैसे मिलेंगे।”
वह जानी-पहचानी, शिकारी जैसी, लालची मुस्कान तुरंत बन गई

म्यांमार से पलायन

बॉस के चेहरे पर खुशी झलक रही थी। उनकी आँखें चमक उठीं। “ठीक है। वे थोड़ी देर में फोन ले आएंगे। देखो, उसे भागने मत देना! अगर उसके जैसे और भी लोग हैं, तो उन्हें भी ले आओ। शाबाश!”
वह चुपचाप बाहर चला गया। जब दरवाजा बंद हुआ, तो ऐसा लगा जैसे मेरे सीने से कोई बोझ उतर गया हो। मैंने राहत की सांस ली। मैं एक कदम और करीब आ गई थी… थोड़ी देर बाद, कमरे का दरवाजा फिर खुला। फोन रखने वाला गार्ड अंदर आया और उसने मुझे फोन थमा दिया। मेरे हाथ कांप रहे थे। वह बिना कुछ कहे चला गया।
यह वापसी का कोई रास्ता नहीं था। मेरा हर कदम इस फोन से जुड़ा हुआ था। मैंने फोन चालू किया... मेरी उंगलियां कांप रही थीं—दर्द और अंदर उमड़ रहे तूफान दोनों से। बिना समय बर्बाद किए, मैंने यांग को लिखा: “हाय यांग, कैसी हो? मेरे पास तुम्हारे लिए एक खबर है। मेरा एक दोस्त है — वह यहीं थाईलैंड में है। वह मुझसे बेहतर अंग्रेजी और चीनी जानता है। वह अनाथ है; कोई उसकी तलाश नहीं करेगा। वह यहां आना चाहता है। मैंने उससे बात की है। क्या तुम दिलचस्पी रखती हो?”
मैं स्क्रीन को घूरता रहा। हर पल एक घंटे जैसा लग रहा था। आखिरकार जवाब आया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था। "यह तो बहुत अच्छी खबर है! वह कब आने वाला है? मैं तुम्हें पैसे दे दूँगा।"
झूठ को विश्वसनीय बनाने के लिए, मैंने जल्दी से टाइप किया: "हमें मिलकर इस बारे में बात करनी होगी। चेकपॉइंट पर उनसे कहो कि मुझे जाने दें ताकि मैं आ सकूँ। उसके भी दोस्त हैं; हमने चीन में साथ पढ़ाई की है। उन्हें कंप्यूटर की अच्छी जानकारी है। शायद वह दो-तीन लोगों को साथ ले आए। मामला गंभीर है।"
यांग ने तुरंत जवाब दिया: "ठीक है। मैं कल दोपहर को आदेश दूंगा। आइए, बात करते हैं।"
मैंने फोन को कसकर पकड़ा और एक पल के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं। मैंने जो कुछ भी कहा, वह झूठ था... मेरा कोई दोस्त नहीं था। मेरा लक्ष्य सरल था, फिर भी खतरनाक था:
1. यांग की प्रेमिका से वह रेड एग्जिट कार्ड प्राप्त करना।

अंतिम चाल: भाग निकलना

2. यांग से पिकअप ट्रक के शेड्यूल के बारे में जानकारी प्राप्त करना। मेरी योजना अमल में आ चुकी थी। कल मेरी आज़ादी की राह की शुरुआत होगी। या फिर मेरा अंत। हाथ में फ़ोन, दिल में उम्मीद और मन में एक ही विचार: मुझे भाग निकलना है।

* * *
* * *
* * *

सुबह हो गई, लेकिन यह सूरज का उदय नहीं था; यह अंधेरा था जिसने मेरी आत्मा पर पूरी तरह कब्ज़ा कर लिया था। जैसे ही मैं जागा, मेरे शरीर ने मेरा साथ छोड़ दिया। वह असहनीय दर्द... ऐसा लग रहा था जैसे हज़ारों चाकू एक साथ मेरी हड्डियों में चुभ रहे हों। मुझे अपने बाएं पैर को देखने से डर लग रहा था; वह अब मेरे शरीर का हिस्सा नहीं, बल्कि एक लाश का टुकड़ा लग रहा था—घोर काला, इतना सूजा हुआ कि त्वचा फटने ही वाली थी। हर हरकत के साथ दुनिया घूमती हुई लग रही थी और मेरी सांस गले में अटक रही थी। लेकिन मेरे अंदर से एक आवाज़ चीखी: "या तो इस दर्द से रेंगते हुए आज़ादी की ओर बढ़ो, या इस बिस्तर पर सड़कर मर जाओ!" मैंने उस ज़ख्मी पैर के साथ नरक से गुज़रना चुना, मौत को चुनने के बजाय।
जब मुझे यांग का "आओ" संदेश मिला, तो मेरी उंगलियां कांप रही थीं। यह सिर्फ एक संदेश नहीं था; यह मेरी मृत्यु का निमंत्रण भी हो सकता था। जब मैं छात्रावास से बाहर निकला, तो सूरज की गर्मी ने मुझे ठंडक नहीं दी, बल्कि

म्यांमार से पलायन

मैंने जो देखा, उसकी निर्मम सच्चाई। उस पल, मैंने अपने खून और आत्मा से महसूस किया कि उन्होंने हमें दूसरों से अलग क्यों किया था। मेरे सामने का दृश्य मानवता का अंतिम गंतव्य था: तारों से घिरा वह आयताकार क्षेत्र... धरती पर नरक का एक नमूना। झुलसा देने वाली 40 डिग्री सेल्सियस की धूप में, वे छाया-मानव— सिर मुंडे हुए, नग्न, भुखमरी से उनकी पसलियां दिखाई दे रही थीं... उन्हें उस भयानक गर्मी में दौड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा था, प्यासे और भूखे। अगर किसी का पैर एक पल के लिए भी फिसल जाता, अगर कोई थकान से गिर जाता, तो उसे लाठियों से इतनी बेरहमी से पीटा जाता... मेरी आत्मा कांप उठी; मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था मानो...
रुक जाओ, इस अत्याचार को सहन करने में असमर्थ।
थोड़ी दूर आगे, सड़क की धूल में बेजान पड़ा हुआ वह भारतीय व्यक्ति था… उसका पैर टखने से टूट चुका था। उसकी आँखों में खालीपन था, उम्मीद की आखिरी किरण भी बुझ गई थी… कोई उसके पास नहीं आया। वह बस वहीं पड़ा था, मानो कोई भूला-बिसरा, त्यागा हुआ “सामान” हो, धूप में तपते हुए मरने का इंतज़ार कर रहा हो। यह सिर्फ एक इंसान की मौत नहीं थी; यह मानवता का अंतिम संस्कार था।
हर कदम के साथ, एक नई चीख, एक नया आघात आग की तरह मेरे दिमाग में बसता जा रहा था। अगर मैंने एक पल के लिए भी खुद को आईने में देखा होता, तो शायद मैं खुद को पहचान ही नहीं पाता। कुछ ही दिनों में मेरे बाल और दाढ़ी सफेद हो गए थे। मैं कुछ ही दिनों में एक जीवनकाल जितना बूढ़ा हो गया था; मेरी आत्मा झुर्रियों से भर गई थी। मुझे एहसास हुआ कि यह जगह नरक नहीं है... नरक इससे कहीं अधिक दयालु, कहीं अधिक न्यायपूर्ण होगा। क्योंकि यहाँ वे आपको मारते नहीं हैं; यहाँ वे आपकी मानवता, आपकी आशा और आपकी आत्मा को, आपके जीवित रहते हुए, टुकड़ों-टुकड़ों में काट कर अलग कर देते हैं।

* * *

आखिरकार, मैं कैसीनो की इमारत तक पहुँच गया। लेकिन इस बार, मेरे कदम

अंतिम चाल: भाग निकलना

मेरा बोझ भारी हो गया था, और मेरी आत्मा और भी थक गई थी।
मेरे अंदर जाने से पहले ही मैंने यांग की प्रेमिका को देखा। हमेशा की तरह, वह कैसीनो के बगल वाले विश्राम मंडप में अकेली बैठी थी। जैसे ही उसने मुझे देखा, वह उछलकर खड़ी हो गई और मेरी ओर दौड़ी, मुझे इतनी कसकर गले लगाया कि ऐसा लगा जैसे वह मेरी हड्डियों में हो रहे दर्द को महसूस करना चाहती हो। जब वह मुझसे अलग हुई और मेरी ओर देखा, तो उसकी आँखें चौड़ी हो गईं; ऐसा लगा जैसे वह मुझे नहीं, बल्कि स्वयं मृत्यु की छाया को देख रही हो। उसकी साँस गले में अटक गई।
“जब मैंने तुम्हें आखिरी बार देखा था तब तुम ऐसे नहीं थे… तुम्हें क्या हो गया है? तुम तो बस आधी आत्मा रह गए हो; तुम तो जैसे कुछ भी नहीं रह गए हो…”
मैंने अपनी नज़रें फेर लीं। उस पल मैं उसे अपने ऊपर हुए अत्याचारों के बारे में, पानी से भरे उस ढोल के अंदर अपनी बेबसी के बारे में, या उन लोगों के बारे में नहीं बता सकती थी जिन्हें ज़िंदा ही टुकड़े-टुकड़े किया जा रहा था। मैंने खोखली आवाज़ में फुसफुसाया:
“यह एक लंबी कहानी है… लेकिन क्या आपको याद है? आपने कहा था कि आप मेरी मदद करेंगे। उस दिन… देखिए, वह दिन आज ही है। क्या आप मुझसे किया हुआ वादा निभा सकते हैं? अभी?”
उसने गहरी सांस ली, और उसकी आँखों में दिखाई देने वाली दुखभरी करुणा
ने एक बार फिर उसकी भक्ति को प्रकट किया। मेरे हाथ पकड़कर उसने कहा:
मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगा। आप यहां देखे गए सभी लोगों से अलग हैं... पहली मुलाकात से ही मेरा दिल आपके लिए धड़क उठा। आपको क्या चाहिए? बताइए। खाना? आपके पैर में इस भयानक सूजन के लिए दवा? या आप अपने परिवार से संपर्क करना चाहते हैं?
लेकिन मैंने सभी औपचारिकताएं, भोजन और दवा को त्याग दिया था। मैं सीधे मुद्दे की बात पर आया, मेरी आवाज कांप रही थी फिर भी दृढ़ थी:
मुझे वो लाल पहचान पत्र दो। लेकिन यांग को पता नहीं चलना चाहिए… तुम कर सकते हो।

म्यांमार से पलायन

कोई बहाना बनाकर अपने लिए एक नया कार्ड ले लो। मुझसे कारण मत पूछो, मैं तुमसे विनती करता हूँ... बस मुझे दे दो। मुझे जीने के लिए उस कार्ड की ज़रूरत है।
उसने जरा भी संकोच नहीं किया। ऐसा लगा जैसे उसे आने वाली विपत्ति का आभास हो गया हो, फिर भी मेरे प्रति उसका लगाव उसके डर पर हावी हो गया। उसने एक पल के लिए भयभीत होकर चारों ओर देखा, फिर अपने गले से लाल कार्ड (मेरी आजादी का टिकट) उतारकर मेरे हाथों में रख दिया।
“इसे ले लो… अगर इससे तुम्हारी जान बच सकती है, तो ले लो। लेकिन बहुत सावधान रहना। अगर तुम इस कार्ड के साथ पकड़े गए… तो समझ लो सब कुछ खत्म हो जाएगा। वे तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर देंगे।”
जैसे ही कार्ड की गर्म प्लास्टिक सतह मेरी उंगलियों से छूई, ऐसा लगा मानो मेरे अंदर जमी बर्फ पिघलने लगी हो। जब वह छोटी सी वस्तु मेरी जेब में समा गई, तो आजादी के दरवाजे पर लगे भारी ताले की आवाज मेरे कानों में गूंज उठी। मेरी आंखों में आंसू भर आए, और मैंने जबरदस्ती एक हल्की सी मुस्कान बिखेरी।
मैं यांग से मिलने जा रहा हूँ; हमारी एक बैठक है।
उसने कहा कि वह छात्रावास लौट रही है और मुझे आखिरी बार गले लगाया, मानो अंतिम विदाई दे रही हो... और फिर वह धीरे-धीरे कदमों से चली गई। जेब में लाल कार्ड का भार लिए, दिल में फूटने को बेताब उम्मीद लिए, और दिमाग में भागने की योजना के अंतिम चरण बुनते हुए, मैं यांग की ओर चलने लगा। मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं बचा था। कल का इंतज़ार करना आत्महत्या के समान था। आज ही वो दिन था—या तो मैं आज़ाद हो जाऊँगा, या फिर इस नरक में विलीन हो जाऊँगा।

* * *

अंततः, मैं यांग के सामने खड़ा था। उसने मुझे उन घमंडी आँखों से देखा, मानो वह सब कुछ जानता हो, लेकिन ऐसा नहीं था।

अंतिम चाल: भाग निकलना

मुझे एहसास हुआ कि जैसे-जैसे मैं उनमें झांकता गया, मैं अपनी आजादी का अपना नक्शा खुद बना रहा था।
“मेरा दोस्त तैयार है,” मैंने अपनी आवाज़ में कंपकंपी को आत्मविश्वास के रूप में छिपाते हुए कहा। “पिकअप ट्रक कब निकलेंगे? मुझे बता दो, ताकि हम उसके आने का समय तय कर सकें। यांग, हम उसे रास्ते में खोना नहीं चाहते। वह हमारे लिए सोने के अंडे देने वाली मुर्गी है।”
यांग ने उस लालची मुस्कान के साथ मुस्कुराया। उसे कुछ भी शक नहीं था; वह बस आने वाले पैसों के बारे में सोच रहा था। "पिकअप ट्रक रोज़ आते-जाते रहते हैं," उसने लापरवाही से कहा। "जब भी वह चाहे मुझसे बात कर ले, मैं गाड़ी का इंतज़ाम कर दूंगा।" मैंने अपनी सांस रोक ली। अब सबसे अहम सवाल पूछने का समय था। मैंने अपनी आवाज़ और भी धीमी कर ली, मानो कोई गहरा राज़ बता रही हो:
और आज रात… क्या वह आज रात आ सकता है?
यांग ने सिर हिलाया। “नहीं… रात में चलने वाली पिकअप गाड़ियाँ सिर्फ़ सामान ले जाने के लिए होती हैं। लोगों को ले जाने वाले ट्रक दिन में चलते हैं। अगर वह कल दिन में आ सके, तो मुझे बता देना।” उसी क्षण मेरे दिमाग में एक विचार कौंध गया। रात में निकलने वाले सामान ढोने वाले ट्रक! वे ट्रक जिनमें लोग नहीं होते, जिन पर कम नज़र रखी जाती है, जो रात के अँधेरे में चुपचाप सरपट चलते हैं… मेरी मुक्ति का रास्ता वहीं था। उन मालवाहक ट्रकों के बीच छिपा हुआ।

* * *

मैं छात्रावास लौट आया। कमरे में प्रवेश करते ही सन्नाटा छा गया। सब सो रहे थे... शायद कल फिर से वो बेचारे लोग, जिन्हें मैं आखिरी बार देख रहा था, उन तारों के बीच धूप में झुलस रहे होंगे। लेकिन मैं नहीं।
मैं बालकनी में बाहर निकला। उन लोगों का नज़ारा

म्यांमार से पलायन

नीचे उस आयताकार जगह में नग्न अवस्था में सोना मेरे दिमाग से नहीं निकल रहा था। मेरे पैर का असहनीय दर्द अब आशा की लौ में बदल गया था। मैं तैयार हूँ...
मेरे भीतर से एक पुकार उठी: “आज या तो तुम्हारी मृत्यु होगी, या तुम मनुष्य के रूप में पुनर्जन्म लोगे!” मुझे अपनी जेब में लाल कार्ड की उपस्थिति का अहसास हुआ। यह महज़ प्लास्टिक का एक टुकड़ा नहीं था; यह मेरा धड़कता हुआ दिल था।
मुझे यह महसूस हो रहा था... यही वो रात थी जब मैं इस नरक से बच निकलूँगा। या तो मैं आज़ादी की खुशबू को अपने फेफड़ों में भर लूँगा, या चुपचाप इस मिट्टी के नीचे विलीन हो जाऊँगा। लेकिन अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं था।

* * *

मजदूर गहरी नींद में सो रहे थे। मैंने तुरंत अपने दोस्त से संपर्क किया; फोन मेरे हाथ में था और मुझे इस मामले को वहीं तुरंत निपटाना था। मुझे पता था कि नदी पार करने के बाद मुझे पैसों की ज़रूरत पड़ेगी। आज़ादी की ओर कदम बढ़ाना एक अनजान राह पर कदम रखना भी था, और यही मेरी एकमात्र उम्मीद थी। मैंने उससे बात की, हर शब्द उस अंधकार से निकलने की बेबसी से कांप रहा
था: “उधार ले लो, जहाँ से भी मिल सके, और उस कार्ड में डाल दो जो मैंने तुम्हें दिया है। तुम्हें कल दोपहर तक उसमें पैसे डालने होंगे। नहीं तो मेरे पास कुछ नहीं बचेगा। समझे? सब कुछ इसी पर निर्भर करता है!” उन्होंने शांत और दृढ़ स्वर में उत्तर दिया: "चिंता मत कीजिए, पैसा कार्ड में स्थानांतरित कर दिया जाएगा।"
उनकी शांत और गंभीर मुद्रा ने मुझे पल भर की राहत दी। बस यूं ही, सब कुछ सुलझ गया था। मैंने आर्थिक पुल बना लिया था, और मेरी आत्मा पहले से ही दूसरी तरफ जाने के लिए बेताब थी। सब कुछ तैयार था।

अंतिम चाल: भाग निकलना

* * *

जब कर्मचारियों के अपनी-अपनी शिफ्ट पर जाने का समय हुआ, तभी बॉस अचानक कमरे में घुस आया। उसकी निगाहें हमेशा की तरह ठंडी और तीखी थीं। उसकी आवाज़ कमरे की गहरी चुप्पी को चीरती हुई चाकू की तरह चुभी: “क्या तुम्हारा दोस्त आ रहा है? मुझे पता है तुमने यांग से बात की थी। उसने कहा था...”
वह कल आएगा।
हालांकि मेरा दिल किसी फंसे हुए पक्षी की तरह धड़क रहा था, फिर भी मैंने अपनी आवाज़ को स्थिर रखने की पूरी कोशिश की। यही मेरे जीवन का झूठ था, और सब कुछ इसी की विश्वसनीयता पर निर्भर था।
“जी हां, वो कल दोपहर को यहां होंगे। वे यांग के साथ समन्वय करेंगे,” मैंने जवाब दिया।
बॉस ने अपनी कठोर निगाहें सीधे मेरी आँखों में गड़ा दीं, मानो मेरी आत्मा में दबी कोई गुप्त योजना पढ़ने की कोशिश कर रहे हों। “तुम्हें काम पर आना होगा। अनुवाद की ज़रूरत है। अपनी शिफ्ट शुरू करो,” उन्होंने आदेश दिया।
उस पल, मेरे पैर का असहनीय दर्द ही मेरा सबसे बड़ा बहाना था और शायद मुक्ति की मेरी आखिरी उम्मीद भी। अपनी आवाज़ में बेबसी भरते हुए मैंने विनती की: “कृपया, मुझे आज यहीं रहने दीजिए। मैं कल तक ठीक हो जाऊँगी और फिर शुरू करूँगी, लेकिन आज दर्द असहनीय है…”
बॉस ने कुछ देर तक मुझे घूर कर देखा। मानो समय थम सा गया हो। आखिरकार, उन्होंने एक फैसला लिया, लेकिन एक शर्त के साथ: “अपना फोन सुरक्षा कक्ष में छोड़ दो। तुम अपने दोस्त को कल चिट्ठी लिख सकते हो। कमरे में अकेले फोन का इस्तेमाल मना है।”
मैंने फोन से जुड़े सारे काम निपटा लिए थे। पैसों का मामला सुलझ गया था, सारे संबंध सुलझ गए थे। मैंने फोन गार्ड को सौंप दिया, उस पर कोई निशान नहीं था। बॉस कमरे से बाहर चले गए और दरवाजा बंद हो गया।
अब कमरे में एक गहरी, असहनीय खामोशी छा गई। लेकिन यह खामोशी तूफान से ठीक पहले का आखिरी पल था। लाल रंग के साथ

म्यांमार से पलायन

मेरी जेब में कार्ड और मेरी आत्मा में पलायन की काली ज्वाला... बॉस को लगा कि उसने मुझे काबू में कर लिया है, लेकिन असल में उसने मुझे मेरी आजादी से पहले के आखिरी 24 घंटे तोहफे में दिए थे।

* * *

अंतिम तैयारियों के दौरान मेरे हाथ कांप रहे थे, लेकिन यह डर से ज़्यादा दृढ़ संकल्प की वजह से था। मैंने अपना पासपोर्ट और बैंक कार्ड—मेरी एकमात्र बची हुई पहचान—एक वाटरप्रूफ थैली में रखा और उसे सावधानीपूर्वक दो बार लपेटा। वह छोटा सा पैकेट अब मेरे लिए दुनिया के सारे खजानों से ज़्यादा कीमती था। मैंने उसे अपनी जेब में गहराई से रख लिया।
फिर मैंने अपने पैर पर नज़र डाली; वह एकदम काला पड़ गया था, सूजन के कारण पहचानना मुश्किल था। वह सीसे के भारी वज़न जैसा लग रहा था। लेकिन मैं रुक नहीं सका। मैंने एक कपड़ा लिया और दांत भींचकर अपने पैर को जितना हो सके कसकर बांध लिया। मुझे पता था कि यह मज़बूत पट्टी जोड़ की गति और हड्डियों के आपस में रगड़ को सीमित कर देगी, जिससे दर्द इतना कम हो जाएगा कि मैं हिल-डुल सकूँ। कपड़े के हर घुमाव के साथ मेरी हड्डियाँ चीख रही थीं; ऐसा लग रहा था जैसे मेरा शरीर मुझसे रुकने की भीख मांग रहा हो। लेकिन अंदर की आवाज़ लगातार आ रही थी: “या तो अभी भाग जाओ, या यहीं मर जाओ, इफ्तिखार!” मैंने अपना सारा सामान कमरे में ही छोड़ दिया। अब उनका मेरे लिए कोई उपयोग नहीं था; वे महज़ मेरी कैद की निशानी थे। मेरा फ़ोन गार्ड के पास ही रह गया। सुबह करीब दो बजे, मैं बालकनी में निकला। जैसे ही ठंडी, उमस भरी रात की हवा मेरे चेहरे से टकराई, मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़कने लगा कि मुझे लगा जैसे मेरी पसलियाँ टूट जाएँगी।
और तभी... घोर अंधेरे में, पिकअप ट्रक की धुंधली, टिमटिमाती हेडलाइट्स दिखाई दीं। जैसे कोई शिकारी सड़क को स्कैन कर रहा हो, वैसे ही वह पश्चिम की ओर बढ़ गया। मैंने अपनी सांस रोक ली। उस पल मानो पूरी दुनिया का बोझ मेरे कंधों पर आ गया हो। एक खामोश फुसफुसाहट मेरे कानों में गूंजी।

अंतिम चाल: भाग निकलना

मेरी आत्मा की गहराई:
"इफ्तिखार को शुभकामनाएं... ईश्वर आपके साथ रहे।"
मैं अंदर वापस चला गया। मैंने वह जादुई लाल कार्ड अपने गले में लटका लिया। मैंने बत्तियाँ बंद कर दीं और अपने बिस्तर को कपड़ों से इस तरह भर दिया जैसे कोई सो रहा हो। मानो मैं अभी भी वहीं हूँ, अभी भी एक कैदी... यह मेरी आखिरी चाल थी।
मैंने दरवाजा खोला। हर कदम धरती के नीचे से एक कराह की आवाज जैसा था। लंगड़ाते हुए, अपने शरीर की हर कोशिका के दर्द को दृढ़ इच्छाशक्ति से दबाते हुए, मैं गार्ड के पास पहुंचा। मेरा दिल इतनी जोर से धड़क रहा था कि मुझे डर था कि कहीं वह सुन न ले। लेकिन वह अपने फोन में इतना मग्न था कि उसने न तो मेरी घबराहट पर ध्यान दिया और न ही मेरी बेकाबू सांसों पर। उसने लाल कार्ड पर एक नजर डाली—लाल रंग रात के अंधेरे में मुक्ति के ध्वज की तरह चमक रहा था। उसने कुछ नहीं कहा; उसने अपना सिर भी नहीं उठाया।
मैं इमारत से बाहर निकला। पहली बार मैंने आज़ादी की ठंडी, दिल दहला देने वाली गंध महसूस की। जैसे ही मैं अस्पताल की ओर रेंगने लगा, मुझे सशस्त्र सैनिकों की एक चौकी मिली। वे शराब पी रहे थे; उनकी हंसी रात के सन्नाटे को चीर रही थी। मुझे अपनी गर्दन पर मौत की आहट महसूस हुई। बिना कुछ कहे, मैंने बस लाल कार्ड की ओर इशारा किया और अपने बुरी तरह घायल पैर की ओर इशारा करते हुए कहा: "अस्पताल..."
उनकी उदासीनता ही मेरे लिए सबसे बड़ा सौभाग्य साबित हुई। वे अपने पेय पीते रहे। मैंने दूसरे खतरे को पीछे छोड़ दिया था। अब मेरा क्या इंतजार कर रहा था? मुझे नहीं पता था। लेकिन मैं कभी वापस नहीं जाने वाला था। मैं अब कांटेदार तार के पीछे छिपा हुआ आदमी नहीं था।

म्यांमार से पलायन

मैं आगे बढ़ा। मैंने ऐसा दिखावा किया जैसे मैं अस्पताल में प्रवेश कर रहा हूँ, लेकिन आखिरी क्षण में, मैंने खुद को बगल में घनी झाड़ियों में फेंक दिया। हालाँकि मेरे पैर पर बंधी पट्टी ने मेरे जोड़ की हरकत को सीमित कर दिया था, फिर भी हर झटके के साथ मेरे भीतर एक खामोश चीख उठ रही थी। लेकिन मुझे चुप रहना पड़ा। दर्द अब मेरा सबसे करीबी दोस्त था — यह मुझे याद दिलाता था कि मैं अभी भी जीवित हूँ।
गेट के पास खड़ी खाली पिकअप गाड़ियाँ जंग लगी आज़ादी की रथों जैसी लग रही थीं। मेरी योजना पक्की थी: मुझे उस सड़क को पार करके लकड़ी के ढेरों के पीछे छिपना था। मैंने गहरी साँस ली और रेंगना शुरू करते ही सीने पर धरती की ठंडक महसूस की। उस पल मैं एक इंसान नहीं था; मैं महज़ जीने की सहज प्रवृत्ति से चलने वाली एक परछाई था। जब आखिरकार मैं लकड़ी के पीछे छिप गया, तो मेरे दिल की धड़कन मेरे कानों में गूंज उठी। मैं यहाँ तक तो पहुँच गया था, लेकिन यह तो अभी आधी यात्रा भी नहीं थी।

[illegible] [illegible] [illegible] [

अंतिम चाल: भाग निकलना

मौत करीब आ रही थी। एक ने पिकअप गाड़ी स्टार्ट की, फिर वे चेकपॉइंट की ओर चल पड़े। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ: यही मेरा आखिरी मौका है।
वह एक मालवाहक ट्रक था—रात का सबसे शांत और सुरक्षित सफ़र। मैंने जोखिम उठाया। अपनी पूरी ज़िंदगी, अपनी आत्मा और अपने दर्द को मुट्ठी में समेटकर, मैं लकड़ी के पीछे से निकला। मेरे पैर का भयानक दर्द ऐसा लग रहा था मानो मेरी नसें टूट रही हों; जैसे ही मेरी हड्डियाँ आपस में रगड़ खा रही थीं, मेरे दिमाग में बिजली सी कौंध गई। लेकिन मैं रुका नहीं। अपनी पूरी ताकत से, मैंने छलांग लगाई और ट्रक के पिछले हिस्से में जा गिरा। मैं बारिश से बचाव के लिए बने तहबंद तिरपाल के नीचे सरक कर छिप गया। सांस लेने के लिए बस थोड़ी सी जगह छोड़कर, मैंने अपने शरीर को पूरी तरह से ढक लिया। ट्रक की धातु की ठंडक, कैनवस की गंध और वह भयानक अंधेरा... मेरा दिल बेतहाशा धड़क रहा था। डर, दर्द, उत्साह और एक कांपती हुई खुशी मेरे अंदर उमड़ रही थी... सब कुछ आपस में उलझा हुआ था।
यह आज़ादी की ओर उठाया गया मेरा अब तक का सबसे जोखिम भरा और खून-खराबे वाला कदम था। अब मैं महज़ एक माल नहीं था; मैं इस नरक से भागती हुई एक आत्मा था। जैसे ही ट्रक ने चलना शुरू किया, मुझे पता चल गया कि अब पीछे मुड़ने का कोई रास्ता नहीं है। या तो वह नदी मुझे बचा लेगी, या यह ट्रक मेरा ताबूत बन जाएगा।

* * *

मुझे आवाजें सुनाई दीं…
सैनिकों ने अपनी रिपोर्ट पूरी कर ली थी और पिकअप ट्रक की ओर लौट रहे थे। उनके हर कदम की आहट मेरे मन में मृत्यु की घंटी की तरह गूंज रही थी। मैंने अपनी सांस इतनी कसकर रोक रखी थी कि ऐसा लग रहा था मानो मेरे फेफड़े फट जाएंगे। वे गाड़ी में चढ़ गए। सौभाग्य से, कोई भी हथियारबंद सैनिक ट्रक के पिछले हिस्से में नहीं चढ़ा—वह अपने उस भयानक हथियार के साथ आगे की सीट पर बैठा रहा।

□□□ □□ □□□□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□

□□□□-□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□:

“□□ □□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□ □□□... □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□... □□□□ □□ □□□□□□□, □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□... □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□!”

□□□ □□□ □□□, □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□! □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□, □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□

□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□—□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□

□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□

□□□□... □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□: □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□, □□ □□□ □ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□

□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □ □□□ □□—□□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□... □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□, □□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□

अंतिम चाल: भाग निकलना

स्वयं मृत्यु।

* * *

और फिर वो आ गया… ट्रक रुक गया। उस पल, ऐसा लगा मानो समय की धड़कन थम सी गई हो। मेरे कानों में बस नदी की तेज़ आवाज़ गूंज रही थी—डरावनी भी और उम्मीद से भरी भी। मुझे पता था कि पल मेरे खिलाफ जा रहे हैं। जिस क्षण सैनिक नाव से सामान उतारना शुरू करते, उस तिरपाल के नीचे की जगह मेरी कब्र बन सकती थी।
मैं इंतज़ार करता रहा… मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था मानो सीने से बाहर निकल आएगा। सैनिकों के भारी बूटों की ज़मीन पर पड़ने की आवाज़ धीमी पड़ गई, और ट्रक के दरवाज़े एक खोखली सी आवाज़ के साथ बंद हो गए। जैसे ही वे नाव की ओर बढ़े, मैंने अपना सारा दर्द, अपना डर और अपना टूटा हुआ शरीर एक तरफ़ रख दिया, और ट्रक के पिछले हिस्से से ज़मीन पर कूद गया। पिकअप ट्रक की हेडलाइट्स ने नाव की ओर जाने वाले रास्ते को ही रोशन किया; मैंने खुद को झाड़ियों के अंधेरे में धकेल दिया, रेंगते हुए, दौड़ने से ज़्यादा।
चांदनी ने मेरा मार्गदर्शन किया। अपने कसकर बंधे पैर पर हर कदम के साथ, मेरी आत्मा मानो मेरे शरीर से अलग हो रही थी, लेकिन मैं रुकी नहीं। नदी के किनारे पहुँचकर, मैंने उस बर्फीले ठंडे पानी में कदम रखा। पानी के स्पर्श ने मेरी साँस रोक दी; यह मेरे गहरे, जलते हुए घावों पर मरहम की तरह नहीं, बल्कि तलवार की तरह चुभा। मैं उथले पानी में ही रही ताकि धारा मुझे बहा न ले जाए, और मैंने खुद को उस शांत, लेकिन खतरनाक बहाव के हवाले कर दिया।
सैनिकों के दूर चले जाने के बाद, मैंने अपनी योजना का सबसे खतरनाक हिस्सा अंजाम दिया: मैं नाव की ओर तैरा और उसके किनारे लटकी बचाव रस्सी को कसकर पकड़ लिया। पानी बर्फ जैसा ठंडा था; मेरा शरीर इतनी ज़ोर से काँप रहा था कि मुझे डर था कि कहीं रस्सी छूट न जाए। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारी। ईश्वर की शरण में, मैं उन गहरे पानी में छिपा रहा। जब आखिरकार पिकअप नाव आई,

म्यांमार से पलायन

नाव के चलते-चलते, दुनिया में बस नाव, दो नाविक और मैं ही रह गए—मैं इस नरक से खुद को निकालने की कोशिश कर रहा था। नाव की रोशनी अंधेरे को केवल सामने से ही चीर रही थी, जिससे मेरी पकड़ी हुई रस्सी धुंधली गहराई में छिपी हुई थी।
आखिरकार नाव किनारे से टकरा गई। मैंने अपनी आखिरी ताकत से रस्सी को तब तक पकड़े रखा जब तक नाविक किनारे से उतरकर चले नहीं गए। जैसे ही वे नज़रों से ओझल हुए, मैं रेंगते हुए ज़मीन पर आ गया…
ठंड से जम कर, पूरी तरह से शक्तिहीन, शरीर की हर कोशिका दर्द से कराह रही थी, मैंने थाई धरती पर कदम रखा—आज़ादी पर। उस पल की भावनाओं को शब्दों में बयां करना मुश्किल है… मैंने उस अनजान धरती को ऐसे गले लगाया, जैसे अपनी माँ की खुशबू को महसूस कर रही हो। मैं अब कोई वस्तु, कोई संख्या या कोई गुलाम नहीं थी। मैं एक इंसान थी।
रेंगते हुए, मैं सरकंडों के घने जंगल में घुस गया। वहाँ, उस अँधेरे और नम आश्रय में, मैं पीठ के बल लेट गया और आकाश की ओर देखा। वे तारे, वह चाँद... अब वे अलग ही चमक रहे थे। और उसी क्षण, मेरे सारे संरक्ष बिखर गए। मैं फूट-फूटकर रोने लगा। ईश्वर ने मुझे नरक की आग से बचा लिया था।
लेकिन उस सन्नाटे में मुझे एक बात समझ आई: हालाँकि मैं उस शिविर से निकल चुका था, लेकिन मैंने जो भयावह दृश्य देखे थे—टूटी हड्डियाँ, नग्न कैदी, उस बेचारे भारतीय व्यक्ति की खाली आँखें, अत्याचार और भी बहुत कुछ— उन्होंने मेरी आत्मा पर जीवन भर के लिए गहरा धब्बा लगा दिया था। मैं आज़ाद तो था, लेकिन मैं फिर कभी वह इफ्तिखार नहीं बन पाऊँगा जो मैं कभी था।
और इस तरह, जिस क्षण मेरी आत्मा और शरीर पूरी तरह से थक चुके थे, मैं अपनी स्वतंत्रता की पहली नींद में डूब गया...

* * *

जब सूरज की पहली किरणें मेरे चेहरे पर पड़ीं, तो मेरी आंखों में जलन होने लगी;

अंतिम चाल: भाग निकलना

मेरी पलकें मानो आपस में चिपकी हुई लग रही थीं। एक पल के लिए, मुझे ठीक से याद नहीं आ रहा था कि मैं कहाँ हूँ, क्या हुआ था, या मैं कैसे बच निकली। ऐसा लग रहा था मानो मेरी आत्मा अभी भी उस बर्फीले ठंडे पानी में लटकी हुई है, उस रस्सी से चिपकी हुई है। फिर अचानक, सब कुछ बिजली की तरह मेरे दिमाग में कौंध गया: मैं अब शिविर में नहीं हूँ। वे भयानक तार, खून की बदबू वाले वे कमरे पीछे छूट गए हैं। मैं थाई धरती पर हूँ। मैं आज़ादी की उस अजीब, फिर भी दिल दहला देने वाली खामोशी में हूँ।
मैंने अपने पैर को देखा और एक कंपकंपी दौड़ गई। ऐसा लगा जैसे वह मेरे शरीर का हिस्सा नहीं, बल्कि किसी मृत मांस का टुकड़ा हो जिसे जबरदस्ती मुझसे चिपकाया गया हो। जब मैंने उसे उंगलियों से छुआ, तो मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ—न दर्द, न ही हल्की सी चुभन। वह बिल्कुल काला पड़ गया था। चूंकि मैं पूरी रात बिना हिले-डुले पड़ा रहा था, सूजन थोड़ी कम हो गई थी, लेकिन मैं जानता था कि यह केवल अस्थायी शांति है। मेरे पहले कदम के साथ ही, वह दर्द एक शिकारी की तरह मेरी हड्डियों में फिर से अपने दांत गड़ा देगा। लेकिन अब पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था। भले ही यह पैर टूट जाए, मुझे इन टूटी हुई हड्डियों पर रेंगते हुए आगे बढ़ना ही था।
मैंने अपनी तैयारियाँ शुरू कर दीं। मैंने अपने पैर से खून से सना कपड़ा हटाया और उसे धूप में फैला दिया। मैंने अपने भीगे हुए कपड़ों को झाड़कर सुखाने की कोशिश की। अपनी बची हुई आखिरी ताकत से मैं आसपास का जायजा लेने के लिए एक पेड़ पर चढ़ गया। हर शाखा के साथ मेरा पैर भारी होता जा रहा था, मानो मुझे नीचे खींच रहा हो। जब मैंने सरकंडों के ऊपर अपना सिर उठाया, तो जो दृश्य मैंने देखा, उससे मेरी सारी उम्मीदें टूट सकती थीं—हर दिशा एक अभेद्य, अंतहीन हरी दीवार से ढकी हुई थी। न कोई सड़क, न ही जीवन का कोई संकेत दिखाई दे रहा था। ऐसा लग रहा था मानो दुनिया में केवल ये दलदली झाड़ियाँ ही हों।
लेकिन उस क्षण, मैंने अपनी स्मृति के कोने में बसी उस छोटी सी बात को थामे रखा:
पिकअप गाड़ी सड़क से उतरकर सीधे नदी की ओर आ गई थी।

म्यांमार से पलायन

रेखा…"
यहाँ कोई मोड़ नहीं थे, कोई घुमावदार रास्ते नहीं थे। इसका मतलब यह था कि अगर मैं नदी से सीधे उसी दिशा में चलता रहूँ, बिना बाएँ या दाएँ देखे, तो मैं उस कच्ची सड़क पर पहुँच जाऊँगा। कल रात मैं मौत को चकमा देकर यहाँ पहुँचा था; आज मुझे इस हरे-भरे नरक को चकमा देकर जीवन में वापस लौटना था।

* * *

मैंने अपने सूखे कपड़े ऐसे ओढ़े जैसे किसी नए जीवन में लिपट रहा हो। मैंने अपना पासपोर्ट और कार्ड—इस दुनिया में मेरे अस्तित्व का एकमात्र प्रमाण—छोटे वाटरप्रूफ पैकेट से निकालकर कांपते हाथों से अपनी जेब में रख लिया। प्यास से मेरे फेफड़े जल रहे थे; हर सांस गले को छील रही थी। मजबूरीवश, मैं रेंगते हुए नदी किनारे वापस गया। मैंने उस गंदे, मैले पानी के कुछ घूंट पिए। स्वाद तो खराब था, लेकिन उस पल मुझे ऐसा लगा जैसे जीवन का जल हो; बस इतना कि मेरा सिर घूमना बंद हो जाए। अब रुकने का कोई रास्ता नहीं था।
नदी की धारा के समानांतर, मैं उन अंतहीन, घनी सरकंडों में घुस गया। हर कदम पर, सरकंडों के नुकीले सिरे मेरे चेहरे और बांहों को काट रहे थे, मानो जंगल मुझे जाने ही न दे। लंगड़ाते हुए, शरीर का एक हिस्सा घसीटते हुए, मैं आगे बढ़ा। सूरज सिर के ऊपर बेरहमी से चमक रहा था, और पसीना मेरी आंखों में भर रहा था, जिससे मेरी दृष्टि धुंधली हो रही थी। मेरी ताकत जवाब दे रही थी; मेरे घुटने किसी भी क्षण जवाब दे सकते थे और मुझे इस दलदल के बीचोंबीच छोड़ सकते थे।
लेकिन मेरे भीतर ऐसी आग थी जिसने सभी शारीरिक पीड़ाओं को दबा दिया। आज़ादी की साँस... भले ही मेरा शरीर टुकड़ों में बँट गया था, भले ही उस काली पड़ी टांग को खोने का डर मेरी आत्मा को झुलसा रहा था, मेरे मन में केवल एक ही विचार घूम रहा था: "मैं अपने परिवार के पास लौटूँगा। मैं उन्हें फिर से गले लगाऊँगा।" यही विचार

अंतिम चाल: भाग निकलना

इसने भारी से भारी बोझ को भी पक्षी के पंख जितना हल्का बना दिया। यह अब पलायन मात्र नहीं था; यह मेरी आत्मा का पुनर्जन्म था।
उस भीषण और खूनी संघर्ष के बाद, शाम ढलते-ढलते, आखिरकार मुझे अपने पैरों के नीचे ज़मीन की मज़बूती का एहसास हुआ। उस कच्ची सड़क को देखकर मेरा मन किया कि मैं घुटने टेककर ज़मीन चूम लूँ। हालाँकि सड़क की धूल मेरे चेहरे और आँखों में भर गई थी, पर यह आज़ादी की धूल थी। उस कच्ची पगडंडी पर चलते हुए मैं आगे बढ़ा और आखिरकार दूर से मुझे डामर की चमक दिखाई दी।
सड़क किनारे खड़ा, पूरी तरह थका हुआ, मैं कुछ गुजरती कारों को देख रहा था। मेरी हालत भयानक थी—बाल और दाढ़ी उलझे हुए थे, कपड़े गंदे थे, और मेरे चेहरे पर मृत्यु और विजय दोनों के निशान थे। एक पिकअप ट्रक धीमा हुआ और मेरे बगल में रुक गया। जब ड्राइवर ने खिड़की नीचे की, तो उसने मुझे ऐसे देखा जैसे कोई कब्र से उठा भूत हो। मुझमें अपनी स्थिति पूरी तरह समझाने की ताकत नहीं थी; मैंने बस टूटे-फूटे शब्दों में मदद मांगी। जैसे ही उसने मेरा चेहरा और वह बदहाल टांग देखी, वह सब कुछ समझ गया। उसने कोई सवाल नहीं पूछा; उसने बस दर्द भरी नज़र डाली और हाथ से इशारा किया: "पीछे बैठ जाओ।" उस पिकअप ट्रक के सख्त धातु के बिस्तर पर गिरते ही मुझे जो दर्द भरी राहत महसूस हुई... गाड़ी के चलने से हवा ने मेरे चेहरे पर बहते आँसू सुखा दिए। शहर पहुँचते-पहुँचते मैं बिल्कुल बदल चुका था।
शहर की जगमगाहट से मेरी आँखें चौंधिया गईं। मेरा पहला काम एटीएम ढूंढना था। कार्ड को स्लॉट में डालते हुए मैंने अपनी सांस रोक ली। "हे भगवान, कृपया... कृपया पैसे जमा हो जाएं," मैंने धीरे से कहा। और जब मैंने स्क्रीन पर वो नंबर देखे, तो मैं अपने आँसू नहीं रोक पाई। पैसे ट्रांसफर हो गए थे। यही दुनिया में मेरी आखिरी उम्मीद थी।
मैंने तुरंत साफ कपड़े खरीदे और कैद के उन खून से सने, कीचड़ से लथपथ कपड़ों को कूड़ेदान में फेंक दिया। एक नया

[illegible], [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अंतिम चाल: भाग निकलना

अगर आप स्वस्थ हैं, तो आपका घर खुशियों से भर जाएगा, और नकारात्मक विचारों के लिए आपके पास कोई बहाना नहीं है। यह समझें कि आपके पास पहले से ही ब्रह्मांड का सबसे बड़ा धन मौजूद है।
याद रखें: आशा ही एकमात्र ऐसा मार्ग है जो व्यक्ति को उसकी मंजिल तक ले जाता है। अगर आज आपको असफलता का एहसास हो रहा है या आप बीच रास्ते में ही अटक गए हैं— तो यकीन मानिए, कल सब कुछ बिल्कुल अलग हो सकता है। वह दिन जरूर आएगा। वह दिन आपको जरूर मिलेगा। बस आपको हार नहीं माननी है।
आज़ादी का आनंद लो। अपनी आत्मा को छोटी-मोटी चिंताओं, व्यर्थ की शिकायतों या तुच्छ भावनाओं से जकड़ो मत। प्रेम करो। यात्रा करो। सीखो। मेहनत करो। कमाओ। क्योंकि इस दुनिया में कोई भी सफलता, कोई भी लाभ आसानी से नहीं मिलता—और अगर मिलता भी है, तो उसका जाना हमेशा तेज़ और अधिक कष्टदायक होता है।
अपनी कीमत पहचानो। क्योंकि इस अनंत ब्रह्मांड में आपसे अधिक अद्वितीय, आपसे अधिक अनमोल कोई नहीं है। और एक बात हमेशा याद रखो: कर्ज में मत पड़ो। क्योंकि उधार लेने की मजबूरी कभी-कभी उसे चुकाने के बोझ से कहीं अधिक भारी पड़ सकती है।
सबसे महत्वपूर्ण बात—खुद से प्यार करो। अपना ख्याल रखो। क्योंकि अगर कभी तुम गिर जाओ, तो उस अंधेरे कोने में सिर्फ एक ही इंसान होगा जो तुम्हारा हाथ थामकर तुम्हें उठाएगा… और वह इंसान, एक बार फिर, तुम खुद ही होगे।

मेरे भीतर कैद के निशान

जब मैं कैद से लौटा, तो मैं वह आदमी नहीं रहा जो मैं पहले
हुआ करता था। मेरी आत्मा और शरीर का नक्शा पूरी तरह बदल
गया था। मेरा पैर टूटा नहीं था, यह सच है,
लेकिन उन लोहे के तारों के बीच बिताया गया हर दिन मेरी हड्डियों में एक ऐसा दर्द भर देता था जिसे ठीक होने में महीनों लग गए। मांस का वह काला, तरल पदार्थ से भरा टुकड़ा मुझे लंबे समय तक खड़े रहने की क्षमता से भी वंचित कर देता था। आज भी, जब ठंड का मौसम आता है, जब मैं कोई भारी बोझ उठाता हूँ, या जब मेरा रास्ता थोड़ा लंबा हो जाता है, तो भीतर से एक धड़कन उठती है—मानो उन दिनों की आत्मा अभी भी मेरे शरीर में भटक रही हो, मुझे याद दिला रही हो कि मैं कहाँ से आया हूँ।
लेकिन सबसे भयानक बात तो यह नहीं थी। सबसे अजीब बात यह थी कि मुझे अब दर्द महसूस नहीं होता था। मेरे शरीर पर लगे प्रहार, शारीरिक घाव, अब पहले की तरह दर्द नहीं देते थे। ऐसा लगता था मानो मेरी आत्मा ने खुद को बचाने के लिए मेरी सारी इंद्रियों को सुन्न कर दिया हो। कुछ ही दिनों में सफेद हो चुके बाल और दाढ़ी उन अंधेरे कमरों में हज़ार साल तक झेली गई बुढ़ापे की पीड़ा के निशान थे।

मेरे भीतर कैद के निशान
आघात की छाया में एक नई दुनिया
भागने का प्रयास तो समाप्त हो गया था, लेकिन मैं अब भी भाग रहा था। लंबे समय तक, मैं रात को नींद में बड़बड़ाता रहता था; हर छोटी सी आवाज़ पर मेरा शरीर स्प्रिंग की तरह अकड़ जाता था। उन भयानक रातों में जब मैं पसीने से भीग कर जागता था, तो मुझे ऐसा लगता था मानो किसी भी पल दरवाज़ा खुल जाएगा और मुझे वापस उस अंधेरे में खींच लिया जाएगा। यह डर मेरे मन में जीवन भर के लिए बस गया, एक स्थायी आघात की तरह।
लेकिन इस अंधकार ने मुझे असाधारण संवेदनशीलता प्रदान की। अब, दुनिया मुझे हजारों अलग-अलग संकेत भेजती है। मैं जमीन से उगने वाली घास की एक साधारण सी पत्ती में जीवन का चमत्कार देखता हूँ। पेड़ से गिरते पत्ते का नृत्य, मेरे चेहरे को छूती हवा, गिरती बारिश की सुगंध, चुपचाप फिसलते बर्फ के टुकड़े... हर एक मेरी आत्मा पर गहरी छाप छोड़ता है। चिमनी से उठते धुएं की गंध में, मैं अतीत की यादें महसूस करता हूँ; हवा की नमी में, मैं आने वाले मौसमों का आभास महसूस करता हूँ।
मैं घंटों तक जानवरों की सहज व्यवस्था और आकाश में बादलों के निरंतर प्रवाह को निहार सकता हूँ। लोगों की दबी निगाहें, उनकी आवाज़ों में कंपन, हर उस वस्तु से मुझ तक पहुँचने वाली गुप्त ऊर्जा... मेरा मन कभी शांत नहीं होता। यह निरंतर विश्लेषण करता रहता है, निरंतर प्रश्न पूछता रहता है। मैं अब केवल दुनिया को देखता ही नहीं, बल्कि अपने शरीर की हर कोशिका से दुनिया को महसूस करता हूँ।
अंधकार से जन्मा सत्य
कभी-कभी बोले गए एक चोट पहुँचाने वाले शब्द, एक नकारात्मक विचार, मेरे भीतर कई दिनों तक पनपते रहते हैं। मेरा दिमाग हर छोटी से छोटी बात को सूक्ष्मदर्शी से देखता है। लेकिन इस अत्यधिक संवेदनशीलता के भीतर एक प्रकाश भी है। मैंने जो कुछ सहा, उसने मुझे समय का दिव्य मूल्य सिखाया। मैंने देखा कि उन दीवारों के बीच बीता हर कष्टदायक मिनट कितना मायने रखता है।

म्यांमार से पलायन

आजादी में बेरहमी से बर्बाद।
मुझे एहसास हुआ कि परिवार, प्यार और सांस लेना मात्र... ये सिर्फ आशीर्वाद नहीं हैं; ये स्वयं जीवन हैं। किसी का साथ होना बड़ी खुशी देता है, लेकिन जब मैं उस गहरे कुएं में अकेला रह गया, तब मुझे समझ आया कि कभी-कभी इंसान को खुद ही अपना रक्षक बनना पड़ता है।
जब मैं उस नरक से लौटा, तो मैंने अपने पुराने स्वरूप को पूरी तरह पीछे छोड़ दिया। अब मैं एक अलग इंसान हूँ। अधिक संवेदनशील, अधिक observant, शायद अधिक आहत… लेकिन साथ ही बहुत अधिक मजबूत भी। क्योंकि अब, मैं गहराई से जानता हूँ:
जिस चीज ने मुझे नहीं मारा, असल में उसी ने मुझे फिर से जीवित किया।

खतरे का भूगोल

मैं जो लिखने जा रहा हूँ वह केवल मेरे निजी अनुभवों तक सीमित
नहीं है। ये तथ्य आधिकारिक तौर पर पुष्टि की गई और दस्तावेजीकृत जानकारी पर आधारित हैं।
संयुक्त राष्ट्र ड्रग्स एंड क्राइम ऑफिस (यूएनओडीसी), अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान मंचों और स्वतंत्र पत्रकारिता जांचों के माध्यम से।
दूसरे शब्दों में कहें तो, इस पुस्तक में जो कुछ आप पढ़ते हैं, वह महज एक पीड़ित की यादें नहीं हैं। इस व्यवस्था में कैद एक गवाह के रूप में, जिसने सब कुछ अपनी आँखों से देखा और अनुभव किया है, मैं स्पष्ट रूप से बता रहा हूँ कि ये घटनाएँ अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों और सांख्यिकीय संकेतकों में किस प्रकार प्रतिबिंबित होती हैं।

* * *

यह सोच कि “हम थाईलैंड नहीं जा रहे हैं, इसलिए हमें कुछ नहीं होगा” पूरी तरह से गलत है। कुछ लोग इसे बढ़ा-चढ़ाकर बताया गया मान सकते हैं, लेकिन खतरा सिर्फ म्यांमार, लाओस और कंबोडिया तक ही सीमित नहीं है। ये आपराधिक गिरोह अलग-अलग देशों में, अलग-अलग नामों से और अलग-अलग तरीकों से काम करते हैं। जब आप उनके कदमों के निशान तलाशते हैं, तो पता चलता है कि उनका भौगोलिक दायरा बहुत बड़ा है: म्यांमार, कंबोडिया, लाओस, दुबई, रूस, यूरोप, लैटिन अमेरिका और अफ्रीकी देश…

म्यांमार से पलायन

पूर्वी यूरोप विशेष रूप से जोखिम भरा क्षेत्र है। यूक्रेन, मोल्दोवा, रोमानिया और बुल्गारिया में श्रम तस्करी, यौन शोषण और आपराधिक गतिविधियों में जबरन भर्ती के मामले गंभीर चिंता का विषय हैं। आर्थिक अस्थिरता और लगातार सामाजिक दबाव लोगों को ऐसे जाल में फंसने के प्रति अधिक संवेदनशील बना देते हैं।
दूसरी ओर, पश्चिमी यूरोप मुख्य रूप से इन पीड़ितों के लिए एक गंतव्य स्थल के रूप में कार्य करता है। हाल के वर्षों में, वहाँ जबरन श्रम के मामले यौन शोषण से आगे निकल गए हैं, और पुरुष पीड़ितों की संख्या में वृद्धि हुई है; अधिकतर मामलों में, विदेशी मूल के व्यक्ति ही इन क्रूर अनुभवों के शिकार होते हैं।
दक्षिणी यूरोप में यौन शोषण का स्तर अभी भी बहुत अधिक है, जहाँ प्रवासी महिलाओं को विशेष रूप से इस खतरे का सामना करना पड़ता है। इसके साथ ही, अवैध प्रवासन मार्गों से जुड़े कृषि और घरेलू कामों में जबरन मजदूरी भी तेजी से बढ़ रही है।
2021 के आंकड़ों के अनुसार, यूरोप और मध्य एशिया में लगभग 64 लाख लोग आधुनिक गुलामी के शिकार हैं। 2023 में, यूरोपीय संघ के भीतर मानव तस्करी के 10,793 पीड़ितों की आधिकारिक रूप से पहचान की गई। इनमें से 63% महिलाएं और लड़कियां हैं, जबकि 19% बच्चे हैं।
ये आंकड़े महज सांख्यिकी नहीं हैं; ये लाखों लोगों की पीड़ा, उनकी दबी हुई आवाज़ों और दुनिया के विभिन्न कोनों में जारी अन्याय को दर्शाते हैं। मूल सिद्धांत सरल है: आप कहीं भी जा रहे हों, आपको सतर्क रहना चाहिए।

कृतज्ञता का एक संदेश

इस पुस्तक की पंक्तियों के बीच न केवल मेरे द्वारा झेली गई भयावहता छिपी है, बल्कि उन लोगों की अटूट भावना भी छिपी है जिन्होंने मुझे उस अंधकार से बाहर निकाला और उन महान अदृश्य शक्तियों की कृपा भी छिपी है जिन्होंने मुझे मजबूती से खड़े होने में सक्षम बनाया।
सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, मैं उस शक्ति का आभारी हूँ जिसने मुझे बनाया है। मुझे उस अंधकार से सुरक्षित बाहर निकालने के लिए, मेरी आत्मा को उन तारों के बीच खोने से बचाने के लिए, और मुझे एक बार फिर से सांस लेने का मौका देने के लिए।
मैं अपने परिवार का आभारी हूं। दूरी के बावजूद, भौतिक और आध्यात्मिक रूप से मेरी रक्षा करने और मेरे सबसे निराशाजनक क्षणों में मेरा साथ देने के लिए।
मेरी पत्नी को… मैं इस साहसी महिला का असीम आभारी हूँ, जो उस समय मेरी मंगेतर थीं। उन सबसे कठिन समयों में जब कैद के घावों ने मेरी आत्मा को झकझोर दिया था और मेरा मानसिक संतुलन पूरी तरह टूट चुका था, उन्होंने कभी मेरा हाथ नहीं छोड़ा। उन्होंने मेरी बातें सुनीं, मेरे मौन में मेरा साथ दिया और मेरी सबसे बड़ी नैतिक सहारा बनीं— यहाँ तक कि मेरी मनोवैज्ञानिक भी—उन्होंने मुझे एक इंसान के रूप में खुद को संभालने में मदद की। उन्होंने मुझे मेरा असली रूप वापस दिलाया।
मैं अपने नन्हे बेटे का शुक्रिया अदा करता हूँ। मेरी कैद के बाद, वह मेरे जीवन में सूरज की किरण बनकर उभरा, भविष्य की ओर देखने का मेरा सबसे बड़ा कारण और आशा बन गया। उसका होना ही मेरे उद्धार का सबसे सुंदर पुरस्कार है।
मैं अपने मित्र मुराद को धन्यवाद देता हूँ। इस यात्रा की शुरुआत से लेकर अब तक हर मुश्किल घड़ी में अटूट साथ खड़े रहने के लिए।

[illegible]

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]